दक्षिण अफ्रीका की लोक कथाऐं

चयन और अनुवाद
सुषमा गुप्ता

2022

Series Title : Desh Videsh Ki Lok Kathayen
Cover Title : Dakshin Africa Ki Lok Kathayen (Folktales of South Africa)
Cover Page picture: King Protea, National Flower of South Africa
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com
Website: http://sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018
No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of South Africa

South Africa includes the old Zululand too. Zululand is not a country but an area which was included in South Africa after 1870.

विंडसर, कैनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाऐं 5

दक्षिण अफ्रीका की लोक कथाऐं 7

1 खोया हुआ सन्देश 9

2 बन्दर और उसकी वायलिन 13

3 चीता, बकरा और गीदड़ 19

4 गीदड़ और भेड़िया 22

5 एक शेर, एक गीदड़ और एक आदमी 24

6 दुनियॉ का इनाम 28

7 टिंक–टिंकजे 34

8 चीता और गीदड़–**2** 39

9 मगर की बदमाशी 49

10 पानी के लिये नाच या खरगोश की जीत 59

11 गीदड़ और बन्दर 65

12 बड़े खरगोश की कहानी 69

13 एक गोरा और एक सॉपिन 78

14 बादलों को खाना या हयीना लॅगड़े क्यों 81

15 गीदड़, फाख्ता और सारस 85

16 हाथी और कछुआ 88

17 बबून का फैसला 91

18 मौत का जन्म 94

19 बद्दुआ वाली बद्दुआ 99

20 एक आदमी जो कभी झूठ नहीं बोला 106

21 दो भाइयों की कहानी 109

22 आदमी और सॉप 119

23 शेर और बीटिल 124

24 चोर कौन था 128

25 सूरज 135
26 शेर और गीदड़..... 143
27 कुत्ते का प्यार 148
28 बिना दॉत की सुन्दर लड़की..... 159

देश विदेश की लोक कथाऐं

लोक कथाऐं किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाऐं हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब **100** साल पहले, ये लोक कथाऐं केवल ज़बानी ही कही जातीं थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाऐं अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाऐं हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से **550** से भी अधिक लोक कथाऐं तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाऐं हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाऐं यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी है पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याऐं आयी है जिनमें से दो समस्याऐं मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब **95** प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया हैं ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाऐं "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" नाम की सीरीज के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाऐं आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता
2022

दक्षिण अफ्रीका की लोक कथाऐं

दक्षिण अफ्रीका देश अफ्रीका महाद्वीप के सुदूर दक्षिण में स्थित है। बहुत पुराने समय से ही यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण देश रहा है। इसके उसी तरह से तीन तरफ समुद्र है जैसे दक्षिणी भारत के है।

पुराने समय में यानी जब तक स्वेज़ नहर नहीं बनी थी[1] तब तक पानी के जहाज़ पूर्व से यूरोप की ओर और यूरोप से पूर्व की ओर इसी दक्षिण अफ्रीका के बन्दरगाहों से हो कर आया जाया करते थे। इसके अलावा भारत के महात्मा गॉधी भी **20**वीं शताब्दी के अन्त में भारतीयों की दशा सुधारने के लिये दक्षिण अफ्रीका गये थे। उस समय उन्होंने वहॉ बहुत काम किया।

दक्षिण अफ्रीका की एक खासियत और है जो उसको दूसरे देशों से अलग करती है। साधारणतया हर देश की एक ही राजधानी होती है पर इस देश की तीन राजधानियॉ हैं – ब्लूमफौन्टेन, केप टाउन और प्रिटोरिया[2]।

इस संग्रह में केवल दक्षिण अफ्रीका देश की लोक कथाऐं प्रकाशित की जा रही हैं। दक्षिण अफ्रीका की अठारह लोक कथाऐं हमारी दूसरी पुस्तक नेलसन मन्डेला जो दक्षिण अफ्रीका के राष्ट्रपति भी रह चुके हैं की सम्पादित[3] की गयी एक पुस्तक जिसमें अफ्रीका की बत्तीस लोक कथाऐं प्रकाशित की गयी हैं उसके अनुवाद में मौजूद हैं।

करीब करीब ये सारी लोक कथाऐं हमने तुम्हारे लिये एक पुस्तक से ली हैं।[4] उसमें चालीस कहानियॉ दी हुई हैं पर कई कहानियॉ बहुत ही छोटी थीं इसलिये उन कहानियों को इस संग्रह में शामिल नहीं किया गया है। उनके साथ साथ हमने इसमें उस पुस्तक की कहानियों के अलावा और भी कुछ लोक कथाऐं जोड़ दी हैं। आशा है ये लोक कथाऐं भी तुम लोगों को वैसे ही पसन्द आयेंगी जैसे तुम लोगों ने अफ्रीका की लोक कथाओं की दूसरी पुस्तकें पसन्द की हैं।

---

[1] Suez Canal which joins Red Sea to Mediterranean Sea was opened for transportation after 10 years of its construction on November 17, 1869.

[2] Bloomfontein, Cape Town and Pretoria

[3] Mandela, Nelson (ed). “Favorite African Stories”. 32 stories. Translated by Sushma Gupta in Hindi in 2020.

[4] Honey, James A. “South African Folktales.” 1910. Contains 40 tales.
This book is available in English at : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/index.htm
We have not translated some very short tales from the book and at the same time added a few tales from outside, that is why there is number is fewer than the total number of stories of the book.

1 खोया हुआ सन्देश[5]

चींटों के बहुत समय से बहुत सारे दुश्मन रहे हैं क्योंकि एक तो चींटे बहुत छोटे होते हैं और फिर वे हर चीज़ को बरबाद करते रहते हैं। और उन बहुत सारे दुश्मनों में भी बहुत सारे दुश्मन तो उनको मारने वाले भी होते हैं।

उनके दुश्मनों में न केवल चिड़ियॉ हैं बल्कि चींटी खाने वाले भी बहुत सारे जानवर होते हैं। क्योंकि जब वे उनको खाते हैं तो वे तो पूरी तरह से उनके ऊपर ही ज़िन्दा रहते हैं। और सैन्टीपैड[6] तो उनको हर समय ही परेशान करते हैं। जहॉ भी और जब भी उनको मौका मिलता वे उनको नहीं छोड़ते।

तो एक दिन उनमें से कुछ चींटों ने सोचा कि एक मीटिंग बुलायी जाये और उसमें सबकी राय से अपने रहने के लिये किसी ऐसी जगह का इन्तजाम किया जाये जहॉ वे चिड़ियों और दूसरे खतरनाक जानवरों के हमले से बच सकें और शान्ति से रह सकें।

सो उन्होंने एक मीटिंग बुलायी पर सबकी राय अलग अलग थी सो वे लोग किसी एक फैसले पर नहीं पहुॅच सके।

[5] The Lost Message – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft04.htm
[6] Centipede – a kind of worm, about 2-3” long, with several legs

वहॉ पर लाल चींटे थे, काले चींटे थे, भूरे चींटे थे, चमकीले चींटे थे, चावल के चींटे थे, पूँछ हिलाने वाले चींटे थे, और भी कई तरह के चींटे चींटियॉ थे।

उन लोगों में भी काफी देर तक बहस चली पर उसका कोई नतीजा नहीं निकला। कुछ चींटों का कहना था कि उनको किसी छेद में चले जाना चाहिये और वहीं रहना चाहिये।

कुछ चींटों का कहना था कि उनको जमीन के ऊपर ही कोई मजबूत सा घर बनाना चाहिये जिसका दरवाजा इतना छोटा हो कि उसमें चींटे के अलावा और कोई भी न घुस सके।

जबकि दूसरे चींटे चींटे खाने वाले जानवरों से बचने के लिये पेड़ों पर रहना चाहते थे। वे उस समय यह भूल गये थे कि वहॉ उन को चिड़ियॉ खा सकतीं थीं।

कुछ ने कहा कि काश उनके भी पंख होते और वे उड़ सकते।

सो जब कोई नतीजा नहीं निकला तो यही निश्चय हुआ कि सारे समूह अपने अपने तरीके से अपनी रक्षा करें।

पर आश्चर्य की बात यह थी कि ये जितने भी समूह थे इनमें आपस में एकता बहुत थी। ऐसी एकता तो दुनियॉ में कहीं भी देखने को नहीं मिल सकती।

अलग अलग रहते हुए भी सब अपना अपना काम बराबर करते थे, अपना अपना काम ठीक से करते थे और एक साथ एक ही तरीके से करते थे।

फिर उन्होंने अपने अपने समूहों में अपना अपना राजा चुन लिया ताकि उसे जब भी कुछ कहना हो तो वह सबसे कह सके। उन्होंने अपने अपने काम भी बॉट लिये ताकि सारा काम ठीक से चलता रहे।

पर हालॉकि सब समूहों में यह सब अलग अलग हो रहा था पर फिर भी उनमें से कोई भी समूह अपने आपको चींटे खाने वालों और उन पर हमला करने वालों से अपनी रक्षा नहीं कर पा रहा था।

लाल चींटों ने अपना घर जमीन के ऊपर बनाया और उसके नीचे रहने लगे पर चींटे खाने वालों ने उस जमीन को जल्दी ही एकसार कर दिया जिसको उन बेचारे चींटों ने अपनी कड़ी मेहनत से कई दिनों में बनाया था।

चावल वाले चींटों ने जमीन के नीचे रहना शुरू किया पर वहॉ भी वे कुछ ज़्यादा अच्छे नहीं रहे। क्योंकि वे जब भी बाहर निकलते तो कोई न कोई चींटे खाने वाला जानवर उनको मिल ही जाता और वह उनको उठा कर ले जाता।

पूँछ हिलाने वाले चींटे पेड़ों पर रहने लगे पर वहॉ पर अक्सर उनको सैन्टीपैड बैठे मिल जाते या फिर चिड़ियॉ उनको खा जातीं।

भूरे चींटों ने अपने आपको बचाने के लिये उड़ना शुरू कर दिया पर इससे भी उनको कोई फायदा नहीं हुआ क्योंकि छिपकली, गिरगिट, शिकारी मकड़े और चिड़ियें उनसे ज़्यादा तेज़ उड़ सकते थे।

जब कीड़ों के राजा ने यह सब सुना कि सारे चींटे किसी एक फैसले पर नहीं पहुँच सके तो उसने उन सबको एक सन्देश भेजने का विचार किया — एकता का सन्देश और साथ साथ काम करने का सन्देश।

पर बदकिस्मती से उसने यह सन्देश देने के लिये एक बीटिल[7] को चुना और वह बीटिल अभी तक उन चींटों के पास अपने राजा का सन्देश ले कर नहीं पहुँचा है। इसी लिये चींटे आज भी आपस में एक साथ नहीं बैठते और अपने दुश्मनों का शिकार रहते हैं।

[7] Beetle – a kind of spider

2 बन्दर और उसकी वायलिन[8]

यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के दक्षिण अफ्रीका देश की एक बहुत ही लोकप्रिय लोक कथा है। देखो कि इसमें एक बन्दर की वायलिन क्या क्या करामात दिखाती है।

एक बार जानवरों के देश में अकाल पड़ा तो एक बन्दर को भूख की वजह से अपना देश छोड़ने और किसी दूसरी जगह जाने के लिये मजबूर होना पड़ा जहाँ वह कोई काम ढूँढ सके।

उसके अपने देश में बल्ब, बीन्स[9], बिच्छू कीड़े ऐसी सभी खाने की चीज़ें करीब करीब सारी खत्म हो चुकी थीं। पर अपनी अच्छी किस्मत से उसको अपने एक चाचा ओरंग ऊटंग[10] के घर में रहने की जगह मिल गयी थी जो देश के दूसरे हिस्से में रहता था।

वहाँ कुछ दिन काम करने के बाद जब वह अपने घर लौटना चाहता था तो चलते समय उसके चाचा ने उसको एक वायलिन[11] और एक तीर कमान दिया।

उसने बन्दर को उन दोनों के बारे में बताया कि वायलिन बजा कर वह किसी भी चीज़ को नाचने पर

[8] Monkey's Fiddle – Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft05.htm
[9] Bulb – a kind of root from which another plant can be grown, e.g. onion bulbs. There are many kinds of plants which are grown from bulb. And Beans – they can be green beans also and dry beans also.
[10] Orang Outang – name of the monkey's uncle
[11] Translated for the word "Fiddle". See its picture above.

मजबूर कर सकता था और तीर कमान से किसी को भी मार सकता था।

घर लौटने पर उसको सबसे पहले ब्रैर भेड़िया[12] मिला। उसने उसको उसके घर की सारी खबर दी और साथ में यह भी कहा कि वह सुबह से एक हिरन को मारने की कोशिश कर रहा था पर सब बेकार।

इस पर बन्दर ने उसको अपने तीर कमान का जादू बताया और कहा कि अगर वह हिरन उसको दिखायी नहीं भी दिया तो भी वह उसको उसके सामने ले आयेगा और उसको मार देगा।

सो भेड़िये ने बन्दर को वह हिरन दिखाया। बन्दर तो तैयार था जैसे ही उसने हिरन देखा उसने उसको अपने तीर कमान से मार गिराया।

दोनों ने पेट भर कर उसे खाया। पर बजाय इसके कि वह भेड़िया बन्दर को धन्यवाद देता वह बन्दर के उस जादुई तीर कमान से जलने लगा।

उसने बन्दर से वह तीर कमान पहले तो उसको दे देने की प्रार्थना की। पर जब बन्दर ने अपना तीर कमान उसको देने से मना किया तो भेड़िये ने उसे अपनी ताकत से धमकाया।

[12] Brer wolf – in Southern African countries Brer means “Brother”

उसी समय एक गीदड़ वहॉ से गुजर रहा था। गीदड़ को देख कर भेड़िया उससे बोला कि बन्दर ने उसका तीर कमान चुरा लिया है।

जब गीदड़ ने दोनों तरफ की बातें सुनी तो वह बोला कि वह इस मामले का फैसला अकेला नहीं कर सकता और उसने सलाह दी कि इस मामले को शेर चीते और दूसरे जानवरों की कचहरी में ले जाया जाये।

उसने उससे यह भी कहा कि जब तक उन लोगों का फैसला हो जिस चीज़ पर उनका झगड़ा हो रहा था वह उसको अपने पास रखेगा ताकि वह सुरक्षित रहे।

पर इससे पहले कि बन्दर और भेड़िया कचहरी जाने के लिये राजी हों वह गीदड़ तुरन्त ही उस तीर कमान की सहायता से खाने का बहुत सारा सामान ले आया।

इस काम में उसको बहुत देर लग गयी और बन्दर और भेड़िया तब तक कचहरी नहीं जा सके।

और कोई तरीका न देख कर दोनों कचहरी जाने के लिये तैयार हुए। बन्दर के सबूत बहुत कमजोर थे और उससे भी बुरी बात यह थी कि गीदड़ उसके खिलाफ बोल रहा था।

गीदड़ ने सोचा कि अगर वह ऐसा करेगा तो शायद वह भेड़िये से भी तीर कमान लेने में कामयाब हो जाये।

और इस तरह बन्दर को सजा हो गयी। जानवरों की दुनियॉ में चोरी एक बहुत बड़ा जुर्म था और उसकी सजा फॉसी थी।

बन्दर का तीर कमान तो भेड़िये के पास था पर उसकी वायलिन अभी भी उसी के पास थी।

अब जैसा कि रिवाज है कि मरने वाले से उसकी आखिरी इच्छा पूछी जाती है बन्दर से भी उसकी आखिरी इच्छा पूछी गयी तो उसने फॉसी पर चढ़ने से पहले कचहरी से एक बार अपनी वायलिन बजाने की प्रार्थना की।

क्योंकि वह उसकी आखिरी इच्छा थी सो उसकी प्रार्थना मान ली गयी।

हालॉकि बन्दर पहले से ही बहुत अच्छी वायलिन बजाता था पर अब तो उसके पास यह जादू की वायलिन थी इसकी तो ताकत ही अलग थी।

जैसे ही उसने "मुर्गे की बॉग"[13] का पहला नोट छेड़ा तो सारी कचहरी जैसे ज़िन्दा हो उठी। और फिर कुछ ही पलों में तो वहॉ बैठा हर जानवर नाचने लगा।

वह बार बार और जल्दी जल्दी उस धुन को बजाने लगा। जितनी जल्दी वह धुन वह बजा रहा था सारे जानवर उतनी ही तेज़ी से उस धुन पर नाच रहे थे।

[13] Cockcrow – maybe it was some kind of very popular musical tune of South Africa

नाचते नाचते कुछ ही देर में वे इतने थक गये कि बहुत सारे जानवर तो थक कर नीचे ही गिर पड़े। पर उनके पैर उनके जमीन पर गिरने के बाद भी हिल रहे थे।

पर बन्दर ने उसके चारों तरफ क्या हो रहा था किसी भी चीज़ पर ध्यान नहीं दिया। वह तो बस अपनी ऑखों को आधा बन्द किये और अपने सिर को वायलिन से टिकाये हुए मग्न हो कर अपनी वायलिन बजाता ही रहा।

सबसे पहले हॉफता हुआ भेड़िया सहायता की आवाज में चिल्लाया — "ओ बन्दर भाई, बन्द करो अपनी यह वायलिन। हमारे प्यार की खातिर इसे बन्द करो।"

पर बन्दर ने उसको भी नहीं सुना और वह अपनी वायलिन पर वह मुर्गे की बॉग वाली धुन बजाता ही रहा बजाता ही रहा।

कुछ देर बाद शेर थक गया और जब वह अपनी पत्नी के साथ एक चक्कर और काट चुका तो वह बन्दर के पास आया और चिल्लाया — "मेरा पूरा राज्य तुम्हारा है अगर तुम अपनी वायलिन बजाना बन्द कर दो तो।"

बन्दर बोला — "मुझे तुम्हारा राज्य नहीं चाहिये। तुम बस मेरी सजा वापस ले लो और मेरा तीर कमान वापस कर दो। और हॉ ओ भेड़िये तुम यह मान लो कि तुमने उसे मुझसे चुराया है।"

भेड़िया चिल्लाया — "हॉ मैं मानता हूॅ, हॉ मैं मानता हूॅ कि मैंने ही उसे तुमसे चुराया है तुमने नहीं।"

उधर शेर भी चिल्लाया — "हॉ हॉ मैं तुम्हारी सजा वापस लेता हूँ।"

बन्दर ने एक दो बार वह धुन और बजायी और फिर अपना तीर कमान ले कर एक कैमलथौर्न[14] के पेड़ के ऊपर जा कर बैठ गया।

यह सब देख कर वहॉ कचहरी में नाचते दूसरे सारे जानवर सब इतने डर गये कि वे सब वहॉ से भाग गये कहीं ऐसा न हो कि बन्दर अपनी वायलिन फिर से बजाना शुरू कर दे।

इस तरह बन्दर ने अपना तीर कमान भेड़िये से वापस पाया। और अपनी वायलिन बजा कर अपनी जान बचायी।

[14] Camelthorn tree is one of the most found trees among South African trees even in desert. See its picture above.

3 चीता, बकरा और गीदड़[15]

एक दिन एक चीता अपना शिकार कर के घर वापस लौट रहा था कि वह एक बकरे के घर के सामने से गुजरा। चीते ने बकरे को पहले कभी नहीं देखा था इसलिये वह उसके पास बड़ी नम्रता से गया और बोला — "दोस्त नमस्ते। तुम्हारा नाम क्या है?"

बकरे ने अपनी छाती पर अपना आगे वाला पैर मारा और अपनी फटी सी आवाज में कहा — "मेरा नाम बकरा है। तुम कौन हो?"

चीता जो ज़िन्दे होने की बजाय मरा हुआ ज़्यादा दिखायी दे रहा था बोला — "मैं चीता हूँ।"

और यह कह कर वह वहाँ से जितनी तेज़ी से भाग सकता था अपने घर की तरफ भाग लिया।

एक गीदड़ भी वहीं रहता था जहाँ चीता रहता था। घर आ कर चीता गीदड़ के पास गया और बोला — "दोस्त गीदड़, मेरी तो साँस भी फूल गयी और मैं तो डर के मारे आधा मर भी गया।"

गीदड़ कुछ प्यार से बोला — "क्या हुआ शेर भाई। कुछ बताओ तो।"

[15] The Tiger, the Ram and the Jackal – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft06.htm

आज मैंने एक बहुत ही भयानक जानवर देखा जिसका सिर बहुत बड़ा और मोटा था। जब मैंने उसका नाम पूछा तो उसने अपना नाम बकरा बताया।"

यह सुन कर गीदड़ चिल्लाया — "तुम भी क्या बेवकूफ हो शेर भाई। इतना अच्छा मॉस तुम वहीं छोड़ आये। तुमने ऐसा क्यों किया? कोई बात नहीं। कल हम तुम दोनों एक साथ वहॉ जायेंगे और उसे साथ साथ खायेंगे।"

सो अगले दिन शेर और गीदड़ दोनों बकरे के घर चल दिये। जब वे उस पहाड़ी पर पहुँचे जहॉ बकरा रहता था तो बकरा अपने घर के बाहर ही खड़ा था।

वह इधर उधर देख रहा था कि खाने के लिये उसको नर्म नर्म सलाद कहॉ से मिल सकता था कि उसने शेर और गीदड़ को अपने घर की तरफ आते देख लिया।

वह डर के मारे तुरन्त घर के अन्दर जा कर अपनी पत्नी से बोला — "प्रिये, ऐसा लगता है कि आज हमारी ज़िन्दगी का आखिरी दिन है क्योंकि चीता और गीदड़ दोनों ही हमारी तरफ आ रहे हैं। अब हम क्या करें?"

बकरे की पत्नी ने कहा — "तुम डरो नहीं और चिन्ता भी न करो। तुम ऐसा करो कि इस बच्चे को गोद में उठा लो और उसको ले कर बाहर चले जाओ।

वहॉ उसको बार बार कुछ कुछ देर में नोचते रहना ताकि वह रोता रहे। इससे ऐसा लगेगा कि वह भूख से रो रहा है।"

बकरे ने तुरन्त ही ऐसा ही किया क्योंकि उसके दुश्मन पास आते जा रहे थे।

जैसे ही चीते ने बकरे को देखा तो उसको बकरे से फिर से डर लगने लगा और वह फिर से वापस भाग जाना चाहता था पर गीदड़ ने उसे रोक लिया। बल्कि उसने चीते को भी अपने साथ तेज़ी से आने के लिये कहा।

बकरा अपने बच्चे को नोचते हुए तेज़ आवाज में चिल्लाया — "ओ दोस्त गीदड़, तुमने बहुत अच्छा किया जो तुम चीते को हमारे खाने के लिये अपने साथ ले आये। देखो न यह मेरा बच्चा भूख से कितनी ज़ोर से रो रहा है।"

जैसे ही चीते ने बकरे के ये शब्द सुने वह गीदड़ की बात न मान कर डर के मारे अपने साथ गीदड़ को भी ले कर वहॉ से भाग लिया और पहाड़ियों और घाटियों से हो कर अधमरे गीदड़ को घसीटते हुए ला कर अपने घर आ कर ही दम लिया।

इस तरह बकरे ने अपने आपको चीते से गीदड़ से बचाया।

4 गीदड़ और भेड़िया[16]

एक बार की बात है कि एक गीदड़ किसी बस्ती के पास ही रहता था। एक बार उसने समुद्र के किनारे की तरफ से एक मोटर गाड़ी आती देखी। उस गाड़ी में मछलियॉ भरी हुई थीं।

उसने उस गाड़ी मे पीछे से चढ़ना चाहा पर वह उसमें चढ़ नहीं सका सो वह सड़क पर आगे की तरफ ऐसे लेट गया जैसे कि मर गया हो।

जब गाड़ी उस गीदड़ के पास तक पहुॅची तो गाड़ी के ड्राइवर के साथी ने ड्राइवर से कहा — "अरे यह देखो तुम्हारी पत्नी के लिये यह कितना अच्छा जानवर है।"

ड्राइवर ने कहा — "तो चलो इसको भी गाड़ी में डाल दो।"

सो उसने गीदड़ को उठा कर गाड़ी में डाल दिया और गाड़ी उस चॉदनी रात में फिर आगे बढ़ गयी।

सारे रास्ते गीदड़ गाड़ी में से मछलियॉ बाहर सड़क पर फेंकता रहा। फिर वह खुद भी उस गाड़ी से बाहर कूद गया। उसको तो आज बहुत सारा मॉस इनाम में मिल गया था।

पर एक बेवकूफ भेड़िया उधर आया और अपने हिस्से से ज़्यादा मॉस खा गया। इससे गीदड़ को भेड़िये से बहुत शिकायत हो

[16] The Jackal and the Wolf – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft07.htm

गयी। वह उससे बोला — "तुमको भी बहुत सारी मछली मिल सकती है अगर तुम भी मेरी तरह से गाड़ी के आगे मरे हुए की तरह से लेट जाओ तो – बिल्कुल शान्त, चाहे तुम्हारे आस पास कुछ भी होता रहे।

भेड़िया बोला — "हूँ।"

सो जब अगली गाड़ी समुद्री किनारे की तरफ से आयी तो वह भी सड़क पर जैसे उसको गीदड़ ने बताया था लेट गया।

ड्राइवर के साथी ने जब एक मरे हुए भेड़िये को सड़क पर पड़ा देखा तो बोला कि — "अरे सड़क पर यह भद्दी सी क्या चीज़ पड़ी है?"

कह कर वह उठा और उसने डंडी से उसको पीटना शुरू कर दिया। मारते मारते उसने भेड़िये को अधमरा कर दिया।

भेड़िया भी गीदड़ के कहे अनुसार जब तक उससे हो सका तब तक तो चुपचाप पड़ा रहा मगर फिर जब उससे नहीं रहा गया तो वह उठ कर वहाँ से भाग गया और गीदड़ से जा कर अपना सारा हाल कहा।

गीदड़ ने उसे शान्त करने का बहाना किया और बोला — "उफ़ कितनी बदकिस्मती है मेरी कि मुझे कभी ऐसी सुन्दर खाल नहीं मिली जैसी तुम्हारे पास है।"

5 एक शेर, एक गीदड़ और एक आदमी[17]

एक बार ऐसा हुआ कि एक शेर और एक गीदड़ कुछ जमीन और राज्य के मामले पर सोच विचार के लिये इकट्ठा हुए। गीदड़ जंगल के राजा शेर का इन मामलों पर एक बहुत ही खास सलाहकार था।

काफी देर तक इस बारे में बात करने के बाद उनकी बातचीत उनके अपने बारे में बात की तरफ मुड़ गयी।

शेर ने अपनी ताकत की बड़ाई करनी शुरू कर दी। गीदड़ एक बहुत बड़ा दूसरे की बड़ाई करने वाला था सो वह भी उसकी हॉ में हॉ मिलाता रहा।

गीदड़ की बात सुन कर शेर भी अब अपने को सचमुच में बहुत ताकतवर समझ रहा था तो गीदड़ ने कहा — "शेर जी, अब मैं आपको एक ऐसा जानवर दिखाऊँगा जो आपसे भी ताकतवर है।"

थोड़ी दूर तक वे लोग साथ साथ चलते रहे, गीदड़ आगे आगे और शेर उसके पीछे पीछे। कुछ देर में ही उनको एक छोटा लड़का मिला।

शेर ने पूछा — "क्या यह है वह ताकतवर आदमी?"

"नहीं राजा जी। इसको तो अभी आदमी बनना है। यह तो अभी केवल बच्चा है।" गीदड़ ने जवाब दिया।

---

[17] The Lion, the Jackal and the Man – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft09.htm

कुछ दूर जाने पर उनको एक बूढ़ा आदमी मिला जिसकी कमर झुकी हुई थी और वह एक डंडे के सहारे चल रहा था।

शेर ने पूछा — "क्या यही है वह ताकतवर आदमी?"

गीदड़ बोला — "नहीं राजा जी, यह भी वह नहीं है। यह पहले आदमी रह चुका है।"

"तो फिर कहाँ है वह ताकतवर आदमी?"

"आप चलते रहिये मैं उसे जल्दी ही दिखाता हूँ आपको।"

वह फिर आगे चलने लगे। कुछ दूर आगे जा कर उनको एक जवान शिकारी मिला। उसके साथ उसके कुछ शिकारी कुत्ते भी थे।

गीदड़ बोला — "यह है वह आदमी राजा जी। इसकी ताकत के सामने आपकी ताकत कुछ भी नहीं। अगर आप इस आदमी से जीत गये तभी यह समझा जायेगा कि आप सचमुच में ताकतवर हैं।"

यह कह कर गीदड़ एक तरफ को हट गया और एक पेड़ के पीछे छिप गया ताकि वह शेर और उस आदमी की मुलाकात को साफ साफ देख सके।

शेर दहाड़ते हुए उस शिकारी की तरफ बढ़ा पर जब वह उस के पास तक आया तो उस शिकारी के कुत्तों ने उसको पीछे हटा दिया।

शेर ने भी कुत्तों की तरफ ध्यान न देते हुए और अपने अगले पंजों को झटकते हुए उन कुत्तों को अलग अलग कर दिया। वे कुत्ते भी भौंकते हुए अपने मालिक की तरफ चले गये।

उसके बाद आदमी ने अपनी बन्दूक से एक गोली चलायी जो शेर के कन्धे को छूती हुई निकल गयी पर उसको भी शेर ने अनदेखा कर दिया।

इस पर शिकारी ने अपना लोहे का चाकू निकाल लिया और शेर को उससे कई बार मारा। चाकू की मार खा कर शेर पीछे हट गया और भाग गया पर तुरन्त ही शिकारी ने उसको एक गोली और मारी।

शेर गीदड़ के पास आया तो गीदड़ ने पूछा — "क्या तुम अभी भी अपने आपको सबसे ज़्यादा ताकतवर समझते हो?"

शेर बोला — "नहीं गीदड़ भाई। उस आदमी को वहीं रहने दो। मैंने उसके जैसा ताकतवर और कोई नहीं देखा। पहले तो उसके दस रक्षा करने वालों ने मेरे ऊपर हमला कर दिया।

मैंने उनकी तो कोई खास चिन्ता नहीं की पर जब मैं उसके टुकड़े टुकड़े करने के लिये आगे बढ़ा तो उसने मेरे ऊपर गोलियॉ बरसायीं, और वे भी मेरे चेहरे के ऊपर। उन्होंने मेरे चेहरे को जला दिया पर मैंने उनकी भी ज़्यादा चिन्ता नहीं की।

पर जब मैंने दोबारा उसको गिराने की कोशिश की तो उसने अपने शरीर की पसलियों में से एक हड्डी निकाली और उससे मुझे

मारा। उसने मुझे बहुत ही बुरे घाव दिये। इतने बुरे कि मेरे लिये वहॉ से भाग निकलने के अलावा और कोई चारा न रहा।

जब मैं वहॉ से भाग रहा था तो विदाई के समय की भेंट के रूप में उसने कुछ और गोलियॉ मुझे मारीं। नहीं गीदड़ भाई नहीं, मैं मान गया उसको। वह सचमुच में मुझसे ज़्यादा ताकतवर है।"

6 दुनियॉ का इनाम[18]

एक बार एक आदमी था जिसके पास एक कुत्ता था। वह कुत्ता अब काफी बूढ़ा हो गया था। इतना बूढ़ा कि वह अब उससे बचना चाहता था।

वह कुत्ता जब जवान था तो उसने अपने मालिक की बहुत वफादारी से सेवा की पर दुनियॉ में वफादारी का इनाम तो बेवफाई ही होता है न। और इसी लिये वह आदमी उस कुत्ते को घर से बाहर निकालना चाहता था।

उस बूढ़े कुत्ते को अपने मालिक के इरादों का पता चल गया सो उसने खुद ही मालिक को छोड़ कर जाने का फैसला कर लिया और एक दिन वह उसको छोड़ कर चला गया।

वह कुछ दूर ही गया था कि उसको एक बूढ़ा बैल मिला। उसने बैल से पूछा — "दोस्त बैल मैं घूमने जा रहा हूॅ क्या तुम मेरे साथ घूमने चलना पसन्द करोगे?"

बैल ने पूछा — "पर कहॉ?"

कुत्ता बोला — "उन बूढ़ों की दुनियॉ में जहॉ परेशानियॉ तुमको परेशान न करें और जहॉ बेवफाई आदमी को बदनाम नहीं करे।"

[18] The World's Reward – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft10.htm

बैल बोला — "यह तो बहुत ही अच्छी बात है। मैं तुम्हारे साथ हूँ। चलो चलते हैं।" और दोनों आगे चल दिये।

आगे जा कर उनको एक बूढ़ा बकरा मिला। कुत्ते ने अपना प्लान उसके सामने भी रखा तो वह भी उन दोनों के साथ चल दिया। आगे जा कर उनको एक बूढ़ा गधा, एक बूढ़ा बिल्ला, एक बूढ़ा मुर्गा और एक बूढ़ा नर बतख मिले।

कुत्ते ने जब उन सबको अपना प्लान बताया तो वे सब भी उसके साथ हो लिये। इस तरह सातों – कुत्ता, बैल, बकरा, गधा, बिल्ला, मुर्गा और बतख सब साथ साथ यात्रा पर निकल पड़े।

वे लोग रात तक चलते रहे और रात को एक घर के सामने आ पहुँचे। उस घर का दरवाजा खुला था सो उन्होंने उस खुले दरवाजे में से झाँक कर देखा कि एक मेज लगी हुई है और उस पर बहुत बढ़िया बढ़िया खाना सजा हुआ है और कुछ डाकू वहाँ बैठे हुए वह खाना खा रहे हैं।

अन्दर आने की इजाज़त माँगना तो बेकार था क्योंकि इतने सारे जानवरों को अन्दर कौन आने देता और यह देख कर कि वे भूखे थे वे और कुछ सोच भी नहीं सकते थे सिवाय इसके कि वे जानवर उन्हें खा जायेंगे।

सो गधा बैल के ऊपर चढ़ा। बकरा गधे के ऊपर चढ़ा। कुत्ता बकरे के ऊपर चढ़ा। बिल्ला कुत्ते के ऊपर चढ़ा। बतख बिल्ले के ऊपर चढ़ा और मुर्गा बतख के ऊपर चढ़ा।

और वे सब एक साथ अपनी अपनी आवाज में बहुत ज़ोर से बिना रुके चिल्लाने लगे।

घर में जो लोग बैठे थे वे ये आवाजें सुन कर इतने डर गये कि वे तो जैसे हिल डुल ही नहीं सके। उन्होंने बाहर के दरवाजे की तरफ झॉका तो उनको तो एक अजीब सा दृश्य दिखायी दिया।

उनमें से कुछ लोग पीछे के दरवाजे से रस्सी लाने दौड़ गये और कुछ खिड़की से कूद कर भाग गये और इस तरह कुछ ही पल में सारा घर खाली हो गया।

सातों जानवर एक के बाद एक कर के नीचे उतरे, घर में अन्दर गये और उन्होंने वह स्वादिष्ट खाना पेट भर कर खाया। पर वह खाना इतना ज़्यादा था कि उनके पेट भर कर खाने के बाद भी बहुत सारा बच रहा।

वह बचा हुआ खाना भी इतना ज़्यादा था कि वे उसे अपने साथ नहीं ले जा सकते थे। सो उन्होंने सोचा कि वे रात को वहीं रहेंगे और सुबह नाश्ता करने के बाद ही वहॉ से जायेंगे।

कुत्ता बोला — "मुझे तो अपने मालिक के दरवाजे पर पहरा देने की आदत है।" सो वह भाग कर दरवाजे पर चला गया और वहीं बैठ कर पहरा देने लगा।

बैल दरवाजे के पीछे चला गया और वहॉ जा कर बैठ गया।

बकरा बोला — "मैं इस मकान की उस खाली जगह में चला जाता हूॅ।"

गधा बोला — "मैं घर के बीच के दरवाजे पर बैठता हूँ।"
बिल्ला बोला — "मैं आग जलाने की जगह बैठता हूँ।"
बतख बोला — "मैं पीछे के दरवाजे पर जा कर बैठता हूँ।"
मुर्गा बोला — "मैं बिस्तर पर सोता हूँ।"
और इस तरह वे सब उस घर में पहरा देने लगे।

कुछ देर बाद डाकुओं के सरदार ने अपने एक आदमी को अपना घर यह देखने के लिये भेजा कि वहाँ वे जानवर अभी भी थे या चले गये।

वह आदमी बेचारा धीरे धीरे अपने घर के पड़ोस में आया और इधर उधर कुछ सुनने की कोशिश करने लगा पर उसको कोई आवाज सुनायी नहीं पड़ी।

उसने खिड़की से अन्दर झाँका तो देखा कि आग जलाने की जगह केवल दो कोयले जल रहे थे। इसलिये वह सामने के दरवाजे से ही घर में घुसा। पर सामने के दरवाजे पर तो कुत्ता था सो उसने उस आदमी का पैर पकड़ लिया।

आदमी ने किसी तरह से कुत्ते से अपना पैर छुड़ाया और घर में अन्दर कूदा तो दरवाजे के पीछे बैल बैठा था। उसने अपने सींगों से उसको उछाल कर घर के अन्दर की खाली जगह में फेंक दिया।

उस खाली जगह में बकरा बैठा था वहाँ से उसने उसको उछाला तो वह बेचारा जमीन पर आ पड़ा।

वहॉ से वह बीच वाले दरवाजे की तरफ भागा तो वहॉ गधा लेटा हुआ था। वह वहॉ चौंक कर इतनी ज़ोर से रेंका और उसने उसको इतनी ज़ोर से लात मारी कि वह आग जलाने की जगह जा गिरा।

आग जलाने की जगह बिल्ला बैठा था। वह उसके ऊपर इतनी ज़ोर से कूदा कि उसने उसको कई जगह नोच लिया।

सो वह आदमी पीछे के दरवाजे से भागा। वहॉ बतख बैठा था उसने उसकी पैन्ट पकड़ ली। वह बतख की पकड़ से छूट कर भागा तो मुर्गे ने ज़ोर की आवाज लगायी "कुकडूँ कूँ।"

यह सब देख सुन कर वह और तेज़ी से भागा तो अँधेरे में पत्थरों पर गिर पड़ा। चोट खाने से लाल नीला हुआ वह किसी तरह अपने साथियों के पास आ गया।

"उफ़, उफ़।" पहले तो वह केवल यही कह सका फिर बाद में सॉस आने पर उसने उनको सारा हाल बताया।

"पहले मैंने खिड़की से झॉक कर देखा तो मुझे आग जलाने की जगह दो अंगारे जलते हुए दिखायी दिये। और जब मैंने सामने के दरवाजे से देखने के लिये अन्दर जाना चाहा तो मेरा पैर एक लोहे के जाल पर जा पड़ा।

मैं घर के अन्दर कूदा तो मुझे किसी ने कॉटे से पकड़ लिया और घर की खाली जगह में उछाल दिया। वहॉ भी कोई तैयार बैठा था उसने मुझे वहॉ से नीचे फेंक दिया।

मैं बीच वाले दरवाजे से निकल जाना चाहता था तो वहॉ किसी ने बहुत ज़ोर से भोंपू बजाया और मुझे हथौड़े से मारा तो मुझे पता ही नहीं चला कि मैं कहॉ जा कर गिरा। पर फिर जल्दी ही मुझे पता चल गया कि मैं आग जलाने की जगह पर जा कर गिरा था।

वहॉ पर कोई और बैठा था। वह मेरे ऊपर कूदा और उसने तो बस मेरी ऑखें ही निकाल लीं थीं कि मैं वहॉ से पीछे के दरवाजे की तरफ भागा।

और आखीर में छठे ने मेरी टॉगों पर आग के चिमटे से मारा। जब मैं भाग रहा था तो कोई घर के बाहर से चिल्लाया — "रोको उसे, रोको उसे।"

फिर तो मैं बस रुका ही नहीं मैं भागा भागा यहॉ चला आ रहा हूँ।

7 टिंक-टिंकजे[19]

चिड़ियों को एक राजा की जरूरत थी। जैसे आदमी लोगों का एक राजा होता है वैसे ही चिड़ियों का भी एक राजा होता है। और क्यों नहीं होना चाहिये उनको भी तो एक राजा की जरूरत है सो सारी चिड़ियें अपना राजा चुनने के लिये इकट्ठा हुईं।

एक चिड़िया ने कहा — "शुतुरमुर्ग[20] हमारा राजा होना चाहिये क्योंकि वह सबसे बड़ा है।"

दूसरी चिड़िया बोली — "नहीं नहीं। वह हमारा राजा नहीं हो सकता क्योंकि वह तो उड़ ही नहीं सकता।"

एक और चिड़िया ने कहा — "चील के बारे में तुम्हारा क्या ख्याल है? वह तो बहुत ताकतवर है।"

"नहीं नहीं वह तो बहुत ही बदसूरत है।"

"तो फिर गिद्ध कैसा रहेगा?"

"गिद्ध? नहीं नहीं गिद्ध तो बहुत ही गन्दा है और उसके शरीर में से तो बदबू भी बहुत आती है।"

"तब फिर हम मोर को राजा बना देते हैं वह बहुत ही खूबसूरत है।"

"उफ, उसके तो पैर भी बहुत गन्दे हैं और आवाज भी।"

---

[19] Tink-Tinkje – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft12.htm

[20] Translated for the word "Ostrich". See its picture above.

"तो फिर क्या करें? क्या फिर उल्लू को अपना राजा बनायें? वह बहुत अच्छा देख सकता है।"

"पर उसको तो रोशनी से ही बहुत डर लगता है वह हमारा राजा कैसे बन सकता है।"

इसी तरह से उन चिड़ियों की मीटिंग में आपस में बहस चलती रही और अब उनके पास और किसी चिड़िया का नाम ही नहीं रह गया था जिसको वे राजा बना सकते।

तभी एक आवाज आयी — "जो सबसे ऊँचा उड़ सकेगा वही चिड़ियों का राजा बनेगा।"

सब उस आवाज के पीछे पीछे चिल्लाये — "हॉ हॉ वही हमारा राजा बनेगा जो सबसे ऊँचा उड़ेगा।"

और एक इशारे पर सारे पक्षी अपनी अपनी ताकत के अनुसार ऊँचे से ऊँचा उड़ चले।

गिद्ध[21] बिना रुके पूरे तीन दिन तक सूरज की तरफ उड़ता रहा। वहॉ से वह चिल्लाया — "देखो मैं सबसे ऊँचा उड़ सकता हूँ मैं सबका राजा हूँ।"

तभी उसने अपने ऊपर से आवाज सुनी — "ही ही ही।"

उसके ऊपर टिंक-टिंकजे चिड़ा उड़ रहा था। उसने गिद्ध का ऊपर वाला बड़ा पंख कस कर पकड़ रखा था और इस तरह वह उसके ऊपर उड़ रहा था।

[21] Translated for the word "Vulture". See its picture above.

गिद्ध को उसका अपने ऊपर बैठना महसूस ही नहीं हुआ क्योंकि वह बहुत ही हल्का था।

टिंक–टिंकजे हॅस कर बोला — "ही ही ही, मैं सबसे ऊॅचा उड़ा इसलिये राजा मैं हूॅ।"

गिद्ध फिर एक और दिन टिंक–टिंकजे को अपने ऊपर लिये उड़ता रहा — "मैं सबसे ऊॅचा हूॅ मैं राजा हूॅ।"

टिंक–टिंकजे ने फिर उसकी हॅसी उड़ाई — "मैं सबसे ऊॅचा हूॅ मैं राजा हूॅ।"

और यह कहते हुए टिंक–टिंकजे गिद्ध के पंख के नीचे से निकल कर बाहर की तरफ आ गया।

गिद्ध फिर पॉचवे दिन भी उड़ता रहा और वहीं से बोला — "मैं सबसे ऊॅचा उड़ा रहा हूॅ मैं ही राजा हूॅ।"

टिंक–टिंकजे ने फिर उसकी हॅसी उड़ाई — "ही ही ही। मैं सबसे ऊॅचा उड़ रहा हूॅ मैं ही सब चिड़ियों का राजा हूॅ।"

गिद्ध अब थक गया था सो अब वह जमीन की तरफ उतरने लगा। सारे पक्षी उसको देख कर पागल से हो रहे थे।

टिंक–टिंकजे को तो मरना ही चाहिये क्योंकि उसने गिद्ध के पंखों में छिप कर उसके पंखों का फायदा उठाया है। उसने सब पक्षियों को धोखा दिया है।

सो जैसे ही गिद्ध नीचे उतरा सारे पक्षी टिंक–टिंकजे को मारने के लिये उसकी तरफ दौड़े। टिंक–टिंकजे को एक चूहे के बिल में घुस कर अपनी जान बचानी पड़ी।

पर अब वे उसको उस चूहे के बिल में से बाहर कैसे निकालें? कोई उस बिल के मुँह पर खड़ा रहना चाहिये ताकि जैसे ही वह अपना सिर बाहर निकाले वह उसको पकड़ ले।

सब चिल्लाये — "उल्लू की ऑखें सबसे बड़ी हैं उसको टिंक–टिंकजे का पहरा देना चाहिये। वही सबसे अच्छा देख सकता है।"

सो उल्लू उस चूहे के बिल पर पहरा देने लगा। धूप गर्म थी सो बहुत जल्दी ही उल्लू को नींद आने लगी और वह तुरन्त ही सो गया।

टिंक–टिंकजे ने बाहर झॉक कर देखा तो देखा कि उल्लू तो सो रहा था। वह भी तुरन्त ही वहॉ से बाहर निकला और उड़ गया।

कुछ देर बाद कुछ पक्षी वहॉ देखने आये कि टिंक–टिंकजे अभी भी वहॉ उस बिल में है कि नहीं।

"ही ही ही।" एक पेड़ के ऊपर से उन सबने सुना और उधर देखा तो वह छोटा शैतान चिड़ा वहॉ बैठा था।

इसको देख कर सफेद कौआ[22] बहुत परेशान हो गया। वह घूमा और बोला — "अब मैं एक शब्द भी नहीं बोलूँगा।"

[22] White crow – normally crows are black but there are a few species of crow which are pure white.

और उस दिन से आज तक वह एक शब्द भी नहीं बोला है। अगर तुम उसको मारो भी तो भी वह बोलता नहीं, चिल्लाता नहीं, रोता नहीं।

8 चीता और गीदड़–2[23]

इसलिये नहीं कि वह अपने पड़ोस में सबमें बहुत ही लायक था या फिर बहुत तरक्की पसन्द था।

पर इसलिये भी कि वह हमेशा ऐसी सलाह दिया करता था जो सबको बहुत अच्छी लगती थी और सबका उससे बहुत फायदा होता था इसलिये वह गीदड़ अपने पड़ोस में एक तरक्की पसन्द आदमी के नाम से मशहूर हो गया था।

उसके आस पास जो बहुत ही अच्छे घराने के लोग थे और उसको किसी तरह से दुखी नहीं करना चाहते थे वे ऐसे नाम उसके नाम के साथ जोड़ना चाहते थे जैसे "होशियार गीदड़" या "सबसे अक्लमन्द चूहा पकड़ने वाला" आदि आदि।

उसको यह नाम इसलिये भी मिला था क्योंकि वह अंग्रेजी भी बोलता था और खास तौर पर जब जबकि उसको यह पता होता था कि उसके आस पास के लोग अंग्रेजी समझ नहीं पायेंगे।

और इसलिये भी क्योंकि जनता में वह एक जज का काम भी कर सकता था।

---

[23] The Lion and Jackal – Translated from from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft11.htm
[My Note : Although the title of this story says "The Lion" but in the whole story the author has used the word "Tiger" for the Lion so I have used the word "Cheetaa" throughout the story.]

उसकी जबान बहुत ही मीठी थी और वह सबका प्रिय बोल सकता था खास कर जो लोग बहुत पिछड़े हुए थे उनके ऊपर तो वह बहुत ही अच्छा असर डाल सकता था।

अन्दर से वह आस पास के लोगों में एक बहुत ही बुरा आदमी था पर उसको अपनी पैदायशी बुराइयों को बहुत अच्छी तरह से छिपाना भी आता था और अपने इसी गुण की वजह से वह बहुत दिनों तक एक लायक आदमी बना रहा।

एक बार उसकी पूँछ एक लोहे के जाल में फँस कर टूट गयी। असल में हुआ क्या कि वह बहुत दिनों से बोअर बतख[24] के घर तक पहुँचने की कई तरकीबें लड़ाता रहा और एक तरकीब से वह उसके घर तक जा भी पहुँचा।

पर जब उसे होश आया तो वह उस बतख के घर पर तो बैठा हुआ था पर उसकी पूँछ लोहे के जाल में फँसी हुई थी और कई कुत्ते उसकी तरफ बढ़े चले आ रहे थे।

जब उसको पता चला कि इसका क्या मतलब था तो उसने अपनी पूरी ताकत लगा कर अपनी पूँछ खींची जिसकी उसकी निगाह में बहुत कीमत थी।

और इस बात ने उसकी सारे पड़ोस में हँसी उड़वा दी होती अगर उसने कोई तरकीब न निकाल ली होती तो। वह तरकीब क्या थी?

[24] Boar Duck

उसने सारे गीदड़ों की एक मीटिंग बुलवायी और उनको यह विश्वास दिला दिया कि शेर ने एक फरमान भिजवाया है कि आज से सारे गीदड़ पूँछ के बिना ही रहेंगे क्योंकि उनकी सुन्दर पूँछ कुछ बदकिस्मत जानवरों की आखों में खटकती है।

अपनी मीठी बोली में उसने उनको यह भी समझा दिया कि राजा का उनके बीच में दखल देने का उसको बहुत दुख था पर वह क्या करता जैसा हुक्म राजा का था वैसा था।

जितनी जल्दी उस हुक्म को माना जाता उतना ही अच्छा था। इसी लिये उसने भी अपनी पूँछ कटवा ली थी। सो बहुत दिनों तक सारे गीदड़ बिना पूँछ के ही रहे। हॉ वह बात दूसरी है कि फिर बाद में उनके नयी पूँछ उग आयी।

यह उन्हीं दिनों की बात है कि चीते ने उस गीदड़ को एक स्कूल मास्टर की हैसियत से अपने यहॉ बुलाया। उन दिनों आस पास के देशों में चीता ही सबसे ज़्यादा अमीर था।

और क्योंकि उसको बिना पढ़ लिखा होने की वजह से बहुत नुकसान सहना पड़ा था इसलिये वह चाहता था कि उसके बच्चे सबसे अच्छा पढ़ें लिखें।

इस बारे में उसने अपने घर में राय की और उसमें यह विचार किया गया कि पढ़ाई लिखाई किसी भी आदमी के लिये कितनी जरूरी है और यही सोच कर उसने फिर गीदड़ को बुलाया और उसको अपने बच्चों को पढ़ाने के लिये कहा।

गीदड़ तो इसके लिये पहले से ही तैयार था। उसने चीते से कहा कि हालॉकि यह उसका काम नहीं था पर अपना समय बिताने के लिये और अपने पड़ोसी दोस्त की सहायता करने के लिये वह यह करने को तैयार था।

असल में उसके और चीते के खेत बराबर बराबर थे तो वे दोनों एक दूसरे को अच्छी तरह जानते भी थे।

इस बात से चीते को कोई मतलब नहीं था कि गीदड़ ने पढ़ाने को अपना धन्धा भी नहीं बना रखा था और न ही उसके पास कोई डिग्री थी।

चीता हॅस कर बोला — "गीदड़ भाई, अब तुम मेरे अच्छेपन की इतनी ज़्यादा तारीफ भी न करो। हम सब तुमको बहुत अच्छी तरह जानते हैं।

बजाय किसी और स्कूल मास्टर के मैं अपने बच्चों को तुम्हें सौंपना ज़्यादा पसन्द करूँगा क्योंकि यह मेरी और मेरे बच्चों की मॉ की खास इच्छा है कि हमारे बच्चों को तरक्की पसन्द पढ़ाई लिखाई मिले।

हम लोग यह चाहते हैं कि वे उतने ही लायक आदमी और औरत बनें जैसे तुम हो और उसी तरह से दुनियॉ में अपनी जगह बना सकें जिस तरीके से तुमने बना रखी है।"

यह सुन कर गीदड़ बोला — "पर एक शर्त है चीते भाई। यह मेरे लिये बहुत मुश्किल ही नहीं बल्कि नामुमकिन होगा कि मैं तुम्हारे

खेत पर आ कर अपना स्कूल लगाऊँ क्योंकि इससे मेरा खेत बर्बाद होने का डर है और यह मैं देख नहीं सकता।"

चीता बोला — "तुमको इन दोनों में से किसी भी काम को करने की जरूरत नहीं है। तुम जहाँ चाहो बच्चों को तुम वहीं पढ़ा सकते हो। तुम्हारी मर्जी।"

गीदड़ बोला — "तो फिर मैं बच्चों को अपने घर पर ही पढ़ाना ज़्यादा पसन्द करूँगा।"

अपने बच्चों से बहुत प्यार करते हुए भी चीते ने यही सोचा कि पढ़ाई दूसरे किसी अजनबी के घर पर ही ठीक रहेगी सो वह इस बात पर राजी हो गया।

फिर गीदड़ ने उसे यह सब भी बताया कि भेड़िये ने उसे कैसे पाला था। उसके पिता ने उसको भेड़िये के पास पढ़ने के लिये जब भेजा था तो वह कितना छोटा था। उसके बाद तो वह फिर कई स्कूलों में गया।

भेड़िया तो उसका केवल पहला मास्टर था। पर बाद में उसको पता चला कि भेड़िये ने उसको कितनी अच्छी तरह पढ़ाया था और एक मास्टर की तरह से वह उसके लिये कितना अच्छा साबित हुआ।

उसने फिर कहा — "बच्चों को तभी ढाल लेना चाहिये जब वे छोटे हों। उनको ढालने का इससे अच्छा और कोई समय नहीं होता

जब वे प्लास्टिक जैसे मुलायम होते हैं। तुम्हारे बच्चे भी इस समय उसी उमर के हैं।

मैं अभी बस यही सोच रहा था कि तुम यह बहुत अच्छा कर रहे हो जो तुम कुछ समय के लिये उनको अपने से दूर भेज रहे हो।"

खुशकिस्मती से गीदड़ के घर में उस समय एक कमरा खाली था जिसमें वह उन बच्चों को पढ़ा सकता था। और उसकी पत्नी उनके रहने का भी इन्तजाम कर सकती थी हालॉकि उनको अपने रहने की जगह को थोड़ा सा बढ़ाना पड़ता।

इस बात पर गीदड़ और चीता दोनों राजी हो गये कि चीते के बच्चे गीदड़ के घर में रह कर ही पढ़ेंगे। चीते की पत्नी ने कुछ और बातों पर आपस में राय की क्योंकि बच्चे पहली बार अपने माता पिता से अलग हो रहे थे और वे अगले ही दिन वहॉ से जाने वाले थे।

गीदड़ बोला — "हॉ मुझे एक बात का और ध्यान आया। मेरे अपने छोटे बच्चों के अलावा ये सात बच्चे — इन सबकी देखभाल में काफी पैसे लग जायेंगे सो तुम हर हफ्ते एक मोटा सा भेड़ भेज दिया करना।

और इन लोगों की पढ़ाई में कोई दखल न पड़े इसलिये कुछ समय के लिये इन बच्चों को अपनी छुट्टी भी मेरे घर में ही बितानी पड़ेगी। ये बच्चे तुम्हारे पास नहीं आ सकेंगे।

जब मैं देखूँगा कि ये लोग यहाँ रहने के आदी हो गये हैं तो मैं तुम्हें बता दूँगा। तब तुम आ कर इनको अपने घर ले जाना पर उससे पहले नहीं।

कुछ समय के लिये तुम इनको न ही देखो तो अच्छा होगा पर हाँ अगर तुम्हारी पत्नी आ कर उनसे मिलना चाहे तो हर शनिवार को वह उनको देखने के लिये आ सकती है। बाकी सब मैं देख लूँगा।"

अगले दिन चीते के बच्चे बेचारे बहुत रोये चिल्लाये क्योंकि वे अपने माँ बाप को छोड़ कर कहीं जाना नहीं चाहते थे। वे अपने घर से पहली बार दूर जा रहे थे न।

पर चीते और उसकी पत्नी ने अपने बच्चों को समझाया कि यह सब वे उनकी भलाई के लिये ही कर रहे थे। और आगे चल कर उनको पता चलेगा कि यह सब उनके लिये कितना फायदेमन्द था।

अगले दिन आखिर वे बच्चे रोते हुए गीदड़ के साथ गीदड़ के घर चले गये। पहला शनिवार आया तो सुबह ही चीते की पत्नी अपने बच्चों से मिलने के लिये चली। वह अपने बच्चों से मिलने के लिये बहुत बेचैन थी।

जब वह गीदड़ के घर से काफी दूरी पर ही थी कि तभी गीदड़ ने उसको आते हुए देख लिया। सो अपने पड़ोसियों के रीति रिवाजों के अनुसार वह उसको लेने के लिये थोड़ा आगे तक गया।

दोनों ने एक दूसरे को नमस्ते की और एक दूसरे का हालचाल पूछा। हालचाल पूछने के बाद चीते की पत्नी का पहला सवाल था — "गीदड़ भाई, बच्चों के साथ कैसा चल रहा है? क्या वे सब ठीक हैं और खुश हैं? वे कहीं तुमको बहुत ज़्यादा परेशान तो नहीं करते?"

गीदड़ ने उत्साह से कहा — "नहीं मिसेज़ चीता, बिल्कुल नहीं। पर हमको ज़ोर से बातें नहीं करनी चाहिये क्योंकि उन्होंने अगर तुम्हारी आवाज सुन ली तो वे रो पड़ेंगे। और फिर तुम्हारे साथ वे शायद वापस भी जाना चाहें। इससे बेकार में ही उनकी पढ़ाई में बाधा पढ़ेगी और परेशानी खड़ी हो सकती है।"

यह सुन कर चीते की पत्नी थोड़ी सी परेशान हुई और बोली — "पर गीदड़ भाई मैं उनको देखना चाहती हूँ।"

गीदड़ बोला — "हाँ हाँ क्यों नहीं। तुम तो उनको देख लो पर यह ठीक नहीं होगा कि वे तुमको देखें। मैं उनको एक एक कर के खिड़की पर ले कर आता हूँ सो तुम उनको यहाँ से देख लेना कि वे ठीक हैं कि नहीं।"

फिर गीदड़ और उसकी पत्नी और मिसेज चीते ने कौफी पी और कुछ देर बातें की। उसके बाद गीदड़ मिसेज चीते को दरवाजे के पास ले गया और वहाँ से उसको अपने घर के पीछे के आँगन में देखने के लिये कहा।

वहॉ से उसने चीते के बच्चों को खिड़की पर ला कर एक एक कर के दिखाया जबकि वहॉ से उसके बच्चे अपनी मॉ को नहीं देख सकते थे।

सब कुछ ठीक वैसा ही हुआ जैसा कि गीदड़ ने कहा था पर छठा छोटा चीता दो बार उठाया गया क्योंकि चीते के पहले बच्चे का तो पिछले रविवार को ही अचार बना लिया गया था।

ऐसा आने वाले हर शनिवार को होता रहा जब तक कि सबसे छोटे चीते को सात बार नहीं उठा लिया गया।

और अगले शनिवार को जब मिसेज चीता अपने बच्चों को देखने के लिये गीदड़ के घर आयी तो चारों तरफ मौत का सा सन्नाटा छाया हुआ था और गीदड़ का सारा मकान खाली पड़ा था।

वह सीधी सामने के दरवाजे पर गयी तो वहॉ उसको घास पर पड़ा हुआ एक कागज मिला जिस पर लिखा हुआ था "हम लोग बच्चों के साथ एक पिकनिक पर गये हुए हैं वहॉ से हम लोग गीदड़ों के सालाना नाच पर जायेंगे। यह उन बच्चों की तरक्की पसन्द पढ़ाई के लिये बहुत जरूरी है।"

बेचारी मिसेज़ चीता वह नोट पढ़ कर वापस चली गयी। शनिवार पर शनिवार गुजरते गये, मिसेज़ चीता हर शनिवार अपने बच्चों को देखने आती रही पर हर बार उसको गीदड़ का घर कुछ ज़रा ज़्यादा ही उजाड़ दिखायी देता रहा।

एक बार तो उसको उसमें मकड़ी के जाले भी दिखायी देने लगे। अगली बार उसको सॉप के रेंगने के निशान मिले तो उसको लगा कि अब तो वह मकान गीदड़ की बजाय सॉप का हो गया है सो वह बेचारी रोती हुई अपने घर चली गयी।

9 मगर की बदमाशी[25]

यह तब की बात है जब जानवर भी बात किया करते थे। मगर[26] पानी वाले सब जानवरों का जाना माना राजा था और अगर कोई शक्ल से जॉचे तो वह अभी भी है।

पर उन दिनों उसका एक खास काम हुआ करता था और वह था पानी के जानवरों की देखभाल करना। और जब एक साल बहुत सूखा पड़ा और उस नदी का पानी सूख गया जिसमें वे रहते थे और पानी का मिलना बहुत मुश्किल हो गया तो उन लोगों को यह सोचना पड़ा कि वे एक दूसरी नदी जो उस नदी के पास ही थी उसमें चले जायें।

सो सबसे पहले उसने औटर को उसका पानी देखने के लिये भेजा। वह दो दिन के लिये बाहर रहा और यह खबर ले कर आया कि उस नदी में अभी भी बहुत पानी है और कई सालों तक उसके सूखने की कोई उम्मीद नहीं है।

जब उसने यह पक्की खबर दे दी तो मगर ने एक ऐलीगेटर[27] और एक कछुए को बुलाया और उनसे कहा — "मैं यह चाहता हूँ

[25] Crocodile's Treason – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft18.htm

[26] Translated for the word "Crocodile"

[27] Alligator is a crocodile-like animal. In Hindi both are called Magar, so to differentiate them we will use the word Alligator throughout the story.

कि आज की रात तुम दोनों मेरा एक सन्देश ले कर शेर के पास जाओ।

सो तुम लोग तैयार हो जाओ। क्योंकि मैदान सब सूखे पड़े हैं इसलिये तुमको बिना पानी के जाने में शायद कई दिन लग जायें पर यह काम जरूरी है। हमको शेर और उसकी जनता से दोस्ती कर के रखनी चाहिये नहीं तो इस साल हम बहुत सारे लोग मारे जायेंगे।

मैदान के किसी भी जानवर से परेशान हुए बिना हमें खास कर के बोअर का खेत[28] जो रास्ते में पड़ता है और मैदान को पार करने के लिये दूसरी नदी तक जाने के लिये उसकी सहायता की सख्त जरूरत है। जैसा कि तुम सभी लोग जानते ही हो एक मछली जमीन पर कभी कभी कितनी बेसहारा हो जाती है।"

हालॉकि इस सूखे के मौसम में उन दोनों को शेर तक पहुॅचने में बहुत मुश्किल हुई पर वे किसी तरह से उसके पास पहुॅच गये और जा कर उसको मगर का सन्देश दे दिया।

जब शेर ने मगर का सन्देश पढ़ा तो उसने अपने मन में सोचा "यह सब क्या हो रहा है। पहले मुझे गीदड़ से सलाह लेनी चाहिये।"

पर मगर के जो दूत उसके पास आये थे उनसे उसने कहा "कल शाम को मैं तुम्हारी बतायी जगह पर यानी बड़े विलो के पेड़ के नीचे और पानी के

[28] Boer's Farm

बड़े कुँए के पास अपने सलाहकारों के साथ पहुँच जाऊँगा।" यहाँ मगर का अपना दफ्तर था।

जब कछुआ और ऐलीगेटर शेर के पास से वापस आये तो जिस तरीके से यह मामला सिलट रहा था उससे मगर अपने आप से बहुत खुश था।

उसने औटर और कुछ और जानवरों से वहाँ मौजूद रहने के लिये कहा और उन्हें हुक्म दिया कि वे उस विलो के पेड़ के नीचे मेहमानों के लिये काफी मछलियाँ और दूसरा खाना ले कर तैयार रहें।

उस शाम जब शाम ढलने लगी शेर अपने साथ भेड़िया गीदड़ बबून और कुछ और खास जानवरों को साथ ले कर वहाँ आया। वहाँ मगर और दूसरे जानवरों ने उन सबका खुले दिल से स्वागत किया।

मगर जानवरों की उस मीटिंग में बहुत खुश दिखायी दे रहा था। इतना खुश कि उसकी आँखों में खुशी का एक आँसू[29] आ गया जिसे उसने रेत में गिरा दिया जहाँ जा कर वह सूख गया।

जब दूसरे जानवरों ने मछली अच्छी तरह से खा लीं तब मगर ने उनको अपने हालात खोल कर बताये और फिर अपना प्लान खोल कर बताया। वह तो सब जानवरों में मेल और दोस्ती चाहता था

[29] "Crocodile Tears" is a famous idiom in the sense "an insincere show of sympathy and sadness". Crocodiles were once thought to weep large tears before they ate their victims.

क्योंकि इससे न केवल वे ही एक दूसरे को नष्ट करते थे बल्कि बोअर भी उनको मारता था।

बोअर जहॉ से नदी निकलती थी वहीं रहता था और उसके पास भाप के तीन पम्प थे जिनसे वह अपनी जमीन को पानी देता था। पानी रोज ब रोज कम होता जा रहा था।

इससे ज़्यादा यह भी था कि वह उनके इस बुरे हालात का फायदा उठा रहा था। क्योंकि इन हालात में वे सब उथले पानी में रहते थे और एक के बाद एक मरते जा रहे थे।

शेर भी इस मामले में शान्ति लाने के लिये राजी था तो इस मौके का फायदा उठाने में उसकी भी शान बढ़ती थी सो उसने भी इन शान्ति चाहने वालों का साथ देना स्वीकार किया और जो कुछ उसके हिस्से का काम था वह करने को तैयार हो गया।

उसका काम था कि इन पानी वाले जानवरों को सूखी जमीन से बोअर के खेत से हो कर बड़े बड़े तालाबों के पास तक सुरक्षित रूप से ले आये।

गीदड़ बोला — "और हमारा इसमे क्या फायदा होगा?"

मगर बोला — "हम जो शान्ति बना कर रखेंगे वही हम दोनों का सबसे बड़ा फायदा है। हम लोग एक दूसरे को मारेंगे नहीं। जब भी तुम्हारी पानी पीने की इच्छा होगी और तुम लोग यहॉ पानी पीने आओगे तो तुम शान्ति से पानी पी सकोगे। उसमें तुम्हें कभी डर

नहीं लगेगा कि हममें से तुम्हें कोई तुम्हें तुम्हारी नाक से पकड़ लेगा। और ऐसा ही दूसरे जानवरों के साथ भी होगा।

और तुम्हारी तरफ से हम हाथी से निडर रहेंगे जिसकी कि यह आदत कि जब भी कभी उसे मौका मिलता है तो वह हम लोगों को अपनी सूँड़ से पकड़ कर किसी भी पेड़ की शाख पर उछाल देता है और हमको वहाँ लटका छोड़ देता है।"

यह सुन कर शेर और गीदड़ आपस में एक दूसरे से सलाह करने के लिये एक तरफ को चले गये। वापस आ कर शेर यह जानना चाहता था कि उसको मगर की तरफ से किस तरह की सुरक्षा मिलेगी।

मगर तुरन्त बोला — "मैं अपनी बात का पक्का हूँ।" और उसने अपनी ईमानदारी में कुछ और बड़े बड़े आँसू बहा कर रेत में मिला दिये।

बबून बोला — "जहाँ तक मैं समझता हूँ यह सब ठीक है और ईमानदारी का मामला है। मेरा कहना यह है कि एक दूसरे के लिये गड्ढे खोदना कोई अच्छी बात नहीं है। यह मेरा अपना अनुभव है कि इस तरह के दोस्ती और शान्ति के समझौते[30] से उसकी अपनी जाति को जरूर फायदा होगा।

और इससे भी ज़्यादा बड़ी बात तो यह है कि उन्हें यह भी सोचना चाहिये कि खत्म होते हुए पानी का इस्तेमाल भी ठीक से

[30] Translated for the word "Contract"

करें। क्योंकि अच्छे समय में भी यह कोई खुशी की बात नहीं है कि आप अपना पानी साथ साथ लिये घूमें।

इसलिये मैं राजा शेर को यह सलाह देना चाहूँगा कि यह ज़्यादा अच्छा रहेगा अगर सब कुछ लिख लिया जाये ताकि अगर कभी इसकी जरूरत पड़े तो पछतावा न हो।"

गीदड़ इस समझौते को बिल्कुल सुनना नहीं चाहता था। उसको यह बिल्कुल भी विश्वास नहीं था कि यह समझौता मैदान के जानवरों के भले में होगा पर भेड़िया जिसने मछलियॉ पेट भर कर खायी थीं कुछ ज़रा ज़्यादा ही शान्तिप्रिय नजर आ रहा था। उसने शेर को फिर से यह समझौता बन्द करने[31] की सलाह दी।

जब शेर ने अपने सब सलाहकारों की सलाह ले ली और मगर की तरफ के जानवरों की प्रार्थना सुन ली तब उसने एक भाषण दिया जिसमें उसने कहा कि यह देखते हुए कि मगर और उसकी जनता इस समय बड़ी परेशानी में है वह मगर का समझौता मानने के लिये तैयार है।

उसी समय एक समझौता लिखा गया और यह तय पाया गया कि आधी रात से पहले मगर के लोग अपनी यात्रा शुरू करेंगे। मगर के दूत पानी सब जगह तैर गये और उन्होंने अपने लोगों को इस बात की सूचना दे दी कि उनकी यात्रा आधी रात से पहले ही शुरू हो जायेगी।

[31] Means "to close the contract"

मेढकों ने टर्राना शुरू कर दिया मकड़ियों ने पानी की लम्बी घास में चिल्लाना शुरू कर दिया। जल्दी ही सारे जानवर विलो के पेड़ के नीचे आ कर इकट्ठे होने लगे।

इस बीच शेर ने भी अपने कुछ सवारों को इधर उधर भेज दिया ताकि वे कुछ जानवरों को पानी के जानवरों के साथ जाने के लिये इकट्ठा कर सकें। आधी रात तक सब उस विलो के पेड़ के नीचे चॉदनी में आ कर इकट्ठे हो गये।

यह यात्रा शेर और गीदड़ की देखभाल में हो रही थी। गीदड़ इधर उधर देखता हुआ आगे आगे जाने वाला था।

जब गीदड़ को मौका मिला तो उसने शेर को एक तरफ ले जा कर उससे कहा — "देखिये शेर जी। मैं इस समझौते पर ज़रा सा भी विश्वास नहीं करता। मैं आपसे सीधी बात कहना चाहता हूॅ कि यह रास्ता मैं बनाता हुआ जाऊॅगा।

मैं आपके लिये देखभाल करता हुआ भी जाऊॅगा जब तक कि आप तालाब तक न पहुॅच जायें पर मैं वहॉ पहुॅच कर आपका इन्तजार नहीं करूॅगा।"

हाथी को रक्षा के लिये आगे आगे चलना था क्योंकि वह इतनी बेआवाज चलता था और इतना अच्छा सूॅघता और सुनता था। उसके बाद शेर को कुछ जानवरों के साथ चलना था। उसके पीछे मगर को अपने लोगों को ले कर चलना था जो दोनों तरफ से मैदान

के जानवरों से सुरक्षित होते। और भेड़िये को हुक्म था कि वह पीछे से रक्षा करता चले।

जब इस सबका इन्तजाम हो रहा था तो मगर अपनी बदमाशी की तैयारी कर रहा था। उसने पीले सॉप को एक तरफ बुलाया और उससे कहा — "इन जानवरों का अपने साथ रहना हमारे लिये बहुत फायदेमन्द है जो हमारे साथ रोज घूमते फिरते रहते हैं और आगे भी इसी तरह से घूमते फिरते रहेंगे अगर ये किसी तरह से बोअर के हाथ लग जायें तो...।

अब तुम मेरी बात सुनो तुम हमारे पीछे पीछे ऐसे चलो कि किसी को इस बात का पता न चले और जब तुम मेरे चिल्लाने की आवाज सुनो तब तुम जानना कि हम लोग सुरक्षित रूप से तालाब पर पहुॅच गये हैं।

उस समय तुम बोअर के कुत्तों को जितना ज़्यादा से ज़्यादा तंग करना फिर बाकी हम देख लेंगे।"

इस तरह से यात्रा शुरू हुई। ऐसे समय में धीरे चलना बहुत जरूरी था क्योंकि बहुत सारे पानी के जानवर धरती पर चलने के आदी नहीं थे। पर उन्होंने बोअर का खेत सुरक्षित रूप से पार कर लिया। सुबह दिन निकलने पर वे सब सुरक्षित रूप से तालाब पर पहुॅच गये थे।

वहॉ पहुॅच कर अधिकतर जानवर अचानक ही गहरे पानी में जा कर गायब हो गये। मगर भी इसी तरह से पानी में जाने की तैयारी

में था। उसने ऑखों में ऑसू भर कर शेर से कहा कि वह उसकी इस सहायता के लिये बहुत बहुत ऋणी है और बहुत बहुत धन्यवाद देता है।

इस खुशी को दिखाने के लिये उसने कई बार चिल्लाने की आवाज भी निकाली। फिर वह इतनी ज़ोर से भी चिल्लाया कि पहाड़ों से आवाज गूँज कर वापस आ गयी।

फिर उसने अपने लोगों की तरफ से उसे धन्यवाद दिया और यह बताते हुए कि इस शान्ति के समझौते से दोनों तरफ के जानवरों को कितना फायदा होगा जानबूझ कर अपने भाषण को लम्बा बना दिया।

शेर भी उससे बस गुड डे ही कह कर वहॉ से जाने वाला हो रहा था कि पहली गोली की आवाज सुनायी पड़ी और पहले हाथी और फिर कई और जानवर गिरते नजर आये।

तालाब के दूसरी तरफ से गीदड़ चिल्लाया — "मैंने तो तुम लोगों से पहले ही कहा था कि मुझे इस समझौते पर कतई विश्वास नहीं है। तुम लोग इस मगर के ऑसुओं पर क्यों पिघल गये।"

इस बीच मगर तो कब का पानी में गायब हो चुका था। उसके पानी में अन्दर जाने के तो बस अब बुलबुले ही दिखायी दे रहे थे।

पर किनारे पर तो जानवरों में आपस में ही बहुत झगड़ा हो रहा था। वह तो जिस तरीके से बोअर के लोगों ने उनको मारा उस

तरीके ने उनको और उकसा दिया। पर फिर भी बहुत सारे जानवर बच गये।

कुछ देर बाद ही ऐसा कहते हैं कि मगर को उसकी इस बात का इनाम मिल गया जब उसको डाइनामइट ले जाता हुआ एक आदमी मिल गया। आज भी हाथी को जब भी मौका मिलता है तो वह किसी को भी उठा कर पेड़ की ऊँची ऊँची शाखों पर बिठा देता है।

10 पानी के लिये नाच या खरगोश की जीत[32]

एक बार की बात है कि देश में बहुत ही भयंकर अकाल पड़ा। कुछ समय बाद नदियॉ सूख गयीं और स्रोतों[33] से भी पानी निकलना बन्द हो गया। जानवर बेचारे चारों तरफ पानी की तलाश में इधर उधर घूमने लगे पर कोई फायदा नहीं था। क्योंकि पानी कहीं था ही नहीं।

राजा शेर ने एक मीटिंग बुलायी। उसमें चीता भेड़िया गीदड़ हाथी और बहुत सारे जानवर इकट्ठा हुए। समस्या थी कि पानी के बारे में अब क्या किया जाये। कोई कुछ तरकीब बता रहा था तो दूसरा दूसरी तरकीब बता रहा था। पर कोई तरकीब काम की नहीं लग रही थी।

आखिर एक ने सलाह दी कि "चलो हम सब सूखी नदी पर चलते हैं वहॉ जा कर उस पर हम सब नाचेंगे तो हो सकता है हमारे नाचने से वहॉ पर पानी आ जाये।"

"यह तो बहुत अच्छा है।" सब लोगों ने इस बात को माना और वे तुरन्त ही नदी पर नाचना शुरू हो गये। केवल खरगोश ही नहीं नाचा। वह बोला कि वह नहीं नाचेगा। तुम सब लोग सूखी धरती पर नाच कर वहॉ से पाने की आशा में पागल हो।"

---

[32] The Dance for Water or Rabbit's Triumph – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft20.htm

[33] Translated for the word "Spring".

दूसरे जानवर वहॉ नाचते रहे और नाचते रहे जब तक कि पानी ऊपर नहीं आ गया। यह देख कर वे कितने खुश थे कि उनके नाचने से वहॉ पानी निकल आया था। हर एक ने जी भर कर पानी पिया।

पर क्योंकि खरगोश ने उनके साथ पानी लाने के लिये वहॉ कोई नाच नहीं किया था सो उन्होंने तय किया कि खरगोश को उसमें से कोई पानी नहीं मिलेगा।

खरगोश उन पर हॅस रहा था। वह बोला — "फिर भी मैं तुम्हारा पानी पियूॅगा, तुम देखना।"

उस शाम को वह टहलता हुआ नदी की तरफ बढ़ा जहॉ जानवर नाचे थे। वहॉ उसने जी भर कर पानी पिया और वापस आ गया।

अगली सुबह जानवरों ने खरगोश के पैरों के निशान देखे तो खरगोश उन पर चिल्लाया — "हॉ मैंने तुम्हारा थोड़ा सा पानी पिया है। पानी बिल्कुल ताजा और बहुत ही मीठा है।"

तुरन्त ही एक बार फिर से जानवरों को मीटिंग के लिये बुलाया गया और फिर से सोचा गया कि अब वे क्या करें। अब वे खरगोश से अपना पीछा कैसे छुड़ायें। सबने कोई न कोई तरकीब बतायी किसी ने कोई किसी ने कोई।

आखीर में एक बूढ़ा कछुआ बहुत धीरे धीरे आगे बढ़ा इंच ब इंच और बोला — "मैं पकड़ूॅगा खरगोश को।"

यह सुनते ही सारे जानवर एक साथ बोल पड़े — "तुम? तुम कैसे पकड़ोगे उसे? क्या समझते हो तुम अपने आपको?"

कछुआ बोला — "तुम लोग मेरे शरीर पर मधुमक्खी के छत्ते का काला वाला मोम मल देना और मैं पानी के किनारे जा कर लेट जाऊँगा। इससे मैं एक पत्थर जैसा लगूँगा। जब खरगोश पानी पीने आयेगा तो जैसे ही वह मेरे ऊपर पैर रखेगा वह मुझसे चिपक जायेगा।"

यह सुन कर सारे जानवर बहुत खुश हो गये और बोले "यह तो बहुत बढ़िया बात है।"

बस एक दो तीन कहने की देर थी और कछुए का सारा शरीर मधुमक्खी के काले मोम से ढका हुआ था। इंच ब इंच खिसकते हुए कछुआ नदी की तरफ चल दिया। नदी के किनारे पर पानी के पास पहुँच कर कछुआ आराम से लेट गया। उसने अपना मुँह अन्दर कर लिया था।

शाम को खरगोश वहाँ पानी पीने आया तो खिल्ली उड़ाते हुए बोला — "ये जानवर सब बहुत ही अच्छे लोग हैं। यहाँ तो उन्होंने मेरे लिये एक पत्थर भी रख दिया है ताकि मैं उस पर पैर रख कर पानी पी सकूँ और मेरे पैर भी गीले न हों।"

इतना कह कर उसने अपना बाँया पैर कछुए पर रख दिया जो उसको काला पत्थर नजर आ रहा था। पर उस पर पैर रखते ही उसका पैर तो कछुए से चिपका गया।

जैसे ही कछुए ने यह महसूस किया कि किसी ने उसके ऊपर अपना पैर रखा तो उसने अपना मुँह बाहर निकाला। उसका मुँह देख कर खरगोश बोला — "अरे यह तुम हो कछुए भाई। बूढ़े कछुए। यह तुमने मुझे पकड़ रखा है? पर अभी तो मेरे पास दूसरा पैर है। मैं उससे तुमको अच्छी तरह मारता हूँ।"

सो खरगोश ने वही किया जो उसने कछुए से कहा था। उसने उसको ज़ोर से अपने दॉये पैर से मारा तो लो उसका तो वह पैर भी वहीं कछुए की पीठ से चिपक गया।

"मेरे पास अभी मेरा पिछला पैर भी है तुम्हें मारने के लिये।" कह कर उसने अपना पिछला पैर कछुए पर जो मारा तो वह भी वहीं का वहीं चिपक कर रह गया।

इस पर खरगोश को बहुत गुस्सा आ गया उसने धम्म से अपना दूसरा पिछला पैर भी कछुए की पीठ पर रख दिया। अब उसके चारों पैर कछुए की पीठ पर चिपके पड़े थे।

परेशान हो कर उसने अपना सिर हथौड़े की तरह कछुए पर दे मारा और अपनी पूँछ उस पर कोड़े की तरह मारी पर वे दोनों भी वहीं चिपक कर रह गये।

अब कछुए ने धीरे धीरे खिसकना शुरू किया और खरगोश को अपनी पीठ पर चिपकाये हुए इंच ब इंच खिसकते हुए दूसरे जानवरों की तरफ चल दिया।

उसको देख कर दूसरे जानवर चिल्लाये — "हा हा हा हा खरगोश जी। अब आपको कैसा लग रहा है। इस तरह किसी के साथ बेइज़्ज़ती वाला व्यवहार करना अच्छा नहीं होता।"

अब जबकि खरगोश पकड़ लिया गया था तो नयी सलाह माँगी गयी कि इस खरगोश का किया क्या जाये। इस बात पर तो सब राजी थे कि उसको मार देना चाहिये। पर कैसे?

एक ने कहा उसका गला काट दो। दूसरा बोला इसे कोई बहुत भारी सजा दो। तीसरे ने खरगोश से ही पूछा कि उसको कैसे मारा जाये।

खरगोश बोला — "तुम लोग मुझे चाहे जैसे मारो मुझे कोई फर्क नहीं पड़ता। पर बस मेरे लिये कोई शर्मनाक मौत मत बताना।"

सब चिल्लाये — "और वह क्या है?"

खरगोश बोला — "कि मुझे मेरी पूँछ से पकड़ो और किसी पत्थर पर दे मारो। मैं तुम लोगों से विनती करता हूँ कि ऐसा मत करना।"

"नहीं, हम तुमको वैसे ही मारेंगे और तुमको मरना तो है ही। यह तो पक्का है।"

सो यह तय किया गया कि खरगोश को उसकी पूँछ पकड़ कर उसके सिर को किसी पत्थर पर मार कर ही मारा जाये। पर इसे करेगा कौन?

शेर को यह काम करना चाहिये क्योंकि वही सबसे ज़्यादा ताकतवर है। सो वह उठा और सामने आया। बेचारे खरगोश को उसके सामने लाया गया।

खरगोश ने उससे बहुत प्रार्थना की कि उसको इस तरीके से न मारा जाये पर किसी ने उसकी एक न सुनी। शेर ने उसकी पूँछ मजबूती से पकड़ी उसको हवा में घुमाया तो सफेद खाल उसके शरीर से निकल गयी और खरगोश शेर की पकड़ से आजाद हो गया।

शेर उसकी खाल और बाल को ही देखता रह गया।

11 गीदड़ और बन्दर[34]

गीदड़ का यह नियम था कि वह रोज शाम को बोअर के काल[35] जाया करता था। वहॉ जा कर वह उसके खिसकाने वाले दरवाजे से अन्दर घुसता और वहॉ से एक मोटा सा बकरा चुरा कर ले आता था।

गीदड़ ने यह काम कई दिनों तक किया तो तंग आ कर बोअर ने उसको पकड़ने के लिये एक जाल बिछाया। सो जब गीदड़ दोबारा वहॉ गया तो वह उस जाल में पकड़ा गया। उसके शरीर के चारों तरफ फन्दा फॅस चुका था।

वह इधर हिला उधर कूदा ऊपर हुआ नीचे हुआ पर वह जमीन नहीं छू सका। सारी रात बीत गयी अब दिन निकलने ही वाला था सो गीदड़ को बेचैनी होने लगी।

बन्दर एक ऊॅचे से पत्थर पर बैठा था। जब रोशनी हुई तब उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसने सारा मामला साफ साफ देखा।

वह गीदड़ की हॅसी उड़ाने के लिये वहॉ से जल्दी जल्दी नीचे उतर कर आया। वह वहॉ से उतर कर एक दीवार पर आ कर बैठ

---

[34] Jackal and Monkey – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft21.htm

[35] Kraal is a village of a few huts surrounded by a wall, especially in South Africa. It is very common in Zulu Tribe there. See its picture above.

गया और हॅसते हुए बोला — "हा हा हा। गुड मार्निंग गीदड़ जी। तो तुम यहॉ लटक रहे हो। आखिर तुम पकड़े ही गये न।"

गीदड़ हॅस कर बोला — "क्या? मैं पकड़ा गया? नहीं तो। मैं तो यहॉ आनन्द से झूल रहा हूॅ। यहॉ झूलने में बड़ा मजा आ रहा है।"

"तुम झूठे हो। तुम्हें झूलने में मजा नहीं आ रहा बल्कि तुम तो जाल में फॅस गये हो।"

गीदड़ बोला — "अगर तुम समझ सकते तो तुम जानते कि इस झूले में झूलना और हिलना कितना अच्छा लग रहा है। तुम भी इसमें झूलने से नहीं हिचकिचाते। आओ और आ कर अपने आप देखो कि तुमको इसमें झूल कर सारा दिन कितना तन्दुरुस्त और खुश महसूस होता है। और फिर तुम कभी थकावट महसूस नहीं करोगे।"

बन्दर बोला — "नहीं नहीं मैं नहीं आता। तुम जाल में फॅस चुके हो।"

कुछ देर तक अपनी दलीलें देने के बाद आखिर गीदड़ ने बन्दर को यह विश्वास दिला ही दिया कि उस झूले में झूलना कितना मजेदार था।

सो वह काल की दीवार से कूदा और उसने गीदड़ को उस फन्दे से आजाद कर दिया और उस फन्दे को अपने शरीर के चारों तरफ लपेट लिया।

गीदड़ तुरन्त ही वहॉ से कुछ दूर जा कर हॅसने लगा। क्योंकि अब उसकी जगह बन्दर उस झूले में झूल रहा था या यों कहो कि बन्दर अब उसकी जगह फन्दे में फॅस गया था।

गीदड़ हॅस हॅस कर बोला — "आहा अब बन्दर जाल में फॅस गया। आहा अब बन्दर जाल में फॅस गया।"

यह देख कर बन्दर ज़ोर से चिल्लाया — "ओ गीदड़ मुझे इस जाल से आजाद करो।"

गीदड़ ज़ोर से चिल्लाया — "बोअर आ रहा है।"

बन्दर फिर चिल्लाया — "ओ बन्दर मुझे आजाद करो नहीं तो तुम्हारे खिलौने तोड़ दूँगा।"

गीदड़ बोला — "नहीं वह तुम नहीं कर सकते। वह देखो वह बोअर आ रहा है उसके पास एक बन्दूक भी है। जब तक वह आता है तब तक तुम इसी जाल में थोड़ा आराम करो।"

"गीदड़ मुझे जल्दी आजाद करो।"

"नहीं। बोअर तो बस यहॉ आ ही पहुँचा है। उसने अपनी बन्दूक भी निकाल ली है। ठीक है गुड मौर्निंग।" और यह कह कर गीदड़ वहॉ से जितनी तेज़ी से भाग सकता था भाग गया।

जब बोअर पास आया तो उसने बन्दर को जाल में फॅसे पाया तो वह बोला — "आहा तो बन्दर तुम हो जो मेरे बकरे चुराते रहे हो। आज तुम पकड़े गये।"

बन्दर चिल्लाया — "नहीं मैं वह नहीं हूँ वह तो गीदड़ है।"

बोअर बोला — "नहीं नहीं। मैं तुम्हें जानता हूँ तुम उससे कोई ज़्यादा अच्छे नहीं हो।"

बन्दर फिर हकला कर बोला — "नहीं बोअर वह मैं नहीं हूँ वह तो गीदड़ है जिसने तुम्हारे बकरे चुराये हैं।"

बोअर बोला — "ज़रा रुको मैं तुमको बताता हूँ कि मेरे बकरे चुराने का क्या मतलब है।" कह कर उसने अपनी बन्दूक तानी और ठॉय। बन्दर बेचारा झूले में ही मरा पड़ा था।

12 बड़े खरगोश की कहानी[36]

एक बार की बात है कि जानवरों ने एक बार अपना एक क्राल[37] बनाया और उसमे कुछ चर्बी रख दी। उन्होंने यह तय किया कि उनमें से एक जानवर उसकी रखवाली के लिये उसके फाटक पर खड़ा रहेगा।

पहला जानवर जो उन्होंने वहॉ का पहरेदार रखा वह था कोनी[38] यानी खरगोश। वह वहॉ की पहरेदारी के लिये राजी हो गया सो वह तो वहॉ पहरा देने लगा और बाकी जानवर वहॉ से चले गये।

कुछ देर तक तो खरगोश ने पहरा दिया पर फिर उसे नींद आ गयी सो वह गहरी नींद सो गया। उसी समय एक बहुत बड़ा सा भेड़िया[39] वहॉ आया और जानवरों का सारी चर्बी जो उन्होंने वहॉ इकट्ठी कर के रखी थी वह सब खा गया। चर्बी खाने के बाद उसने खरगोश पर एक छोटा सा पत्थर फेंका।

---

[36] The Story of Hare – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft24.htm
[My Note : This story seems to be one of the very popular South Africa's folktales as it is given on other Web Sites also : http://www.gateway-africa.com/stories/Inkalimeva_and_the_Hare.html]

[37] Kraal is small village of a few huts surrounded by a wall – see its picture above. It is very common in South Africa in Zulu Tribe.

[38] Coney means rabbit.

[39] Translated for the word "Inkalimeva" – it is a mythical folktale animal in South African folktales (Xhosa Mythology) pronounced as "Inkalimve", mostly depicted as a wolf.

तो खरगोश चौंक कर जाग गया और चिल्लाया — "सारे जानवरों की जमा की गयी चर्बी तो यह भेड़िया ही खा गया।" ऐसा वह कई बार चिल्लाया और बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाया।

जानवर कुछ दूरी पर थे। उन्होंने जब खरगोश का चिल्लाना सुना तो वे काल की तरफ भागे और जब उन्होंने देखा कि उनकी सारी चर्बी चली गयी है तो उन्होंने खरगोश को मार दिया।

उन्होंने दूसरी बार चर्बी काल में रखी और फिर एक और जानवर को वहॉ का पहरेदार रखा। वह जानवर भी पहरेदारी के लिये तैयार हो गया सो बाकी जानवर उसको वहॉ छोड़ कर अपने अपने घर चले गये।

कुछ देर बाद वह भेड़िया फिर उस काल में आया। इस बार वह अपने साथ शहद भी लाया था। उसने काल के फाटक के पहरेदार को शहद खाने के लिये बुलाया और जब वह जानवर शहद खाने का आनन्द ले रहा था तो वह अन्दर गया और जानवरों की सारी चर्बी चुरा ली।

उसने फिर से उस पहरेदार जानवर पर एक छोटा सा पत्थर फेंका तो उसने अपना सिर उठा कर देखा तो वह पहरेदार भी चिल्लाया — "सारे जानवरों की जमा की गयी चर्बी तो यह भेड़िया ही खा गया।" ऐसा वह कई बार चिल्लाया और बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाया।

उसकी चिल्लाना सुन कर सारे जानवर फिर से वहॉ दौड़े आये और उन्होंने उस पहरेदार जानवर को भी मार डाला।

उन्होंने चर्बी फिर तीसरी बार काल में रखी और अबकी बार तीसरे जानवर को उसका पहरा सौंपा। उसने भी पहरा देना स्वीकार किया और दूसरे जानवर उसको वहॉ छोड़ कर चले गये।

कुछ देर बाद फिर से भेड़िया आया और उसने उस पहरेदार जानवर से कहा कि वे लुका छिपी का खेल खेलेंगे। पहरेदार तैयार हो गया तो भेड़िया तो छिप गया और पहरेदार जानवर उसको ढूँढता फिरा पर वह उसको कहीं मिला ही नहीं।

यहॉ तक कि वह उसको ढूँढते ढूँढते थक गया। जब वह थक गया तो वह लेट गया और सो गया। जब वह पहरेदार जानवर सो गया तो भेड़िये ने जानवरों की सारी चर्बी खा ली। पहले की तरह से फिर उसने एक छोटा सा पत्थर पहरेदार जानवर को फेंक कर मारा जिससे उसकी ऑख खुल गयी।

वह पहरेदार भी चिल्लाया — "सारे जानवरों की जमा की गयी चर्बी तो यह भेड़िया ही खा गया।" ऐसा वह कई बार चिल्लाया और बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाया।

उसकी चिल्लाना सुन कर सारे जानवर फिर वहॉ दौड़े आये और उन्होंने उस पहरेदार जानवर को भी मार डाला।

उन्होंने चौथे दिन फिर से चर्बी अपने काल में रखी और अबकी बार नीले हिरन[40] को उसकी पहरेदारी सौंपी। नीले हिरन ने भी यह पहरेदारी स्वीकार की सो वह तो चर्बी की पहरेदारी करने लगा और बाकी जानवर अपने अपने घर चले गये।

जब सारे जानवर चले गये तब भेड़िया फिर से वहॉ आया और नीले हिरन से बोला — "तुम यहॉ अकेले अकेले क्या कर रहे हो?"

तो नीला हिरन बोला — "मैं यहा जानवरों की रखी चर्बी पर पहरा दे रहा हूॅ।"

भेड़िया बोला — "तो चलो मैं तुम्हारा साथ देता हूॅ। हम दोनों एक दूसरे का सिर खुजाते हैं।"

नीला हिरन इस बात पर राजी हो गया सो दोनों वहॉ बैठ कर एक दूसरे का सिर खुजाने लगे जब तक कि नीला हिरन सो नहीं गया। उसके सोते ही भेड़िया उठा उसने वहॉ रखी सारी चर्बी खा ली। चर्बी खा कर उसने पहले की तरह से नीले हिरन को भी एक छोटा सा पत्थर मारा और चला गया।

पत्थर की मार से नीला हिरन भी जाग गया और चिल्लाया — "सारे जानवरों की जमा की गयी चर्बी तो यह भेड़िया ही खा गया।" ऐसा वह कई बार चिल्लाया और बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाया।

[40] Translated for the word "Bluebuck"

उसकी चिल्लाना सुन कर सारे जानवर वहॉ दौड़े आये और उन्होंने उस नीले हिरन को भी मार डाला।

उन्होंने पॉचवे दिन फिर से चर्बी अपने क्राल में रखी और अबकी बार उसकी पहरेदारी की जिम्मेदारी उन्होंने साही[41] को सौंपी। साही ने भी यह पहरेदारी स्वीकार की सो वह तो चर्बी की पहरेदारी करने लगा और बाकी जानवर अपने अपने घर चले गये।

जब सारे जानवर चले गये तब भेड़िया फिर से वहॉ आया और साही से बोला — "चलो हम लोग एक दौड़ दौड़ते हैं।"

दोनों ने एक दौड़ दौड़ी और भेड़िये ने साही को अपने आपको हरा देने दिया।

भेड़िया बोला — "मुझे नहीं लगता कि तुम काफी तेज़ दौड़ लेते हो पर चलो एक बार और दौड़ते हैं।"

सो वे दोनों दोबारा दौड़े और भेड़िये ने फिर से साही को जिता दिया। इस तरह वे दौड़ते ही रहे जब तक साही थक कर चूर नहीं हो गया।

आखिर साही बोला — "अब थोड़ा आराम करते हैं।"

सो दोनों थोड़ा आराम करने के लिये बैठ गये। साही काफी थका हुआ था सो वह तुरन्त ही सो गया। तब भेड़िया उठा और जानवरों की सारी चर्बी खा गया।

[41] Translated for the word "Porcupine". See its picture above.

चर्बी खा कर उसने पहले की तरह से फिर से पत्थर का एक छोटा सा टुकड़ा उठाया और साही को उससे मारा तो उसकी मार से वह जाग गया और चिल्लाया — "सारे जानवरों की जमा की गयी चर्बी तो यह भेड़िया ही खा गया।" ऐसा वह कई बार चिल्लाया और बहुत ज़ोर ज़ोर से चिल्लाया।

उसकी चिल्लाना सुन कर सारे जानवर फिर से वहॉ दौड़े आये और उन्होंने साही को भी मार डाला।

छठे दिन उन्होंने फिर से चर्बी अपने क़ाल में रखी और अबकी बार उसकी पहरेदारी की जिम्मेदारी उन्होंने बड़े खरगोश[42] को सौंपी।

पहले तो बड़े खरगोश ने यह पहरेदारी स्वीकार नहीं की। वह बोला — "खरगोश मर गया। दूसरा जानवर भी मर गया तीसरा जानवर भी मर गया नीला हिरन भी मर गया साही भी मर गया। तुम लोग क्या मुझे भी मारना चाहते हो?"

उन्होंने उससे वायदा किया कि वह उनकी पहरेदारी कर दे वे उसको नहीं मारेंगे। काफी न नुकुर के बाद वह चर्बी की पहरेदारी करने के लिये तैयार हो गया। सो वह तो चर्बी की पहरेदारी करने लगा और बाकी जानवर अपने अपने घर चले गये।

[42] Translated for the word "Hare" – see its picture above. Hare is rabbit-like animal but a little bigger than it.

जब सारे जानवर चले गये तब बड़ा खरगोश छिप कर लेट गया और सोने का बहाना करने लगा।

जल्दी ही भेड़िया फिर से वहॉ आया और अन्दर जा कर चर्बी खाने लगा तो तुरन्त ही बड़ा खरगोश चिल्लाया — "रुक जाओ। चर्बी को छोड़ दो।"

भेड़िया बोला — "बस मुझे बहुत थोड़ी सी खाने दो।"

बड़े खरगोश ने उसकी नकल बनाते हुए कहा — "बस मुझे बहुत थोड़ी सी खाने दो।"

उसके बाद वे दोनों साथी बन गये। बड़े खरगोश ने कहा — "चलो हम लोग एक दूसरे की पूँछ बॉध देते हैं। भेड़िया राजी हो गया। भेड़िये ने बड़े खरगोश की पूँछ पहले बॉधी तो बड़ा खरगोश बोला — "मेरी पूँछ बहुत कस कर मत बॉधना।"

उसके बाद बड़े खरगोश ने भेड़िये की पूँछ बॉधी तो भेड़िया भी बोला — "मेरी पूँछ बहुत कस कर मत बॉधना।"

पर बड़े खरगोश ने उसकी इस बात पर कोई ध्यान नहीं दिया। भेड़िये की पूँछ काफी कस कर बॉधने के बाद बड़े खरगोश ने अपना डंडा उठाया और उससे उसे मार दिया।

उसे मार कर बड़े खरगोश ने उसकी पूँछ खा ली पर उसका एक छोटा सा टुकड़ा दीवार के पीछे रख दिया। फिर वह चिल्लाया — "सारे जानवरों की जमा की गयी चर्बी तो यह भेड़िया ही खा

गया।" यह सुन कर सारे जानवर दौड़े दौड़े वहॉ आये और जब उन्होंने देखा कि भेड़िया तो वहॉ मरा पड़ा है तो वे बहुत खुश हुए।

उन्होंने बड़े खरगोश से उसकी पूँछ मॉगी ताकि वह उसे अपने सरदार को दिखा सकें तो बड़े खरगोश ने उनसे कहा कि जो भेड़िया उसने मारा था उसके कोई पूँछ नहीं थी।

वे बोले — "यह कैसे हो सकता है कि भेड़िये के कोई पूँछ ही न हो।"

सो उन्होंने उसकी पूँछ को आस पास में ढूँढना शुरू किया तो उनको उसकी पूँछ का एक छोटा सा टुकड़ा दीवार के पीछे छिपा हुआ मिल गया। उन्होंने अपने सरदार से जा कर कहा कि भेड़िये की पूँछ तो बड़े खरगोश ने खा ली।

सरदार ने कहा "उसको मेरे पास ले कर आओ।"

सारे जानवर बड़े खरगोश को पकड़ने के लिये दौड़े पर वह तो भाग गया था। वे उसको पकड़ ही नहीं सके। बड़ा खरगोश एक बिल में जा कर घुस गया था तो जानवरों ने उसको पकड़ने के लिये वहॉ एक जाल बिछा दिया और वहॉ से चले गये।

बड़ा खरगोश उस बिल में बहुत दिन तक रहा पर फिर किसी तरह से बिना जाल में फॅसे वह अपने बिल से बाहर निकल आया। वहॉ से निकल कर वह एक ऐसी जगह गया जहॉ एक नीला हिरन अपने लिये एक झोंपड़ी बना रहा था। वहीं उसके पास ही मॉस आग पर उबल रहा था।

उसने नीले हिरन से पूछा — "क्या मैं मॉस का एक छोटा सा टुकड़ा ले सकता हूँ?"

नीला हिरन बोला — "नहीं तुम ऐसा नहीं कर सकते।"

पर उसने उस बर्तन में से सारा मॉस निकाल लिया और खा लिया। फिर उसने एक खास तरीके से सीटी बजायी जिससे वहॉ ओलों की बारिश हो गयी जिसने नीले हिरन को मार दिया।

उसने नीले हिरन की खाल निकाल ली और अपने लिये उसकी खाल का एक शाल बना लिया।

उसके बाद वह लड़ने के लिये कुछ हथियार ढूँढने जंगल चला गया। जब वह एक डंडी काट रहा था तो कुछ बन्दरों ने उसके ऊपर पत्तियॉ फेंक दीं। उसने उनको नीचे आ कर उसे पीटने के लिये कहा। वे नीचे आये तो उसने उन सबको अपने हथियारों से मार दिया।

13 एक गोरा और एक सॉपिन[43]

एक बार की बात है कि एक गोरे आदमी[44] को एक सॉपिन मिली जो एक बहुत बड़े पत्थर के नीचे दबी पड़ी थी। इससे वह उठ ही नहीं पा रही थी। गोरे को उसे इस हालत में देख कर दया आ गयी तो उसने उसके ऊपर से पत्थर हटा दिया। पर जैसे ही उसने उसके ऊपर से पत्थर उठाया तो वह तो उसको काटना चाहती थी।

गोरा डर गया और बोला — "रुको। पहले हम कुछ अक्लमन्द लोगों से पूछ लें कि क्या तुम्हारा मुझे इस तरह से काटना ठीक है।"

सो वे सबसे पहले हयीना[45] के पास गये। उसके पास जा कर गोरे ने उससे पूछा — "क्या यह ठीक है कि यह सॉपिन मुझे काटे जबकि मैंने इसको एक बड़े से पत्थर के नीचे से निकाल कर इसकी सहायता की है क्योंकि वहॉ से तो यह हिल भी नहीं सकती थी।"

हयीना ने सोचा कि उसको भी गोरे के शरीर का कुछ हिस्सा खाने के लिये मिल जायेगा सो वह बोला — "अगर इसने तुम्हें काट लिया तो क्या हुआ। इसका काम काटना है यह तो काटेगी ही।"

---

[43] The White Man and Snake – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft25.htm

[44] Translated for the words "White Man". Since South Africa is mostly Black when the Europeans came there they were known as "White Men".

[45] Hyena is a tiger-like animal. See its picture above.

तब वह सॉपिन उसको फिर से काटने के लिये तैयार हुई तो गोरा बोला — "ज़रा रुको। हम किसी और अक्लमन्द से भी पूछ लें ताकि मुझे यह ठीक से पता चल जाये कि तुम ठीक हो या नहीं।"

वे आगे चले तो उनको एक गीदड़ मिला तो गोरे ने उससे भी यही पूछा — "क्या यह ठीक है कि यह सॉपिन मुझे काटे जबकि मैंने इसको एक बड़े से पत्थर के नीचे से निकाल कर इसकी सहायता की है क्योंकि यह वहॉ से तो यह हिल भी नहीं सकती थी।"

गीदड़ कुछ सोच कर बोला — "मुझे तो यह विश्वास ही नहीं हो रहा कि यह सॉपिन किसी ऐसे पत्थर के नीचे भी दबी हो सकती है जिसके नीचे से से यह निकल न सके। जब तक मैं खुद इसको वैसे ही पड़ा न देख लूॅ तब तक मैं विश्वास नहीं कर सकता।

इसलिये चलो वहीं चलो जहॉ तुम्हारा कहना है कि यह उस पत्थर के नीचे पड़ी हुई थी।

सो वे लोग उसी जगह आये जहॉ से पत्थर हटा कर गोरे ने उसको बाहर निकाला था। गीदड़ ने कहा — "अब सॉपिन तुम उसी जगह वैसे ही लेट जाओ जब तुम्हें इस आदमी ने बाहर निकाला था।" सो वह सॉपिन वहॉ वेसे ही लेट गयी जैसे वह पहले लेटी हुई थी।

गोरे ने भी उसको उसी तरह से फिर से पत्थर से ढक दिया जैसे उसने जब वह पत्थर उठाया था जब वह वहॉ लेटी हुई थी। अब वह वहॉ से बिल्कुल भी नहीं हिल पा रही थी।

तो अब वह गोरा फिर से उसके ऊपर से पत्थर हटाना चाह रहा था कि गीदड़ बोला — "अरे यह क्या बेवकूफी कर रहे हो। एक बार पत्थर हटाने की बेवकूफी कर के क्या तुम्हारा अभी मन नहीं भरा। क्या तुम चाहते कि जब तुम उसके ऊपर से पत्थर हटा दो तो वह फिर से बाहर निकल कर फिर से तुम्हें काटने लगे।"

सो उन्होंने सॉपिन को वहॉ उसी पत्थर के नीचे छोड़ा और आगे चले गये। इस तरह गोरे की बेवकूफी से सॉपिन उसको काटने वाली थी और गीदड़ की अक्लमन्दी से वह सॉपिन के काटे से बच गया।

14 बादलों को खाना या हयीना लॅगड़े क्यों[46]

ऊटा[47] बोला — "टॉटे हयीना को जखाल्स[48] ने कई बार धोखा दिया था और टॉटे हयीना हमेशा ही यह भूल जाती थी कि आखिरी बार जखाल्स ने उसे कब धोखा दिया था। इसलिये जब भी वह किसी नयी कहानी के साथ उसके पास आता तो वह उसकी हर बात को सच मान लेती थी।"

कुछ लोग या तो होते ही ऐसे हैं या फिर यह उनकी दया होती है या फिर इसे उनकी बेवकूफी कहो। ऊटा यह नहीं जानता था।

एक दिन जखाल्स और टॉटे हयीना दोनों एक साथ टहल रहे थे कि एक सफेद बादल पीछे से आया और उनके ऊपर से काफी पास से गुजर गया। यह बादल बहुत ही घना बादल था जैसे कि सफेद चर्बी होती है।

---

[46] Cloud-Eating – This tale is given in this book with this title. on the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft27.htm
[The same folktale has been given with this title – "Why Hyena is Lame?" in the Book "Outa Karel's Stories : South African folk-Lore tales", by Sanni Metelerkamp. London, MacMillan and Co. 1914. 15 tales. This book is available at the Web Site https://www.worldoftales.com/South_African_folklore_tales.html .]
But this tale is adopted from the Web Site : http://www.worldoftales.com/African_folktales/African_Folktale_14.html

[47] Outa Karel is the storyteller.

[48] Tante Hyena and Jakhals (means Jackal)

जखाल्स उस पर चढ़ गया और उसके किनारे पर बैठ कर नीचे देखने लगा। फिर उसने उसमें एक टुकड़ा खा लिया। उसके मुँह से निकला — "अरे यह सफेद चर्बी तो बहुत ही स्वादिष्ट है।"

बस उसने उस बादल को उसी तरह से खाना शुरू कर दिया जैसे एक कैटरपिलर पत्ती को खाता है।

उसको इस तरह से खाता देख कर हयीना ने अपने होठ चाटे और ऊपर की तरफ मुँह उठा कर जखाल्स की तरफ देखा। फिर बोली — "थोड़ा सा मुझे भी फेंको न।"

जखाल्स बोला — "ओ मेरी कत्थई बहिन, क्या मैं इतना लालची हूँ कि मैं तुझे ये छोटे छोटे टुकड़े फेंकूँगा? तू ज़रा मेरा इन्तजार कर। तब मैं तुझे यह अपने आप ही खाने दूँगा। पर तू ज़रा मेरे पास को आजा ताकि जब मैं कूदूँ तो तू मुझे पकड़ ले।"

सो हयीना जम कर खड़ी हो गयी और जखाल्स भी उसके ऊपर ऐसे कूदा कि उसके बोझ से वह रेत में धँस सी गयी। हालाँकि जखाल्स बहुत ही धीरे से कूदा था क्योंकि वह ऊपर था पर हयीना की तो जैसे साँस ही रुक गयी और उसका सारा शरीर धूल से ढक गया।

जखाल्स बोला — "पर मैं ज़रा भारी हूँ न। खैर कोई बात नहीं। अब मैं तेरी सहायता करता हूँ।"

उसके बाद हयीना उठी और उसने अपनी धूल झाड़ी। फिर जखाल्स ने उसको उस बादल के ऊपर चढ़ने में सहायता की। वहॉ जा कर वह बादल के ऊपर बैठ गयी और उस बादल में से टुकड़े तोड़ तोड़ कर खाने लगी।

एक टुकड़ा खा कर वह बोली — "अरे यह तो सफेद चर्बी जैसा ही है।"

कुछ समय तक खाने के बाद वह बोली — "ओ मेरे भूरे भाई। बस अब मैं खा चुकी। अब मैं नीचे आना चाहती हूॅ सो जब मैं कूदूॅ तो मुझे पकड़ लेना।"

"हॉ हॉ ओ मेरी कत्थई बहिन क्यों नहीं। आजा देख मैं तुझे कितनी अच्छी तरह से पकड़ता हूॅ। आ कूद।"

कह कर उसने अपनी बॉहें फैला दीं। पर जैसे ही हयीना नीचे कूदी जखाल्स अपनी एक टॉग ऊपर उठाते हुए यह कहते हुए एक तरफ को हट गया — "अरे मेरे तो एक कॉटा चुभ गया। अब मैं क्या करूॅ। अब मैं क्या करूॅ।"

और लो उसकी वह कत्थई बहिन तो नीचे गिर पड़ी।

जैसे ही वह नीचे गिरी तो अपने आपको बचाने के लिये उसने अपनी बॉयी टॉग बाहर की तरफ निकाली पर वह उसके अपने नीचे आ गयी और बस वह तो टूटने वाली ही हो गयी।

वह रेत में एक गठरी सी बन कर पड़ गयी और चिल्लायी — "मेरी तो टॉग ही टूट गयी मेरी तो टॉग ही टूट गयी।"

जखाल्स अपनी तीन टॉगों पर बहुत धीरे धीरे चलता हुआ उसके पास आया। वह कॉटा जो उसको लगा ही नहीं था उसने बताया कि वह उसको बहुत दर्द कर रहा था।

हयीना चिल्लायी — "ओ मेरे भूरे भाई उठने में ज़रा मेरी सहायता करो न। मेरी तो टॉग ही टूट गयी है।"

"और मेरी में तो कॉटा चुभा हुआ है। बेचारी मेरी बहिन। एक बीमार दूसरे बीमार की सहायता कैसे कर सकता है। अब तो हम लोगों के लिये बस यही ठीक है कि हम लोग जिस तरीके से भी हो सके उस तरीके से घर पहुँच जायें।

अच्छा बाई बाई। मैं कल सुबह तुमसे मिलने आऊँगा यह देखने के लिये कि तुम ठीक हो या नहीं।"

और बस वह अपनी तीन टॉगों पर धीरे धीरे कूदता हुआ अपने घर चला गया। जैसे ही वह हयीना की आखों से ओझल हुआ वैसे ही वह बतख बच्चों को अपने रात के खाने लिये खाने के लिये अपने घर दौड़ गया जिन्हें मिसेज़ जखाल्स और उनके बच्चों ने एक बॉध पर से पकड़े थे।

लेकिन वह बेचारी कत्थई बहिन हयीना अपने दर्द को लिये हुए वहीं रेत पर पड़ी रही। उस दिन से वह लॅगड़ी हो गयी क्योंकि उसकी बॉयी टॉग उसकी दॉयी टॉग से छोटी है।[49]

[49] The Hyena, on first starting, appears lame in the hind legs—a fact accounted for by the Hottentots in the foregoing fable.

15 गीदड़, फाख्ता और सारस[50]

कुछ ऐसा कहा जाता है कि एक बार एक गीदड़ एक फाख्ता के पास गया। यह फाख्ता एक पहाड़ की चोटी पर रहती थी। वहॉ पहुँच कर उसने उससे कहा "तुम अपने बच्चों में से एक बच्चा मुझे दे दो।"

फाख्ता बोली —"मैं ऐसा कुछ नहीं करूँगी।"

गीदड़ बोला — "मुझे उसे तुरन्त दो नहीं तो मैं तुम्हारे पास उड़ कर आ जाऊँगा।"

यह सुन कर फाख्ता ने अपना एक बच्चा उसकी तरफ फेंक दिया। फिर एक और दिन गीदड़ उसके पास आया और उससे उसका एक और बच्चा मॉगा। उसने बेचारी ने अपना एक और बच्चा उसको दे दिया। उसको बच्चा देने के बाद वह रो पड़ी।

जब गीदड़ वहॉ से चला गया तो एक सारस[51] वहॉ आया और उससे पूछा — "फाख्ता बहिन क्यों रोती हो?"

फाख्ता बोली — "यह गीदड़ मेरे बच्चों को ले गया है। मैं इसी लिये रोती हूँ।"

---

[50] Jackal, Dove and Heron – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft25.htm

[51] Translated for the word "Heron" – a crane-like bird. See its picture above.

सारस ने पूछा कि वह उसके बच्चे कैसे ले गया तो वह बोली — "जब पहली बार उसने मुझसे मेरा बच्चा माँगा तो मैंने उसे मना कर दिया। इस पर वह बोला कि अगर मैंने उसे अपना बच्चा नहीं दिया तो वह उड़ कर ऊपर आ जायेगा इसलिये मुझे उसे अपना बच्चा दे देना चाहिये। सो मैंने उसे नीचे फेंक दिया।"

सारस बोला — "क्या तुम इतनी बेवकूफ हो कि तुम उस गीदड़ को अपना बच्चा दे दोगी जो उड़ नहीं सकता।" फिर वह उसको अपना कोई और बच्चा न देने की हिदायत दे कर वह वहाँ से चला गया।

गीदड़ फिर वहाँ आया और फाख्ता से कहा — "फाख्ता मुझे अपना बच्चा दे।"

फाख्ता ने उसे बच्चा देने से मना करते हुए कहा कि सारस ने उससे कहा है कि गीदड़ तो उड़ नहीं सकता इसलिये उसे अपना बच्चा मत देना।

गीदड़ बोला "तो मैं उसे पकड़ लूँगा।"

जब सारस नदी पर पानी पीने आया तो गीदड़ ने उससे पूछा — "भाई सारस जब इधर से हवा चलेगी तो तुम किधर खड़े होगे।"

उसने अपनी गर्दन गीदड़ की तरफ घुमायी और बोला — "मैं अपनी गर्दन को एक तरफ झुका कर ऐसे खड़ा होऊँगा।"

गीदड़ ने उससे फिर पूछा — "और जब तूफान आयेगा और बारिश होगी तब तुम कैसे खड़े होगे।"

सारस ने अपनी गर्दन थोड़ी से आगे की तरफ झुकायी और बोला "ऐसे खड़ा होऊँगा।"

जैसे ही सारस ने अपनी गर्दन नीची की तो गीदड़ ने उसकी गर्दन पर मारा और उसकी गर्दन तोड़ दी। उस दिन से सारस की गर्दन ही झुकी हुई है।

16 हाथी और कछुआ[52]

एक बार की बात है दो ताकतों – हाथी और बारिश में झगड़ा हो गया। हाथी बोला — "अगर तुम यह कहती हो कि तुम मुझे पालती हो तो ज़रा मुझे यह तो बताओ कि ऐसा तुम कैसे करती हो।"

बारिश बोली — "अगर तुम यह कहते हो कि मैं तुमको पालती नहीं हूँ तो अगर मैं नहीं आऊँ तो क्या तुम मर नहीं जाओगे।" और ऐसा कह कर बारिश वहाँ से चली गयी।

हाथी बोला — "ओ गिद्ध बहुत सारा गिराओ जिससे ज़ोर की बारिश हो।"

गिद्ध बोला — "मैं बहुत सारा नहीं गिराऊँगा।"

तब हाथी कौए के पास गया और उसने उससे कहा — "बहुत सारा गिराओ जिससे बारिश हो।"

कौआ बोला — "मुझे वे चीज़ें दो जिससे मैं बहुत सारा गिराऊँ।" कौए ने फिर बहुत सारा गिराया जिससे बारिश हो गयी। वह बारिश गड्ढों में जा कर पड़ी पर उनमें से काफी सारे गड्ढे तो जल्दी ही सूख गये पानी का केवल एक गड्ढा ही बचा।

[52] Elephant and Tortoise – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft31.htm

हाथी शिकार के लिये गया तो वहॉ उसको एक कछुआ मिला। हाथी ने कछुए से कहा — "ओ कछुए तुम पानी के गड्ढे में रहो मैं तब तक शिकार कर के आता हूँ।" सो कछुए को अपने पीछे छोड़ कर हाथी शिकार के लिये चला गया।

एक जिराफ वहॉ आया और उसने कछुए से पानी मॉगा — "मुझे थोड़ा पानी दो।" कछुआ बोला — "पानी तो हाथी का है।"

उसके बाद ज़ीब्रा आया तो उसने भी कछुए से पानी मॉगा तो कछुआ बोला कि यह पानी तो हाथी का है।

फिर एक बड़ा हिरन आया उसने भी कछुए से पानी मॉगा तो कछुए ने उससे भी यही कहा कि पानी तो हाथी का है।

फिर एक और हिरन आया। उसने भी कछुए से पानी मॉगा तो कछुए ने उसे भी यही जवाब दिया कि पानी तो हाथी का है।

इस तरह से कई जानवर कछुए के पास पानी मॉगने आये पर कछुए ने सबको एक ही जवाब दिया कि वह पानी तो हाथी का है।

बाद में एक गीदड़ कछुए से पानी मॉगने आया तो कछुए ने उसे भी यही जवाब दिया कि पानी तो हाथी का है।

उसके बाद शेर आया और कछुए से पानी मॉगा तो कछुआ उससे कुछ कहने ही वाला था कि शेर ने उसको पकड़ लिया और उसे बहुत मारा।

फिर शेर ने पानी पिया और दूसरे जानवर भी वहॉ आ कर पानी पीने लगे। जब हाथी शिकार से लौट कर आया तो उसने पूछा — "ओ छोटे कछुए थोड़ा पानी है?"

कछुआ बोला — "जानवर यहॉ आये थे वे पानी पी गये।"

हाथी ने गुस्से से पूछा — "ओ छोटे कछुए मैं तुझे चबाऊॅ या फिर निगल जाऊॅ।"

कछुआ डरता हुआ बोला — "मेहरबानी कर के आप मुझे निगल जाइये अगर आप निगल सकते हों तो।"

सो हाथी उसको पूरा का पूरा ही निगल गया। जब हाथी ने कछुए को निगल लिया तो कछुआ उसके अन्दर पहुॅच गया। वहॉ पहुॅच कर उसने उसका जिगर तिल्ली दिल सब फाड़ डाला।

हाथी चिल्लाया — "ओह कछुए तूने तो मुझे मार ही डाला।"

इस तरह से हाथी तो मर गया कछुआ उसके शरीर के अन्दर से निकल आया और अपने रास्ते चला गया।

17 बबून का फैसला[53]

एक दिन की बात है कि कुछ ऐसा हुआ कि —

एक बार एक चूहे ने एक दर्जी के कपड़े फाड़ डाले तो दर्जी एक बबून के पास गया और उससे बोला — "मैं तेरे पास इसलिये आया हूँ क्योंकि चूहे ने मेरे कपड़े फाड़ दिये हैं। पर वह कहता है कि उसको यह बात मालूम नहीं है और वह बिल्ली को इसका दोषी ठहराता है।

इसी तरह से बिल्ली भी अपने आपको निर्दोष ठहराती है और कहती है कि यह काम कुत्ते ने किया होगा। कुत्ता कहता है कि यह उसका काम नहीं है लकड़ी ने यह काम किया होगा।

लकड़ी आग को दोषी ठहराती है। आग का कहना है कि यह काम उसने नहीं किया बल्कि पानी ने किया होगा। पानी का कहना कि यह काम हाथी ने किया होगा और हाथी कहता है कि यह काम चींटी का है।

इस तरह उन सबमें आपस में झगड़ा हो रहा है। मैं दर्जी तुझसे यह कहने आया हूँ कि तू उन सबको इकट्ठा कर और पता लगा कि यह काम किसका है ताकि मुझे सन्तोष मिल सके।"

[53] The Judgment of Baboon – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft34.htm

जब दर्जी ने यह सब बबून से कहा तो उसने सब जानवरों को इकट्ठा किया तो उन्होंने उससे भी वही सब कहा जो उन्होंने दर्जी से कहा था। हर जानवर एक दूसरे को दोषी बता रहा था।

सो बबून को उनको सजा देने का कोई दूसरा रास्ता नहीं दिखायी दिया सिवाय इसके कि वे आपस में एक दूसरे को ही सजा दे दें।

सो उसने सबसे पहले चूहे से कहा — "चूहे दर्जी को सन्तोष दो।"

चूहे ने कहा कि उसकी कोई गलती नहीं है फिर भी बबून ने बिल्ली से कहा कि वह चूहे को काट ले। बिल्ली ने चूहे को काट लिया।

फिर उसने वही सवाल बिल्ली से पूछा और जब उसने कहा कि यह काम उसका नहीं था तो बबून ने कुत्ते को बुला कर कहा कि वह बिल्ली को काट ले।

इस तरह से बबून ने सभी जानवरों को बुलाया और एक के बाद एक सभी से वही सवाल किया पर सभी ने यही कहा कि वे नहीं जानते कि यह किसने किया था। तब उसने उन सबसे कहा —

लकड़ी तुम कुत्ते को मारो
आग तुम लकड़ी को जलाओ
पानी तुम आग को बुझाओ
हाथी तुम पानी पियो
चींटी तुम हाथी के सबसे कोमल हिस्सों में काटो

उन्होंने सबने ऐसा ही किया और उस दिन के बाद से वे कभी एक दूसरे के साथ मिल कर नहीं बैठते।

चींटी हाथी के सबसे कोमल हिस्सों में काटती है
हाथी पानी पी जाता है
पानी आग बुझा देती है
आग लकड़ी खा जाती है
लकड़ी कुत्ते को मारती है
कुत्ता बिल्ली को काटता है
बिल्ली चूहा खाती है

इस फैसले से दर्जी को बहुत सन्तोष मिला और वह बबून से बोला — "बबून अब मैं सन्तुष्ट हूँ। और अब क्योंकि मुझे सन्तोष मिल गया है इसके लिये मैं तुझे दिल से धन्यवाद देता हूँ। तूने मेरे साथ न्याय किया है तूने मुझे नया कपड़ा दिया है।"

बबून बोला — "आज से मेरा नाम जैन[54] नहीं होगा मेरा नाम बबून होगा।"

उस दिन से बबून अपने चारों हाथों पैरों पर चलता है शायद इसलिये कि उसने उस दिन अपना यह बेवकूफी भरा फैसला सुनाया था तो उसका दो पैरों पर चलने का फायदा उससे छीन लिया गया।

[54] Jan

18 मौत का जन्म[55]

मौत के जन्म की यह कहानी दक्षिण अफ्रीका में बहुत प्रचलित है और कई रूपों में पायी जाती है।

कहानी का पहला रूप

ऐसा कहा जाता है कि एक बार चॉद ने एक कीड़े को आदमियों के पास यह कहने के लिये भेजा — "तुम आदमियों के पास जाओ और उनसे जा कर कहो कि जैसे मैं मरती हूॅ और मरने के बाद फिर ज़िन्दा हो जाती हूॅ इसी तरह से तुम लोग भी मर जाओगे और फिर ज़िन्दा हो जाओगे।"

वह कीड़ा चॉद का यह सन्देश ले कर आदमियों के पास चला। जब वह जा रहा था तो उसे बीच रास्ते में बड़ा खरगोश[56] मिल गया तो बड़े खरगोश ने उस कीड़े से पूछा — "कीड़े भाई तुम कहॉ जा रहे हो?"

कीड़ा बोला — "खरगोश भाई। मुझे चॉद ने अपना एक सन्देश ले कर आदमी के पास भेजा है। उसका कहना है कि जैसे

[55] Origin of Death – Translated from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft43.htm

[56] Translated for the word "Hare". Hare is a rabbit-like animal, but it is a bit bigger than it. See its picture above.

वह मरती है और फिर ज़िन्दा हो जाती है उसी तरह से वे भी पहले मर जायेंगे फिर जिन्दा हो जायेंगे।"

खरगोश बोला — कीड़े भाई। तुम तो ठीक से भाग नहीं पाते हो तो मैं यह सन्देश आदमी तक ले जाता हूँ।" यह कह कर वह तुरन्त ही दौड़ गया।

जब वह आदमी के पास पहुँचा तो वह बोला — "मुझे चॉद ने आप सब लोगों के पास इसलिये भेजा है कि मैं आप सबको उनका यह सन्देश दूँ कि जैसे मैं मर जाती हूँ और मर कर नष्ट हो जाती हूँ उसी तरह तुम लोग भी मरोगे और नष्ट हो जाओगे।"

यह सन्देश दे कर खरगोश चॉद के पास लौटा और आ कर उसे बताया कि वह आदमी से क्या कह कर आया था। चॉद उस पर बहुत गुस्सा हुई और उसने उसको बहुत डॉटा — "तुम्हारी आदमी से वह कहने की हिम्मत ही कैसे हुई जो मैंने तुमसे कहा ही नहीं।"

ऐसा कह कर उसने एक लकड़ी का टुकड़ा लिया और उसकी नाक पर मारा। बस उसी दिन से बड़े खरगोश की नाक फटी हुई है।

इसी कहानी का दूसरा रूप[57]

यही ऊपर वाली कहानी कुछ इस तरह भी कही जाती है कि चॉद मर जाती है पर फिर ज़िन्दा हो जाती है। एक दिन चॉद ने बड़े खरगोश से कहा — "तुम आदमी के पास जाओ और उनसे यह कहना कि "जैसे मैं मरती हूॅ और फिर से ज़िन्दा हो जाती हूॅ उसी तरह से तुम लोग भी मर जाओगे और फिर ज़िन्दा हो जाओगे।"

बड़ा खरगोश आदमी के पास गया और जा कर उनसे बोला "चॉद देवी ने यह सन्देश आप सबके लिये भिजवाया है कि जैसे मैं मर जाती हूॅ और फिर ज़िन्दा नहीं होती वैसे ही तुम लोग भी मर जाओगे और फिर ज़िन्दा नहीं होगे।"

यह सन्देश दे कर जब बड़ा खरगोश चॉद के पास पहुॅचा तो चॉद ने उससे पूछा कि उसने आदमियों से क्या कहा तो बड़ा खरगोश बोला — "मैंने उनसे कहा कि जैसे मैं मर जाती हूॅ और फिर ज़िन्दा नहीं होती तुम भी वैसे ही मर जाओगे और फिर ज़िन्दा नहीं होगे।"

चॉद बोली "क्या? क्या तूने यह कहा?"

कह कर उसने एक डंडी उठायी और उसको बड़े खरगोश के मुॅह पर दे मारी जिससे उसका मुॅह फट गया। वह वहॉ से भाग गया और अभी तक भाग रहा है। तब से ही उसका मुॅह भी फटा हुआ है।

[57] Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft44.htm

इसी कहानी का तीसरा रूप[58]

एक बार चॉद ने बड़े खरगोश को आदमी के नाम यह सन्देश ले कर धरती पर भेजा कि वह आदमियों से जा कर यह कहे कि "जैसे चॉद मरती है और फिर ज़िन्दा हो जाती है उसी तरह लोग भी मर जाने के बाद ज़िन्दा हो जायेंगे।"

पर यह सन्देश इस तरह से देने की बजाय बड़ा खरगोश या तो इसे भूल गया या फिर उसके दिमाग में बदमाशी आ गयी उसने लोगों से कहा कि "जैसे चॉद मरती है और फिर कभी ज़िन्दा नहीं होती उसी तरह से तुम लोग भी जब मर जाओगे तो फिर ज़िन्दा नहीं होगे।

जब बड़ा खरगोश यह सन्देश दे कर चॉद के पास लौटा तो चॉद ने पूछा कि उसने आदमियों से क्या कहा। जब बड़े खरगोश ने उसको वह सन्देश बताया जो उसने आदमियों को दिया था तो चॉद इतना गुस्सा हुई कि उसने बड़े खरगोश का सिर काटने के लिये एक छोटी कुल्हाड़ी उठा ली पर क्योंकि वह छोटी थी तो उसने उसका केवल ऊपर का होठ ही काटा और वह भी बहुत ज़ोर से।

इसी लिये आज हम बड़े खरगोश का ऊपर का होठ कटा पाते हैं। बड़ खरगोश भी इस तरह के व्यवहार से चॉद से बहुत गुस्सा हो गया सो उसने अपना पंजा उठाया और उसका चेहरा खुरच दिया।

[58] This version is taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft45.htm

इसी लिये आज हम चॉद के चेहरे पर बड़े खरगोश के पंजे के खुरचने के निशान पाते हैं जो बड़े खरगोश ने उसके चेहरे पर उस समय डाले थे।

इसी कहानी का जूलू रूप[59]

दक्षिण अफ्रीका की जूलू जनजाति में यह लोक कथा कुछ ऐसे कही जाती है। भगवान आत्माओं की दुनियॉ से ऊपर उठा और उसने शुरू शुरू में आदमी जानवर और बहुत सारी चीज़ें बनायीं।

फिर उसने गिरगिट को बुलवाया और उससे कहा — "जाओ गिरगिट जाओ और लोगों से यह कह कर आओ कि वे मरेंगे नहीं।"

गिरगिट चला गया पर वह बहुत धीरे धीरे चल रहा था। रास्ते का आनन्द लेता जा रहा था। कुछ झाड़ियॉ खाता जा रहा था। जब उसे गये हुए बहुत देर हो गयी तो भगवान ने उसके पीछे पीछे एक छिपकली को भेजा और उससे कहा कि वह जल्दी जाये और लोगों से यह कह कर आये कि लोग मरेंगे।

छिपकली बहुत जल्दी ही यह सन्देश ले कर धरती पर चली गयी। उसने गिरगिट को पीछे छोड़ दिया और उससे पहले ही आदमियों के पास पहुॅच गयी। उसने जा कर उनसे यह कह दिया कि वे लोग तो मरेंगे ही।

[59] Taken from the Web Site : http://www.sacred-texts.com/afr/saft/sft47.htm

19 बद्दुआ वाली बद्दुआ[60]

एक बार एक बुढ़िया एक शादी के घर से अपने घर लौट रही थी। शादी तो खत्म हो चुकी थी तो भी उसका दिमाग पड़ोस के गॉव में होने वाली शादी में ही लगा हुआ था।

इसलिये उसने रास्ते में पड़ा टूटा हुआ बर्तन देखा ही नहीं और वह उससे ठोकर खा कर गिर पड़ी। इससे उसकी टॉग जख्मी हो गयी और उसके हाथ में जो कुछ था वह भी बिखर गया।

वह चिल्ला पड़ी — "यह कौन बेवकूफ है जो अपना कूड़ा यहॉ रास्ते में छोड़ गया है जहॉ भले लोग चलते हैं। उस बेवकूफ को मेरी बद्दुआ लगे।

उसका पहला बच्चा अभी इसी समय गूँगा हो जाये और वह तब तक गूँगा रहे जब तक कोई दूसरा आदमी सड़क पर टूटे बर्तन डालने से भी ज़्यादा बेवकूफी का काम न करे।"

जब उसका गुस्सा खूब अच्छी तरह से निकल गया तो उसने अपना बिखरा हुआ सामान उठाया और अपने घर चल दी।

---

[60] Cursed Curse - a folktale from South Africa. Adapted from the Web Site : http://www.themuralman.com/south_africa/south_africa_potch_tale.html
Collected and retold by Phillip Martin
[My Note: This story is included in Nelson Mandela's Book "Favorite African Stories" also with the title "The Hare and the Spirit". It has been given in my book "Africa Ki Lokpriya Kathayen" with the same title – "Khargosh Aur Aatma" published in Hindi language available from hindifolktales@gmail.com .]

वहीं पास में ही एक पहाड़ी के पास एक लड़की टैम्बे अपने माता पिता के साथ रहती थी।

जिस समय उस स्त्री ने वह शाप दिया उसी समय उसकी मॉ घर में पानी भर कर लाने के लिये पानी का बर्तन ढूँढ रही थी।

जब उसको वह नहीं मिला तो उसने अपने पति से पूछा — "मुझे पानी का बर्तन नहीं दिखायी दे रहा, क्या तुमने पानी का बर्तन देखा है? ऐसा तो नहीं कि कहीं तुम उसको बागीचे में ले गये हो और फिर वहीं छोड़ आये हो?"

पति बोला — "हॉ मैं उसे ले तो गया था पर मुझे याद नहीं पड़ता कि घर लौटने से पहले मैंने उसको अपनी गाड़ी के पीछे रखा या नहीं।"

पत्नी बोली — "ठीक है, अगर तुमने नहीं रखा तो टैम्बे ने देखा होगा। मैं टैम्बे से पूछती हूँ। अरी ओ टैम्बे, क्या तूने पानी का बर्तन देखा है?" पर छोटी टैम्बे की तरफ से कोई जवाब नहीं था।

वह तो आश्चर्यजनक रूप से गूँगी हो चुकी थी। उस खोये हुए पानी के बर्तन के बारे में उसके सारे विचार भी गायब हो चुके थे।

उसकी मॉ चिल्लायी — "यह तो बोल ही नहीं रही है। लगता है किसी ने इसके ऊपर कुछ जादू कर दिया है। पर किसी को हमारी टैम्बे के ऊपर जादू करने की जरूरत ही क्या है?"

टैम्बे के माता पिता टैम्बे को कई डाक्टरों के पास ले गये पर कोई भी उस छोटी बच्ची की चुप्पी न तोड़ सका।

इस तरह साल पर साल बीतते गये और टैम्बे चुप ही रही। वह एक बहुत ही सुन्दर लड़की बन गयी थी पर इससे तो उसके माता पिता की समस्या हल नहीं होती थी। उनकी समझ में यही नहीं आता था कि उनकी इतनी सुन्दर बेटी पर कोई जादू क्यों डाल सकता था।

उसके माता पिता का चिन्तित होना ठीक भी था। बहुत जल्दी ही यह बात चारों तरफ फैल गयी कि एक गॉव में एक सुन्दर जवान लड़की थी जो गूँगी थी।

जैसे जैसे उसके माता पिता अपनी बेटी को बड़ा होता देख रहे थे वैसे वैसे वे अपने पड़ोसियों की ऑखों में एक अजीब सी उत्सुकता भी देख रहे थे। कभी कभी उनको उनकी बेरहम किस्म की फुसफुसाहट भी सुनायी पड़ जाती।

पर उनकी खुशकिस्मती से वहॉ एक नौजवान भी था और वह था एनथू[61] जो इस बद्दुआ के उस पार देख सकता था और वह थी सुन्दर सी दयावान टैम्बे जो कि वह थी। एनथू ने निश्चय कर लिया कि वह इस लड़की के जो कुछ भी कर सकता था करेगा।

[61] Nthu – a name of a South African man

एनथू ने सोचा कि वह पेड़ की आत्मा के पास जायेगा शायद वह उसके लिये कुछ कर सके। हो सकता है कि वह टैम्बे की जबान पर इतने सालों से पड़ा हुआ जादू निकाल फेंके।

और यही उस नौजवान ने किया। जब अँधेरा हो गया और कोई उसको नहीं देख सकता था कि वह क्या कर रहा था एनथू अपने गॉव से निकला और एक बड़े से पवित्र पेड़ के नीचे आ गया।

वहॉ वह उस पेड़ की आत्मा के सामने जमीन पर लेट गया और उससे अपने दिल का हाल कह दिया। उसने उसको उस लड़की के बारे में भी बता दिया।

पर एनथू को यह नहीं मालूम था कि कोई बड़ा खरगोश[62] उस पेड़ में अपना घर बना कर रहता था। उस समय जब एनथू उस पेड़ से अपनी कहानी कह रहा था तो वह बड़ा खरगोश वहॉ सो रहा था।

जैसे ही एनथू ने पेड़ की आत्मा से अपनी बात कही वह बड़ा खरगोश जाग गया।

बड़ा खरगोश इस बात पर बिल्कुल भी गुस्सा नहीं था कि एनथू ने उसको जगा दिया था क्योंकि उसकी कहानी बहुत ही मजेदार

[62] Translated for the word “Hare”. Hare is a kind of rabbit, only a little bigger than it. See its picture above.

थी। वह मुस्कुराया और उसने कुछ अपनी सहायता करने का और कुछ आनन्द लेने का निश्चय किया।

सो वह एक दो बार खॉसा, अपना गला साफ किया और अपनी आवाज भारी कर के बोला — "एनथू, मैंने तुम्हारी प्रार्थना सुनी। अगर मैंने इस लड़की के बारे में तुम्हारी सहायता की तो यह बताओ कि तुम मुझे क्या दोगे?"

एन्थू खुश हो कर बोला — "ओ पेड़ की आत्मा, तुम जो चाहे मुझसे मॉग लो। मैं टैम्बे की खुशी के लिये कुछ भी कर सकता हूॅ।" बड़े खरगोश को इसी जवाब की आशा थी।

बड़े खरगोश ने कुछ सोचा जैसे कि वह कोई बहुत बड़ा प्लान सोच रहा हो फिर बोला — "तुमको मुझे रोज ताजा हरे पत्ते और रसीली बैरी[63] जंगल से ला कर देनी होंगी। यह सब तुम मेरे लिये सुबह सुबह ला कर मेरे पैरों में रख देना।

अगर तुम ऐसा करोगे तो मैं तुम्हारी प्रार्थना पर विचार करूॅगा कि मैं उस लड़की की किस तरह सहायता कर सकता हूॅ।"

एनथू बड़े उत्साह से बोला — "आप विश्वास रखें मैं ऐसा ही करूॅगा।" वह अपनी बात का पक्का था सो वह रोज उस पेड़ की

[63] Berries are small fruits grown on bushes. There are many kinds o berries, such as Raspberries, Strawberries, Blue Berries, Black Berries. See their picture above. We don't have all these berries in India but we have Phaalasaa and Ber and Jharberee Ke Ber etc kind of berries.

आत्मा को ताजा हरे पत्ते और बैरी ला कर देता रहा और खरगोश घर बैठे अपने खाने का आनन्द लेता रहा।

पर कुछ दिन घर बैठे बैठे खाते खाते बड़े खरगोश को कुछ बुरा सा लगने लगा कि वह एनथू के लिये कुछ कर तो रहा नहीं है और बस घर बैठ कर उसका लाया खाना खाये जा रहा है।

यह सोच कर उसने उस लड़की से मिलने का निश्चय किया। बड़ा खरगोश एक बहुत ही होशियार जानवर था सो उसने सोचा कि शायद वह उसके लिये कुछ कर सके सो वह टैम्बे से मिलने चल दिया।

उसको टैम्बे का खेत ढूँढने में कोई परेशानी नहीं हुई क्योंकि उसको मालूम था कि वह कहाँ था क्योंकि उसने वहाँ उस खेत से कई बार सब्जियाँ चुरायीं थीं।

जब वह वहाँ पहुँचा तो उसने देखा कि टैम्बे अपने पिता के खेत पर काम कर रही थी। वह अपने काम में इतनी मग्न थी कि उसने बड़े खरगोश को देखा ही नहीं। बड़े खरगोश को यह बिल्कुल भी अच्छा नहीं लगा कि कोई उसकी तरफ ध्यान न दे।

सो बड़े खरगोश को टैम्बे के पास खुद ही पूछने के लिये जाना पड़ा — "क्या मैं तुम्हारे इन पौधों को लगाने में कुछ सहायता करा सकता हूँ?" पर टैम्बे ने कोई जवाब नहीं दिया। शायद उसने उसकी कोई बात सुनी ही नहीं।

बड़े खरगोश ने सोचा कि अगर उसका काम यही पौधे लगाना है तो अगर मैं ऐसा करूँ तो तब तो वह मुझे जरूर ही देखेगी। सो उसने कुछ पौधे लिये और टैम्बे के पीछे पीछे उनको जमीन में लगाता हुआ चला।

उसने उनको उलटा लगाना शुरू कर दिया यानी उन पौधों की जड़ें ऊपर की तरफ रखीं और पत्ते जमीन के नीचे।

पर टैम्बे ने अभी भी बड़े खरगोश को नहीं देखा था। जब उसने अपनी लाइन खत्म कर ली और वह मुड़ने के लिये खड़ी हुई तब टैम्बे ने देखा कि बड़े खरगोश ने क्या किया था।

उसने उसको घूर कर देखा और उसकी तरफ अपनी मुट्ठी हिला कर बोली — "ओ बेवकूफ यह तुमने क्या किया? तुम क्या सोचते हो कि मेरे पौधों के साथ तुम क्या कर रहे हो?"

यह कहने के साथ ही टैम्बे के चेहरे पर आश्चर्य की एक लहर दौड़ गयी। वह तो बोल रही थी। उसने अपना हल छोड़ दिया और अपने घर भागी – हँसती हुई, चिल्लाती हुई और गाती हुई। अब उसको अपना एनथू ढूँढना था।

बड़े खरगोश ने सोचा — "यह क्या आदमियों जैसा बर्ताव नहीं था कि मेरी इतनी कोशिश के लिये मुझे कोई धन्यवाद भी नहीं? खैर मैं उन पौधों को अब ठीक से लगा देता हूँ। अब मुझे कोई भी मुफ्त का खाना मेरे घर के दरवाजे पर देने नहीं आयेगा।

20 एक आदमी जो कभी झूठ नहीं बोला[64]

एक बार की बात है कि एक गॉव में मम्मद नाम का एक आदमी रहता था। वह कभी झूठ नहीं बोलता था। उस देश में रहने वाले सारे लोग यह बात जानते थे। और केवल उस देश के ही नहीं बल्कि वे लोग भी जानते थे जो उस गॉव से बीस बीस दिन की दूरी पर रहते थे।

राजा ने भी यह बात सुनी तो उसने उसको अपने महल में बुलाया और उससे पूछा — "मम्मद, क्या यह सच है कि तुमने ज़िन्दगी में कभी झूठ नहीं बोला?"

"जी सरकार।"

"और तुम आगे भी झूठ नहीं बोलोगे?"

"हॉ जी।"

राजा बोला — "तो देखो हमेशा सच ही बोलना क्योंकि झूठ बहुत ही चालाक होता है और वह ज़बान पर बहुत जल्दी ही आ बैठता है।" यह सुन कर मम्मद चला गया।

इस बात को काफी दिन बीत गये। राजा ने एक बार फिर मम्मद को बुलवाया। इस बार राजा के पास बहुत बड़ी भीड़ जमा थी। राजा शिकार पर जाने वाला था। राजा ने अपने घोड़े को उस

[64] The Man Who Never Lied - folktale from South Africa. Translated from the Web Site : http://www.worldoftales.com/African_folktales/African_Folktale_2.html

की लगाम से पकड़ा हुआ था। उसका बॉया पैर घोड़े पर चढ़ने के लिये रखा हुआ था।

राजा ने मम्मद से कहा — " मम्मद, मेरे गर्मी वाले मकान में जाओ और रानी से कहना कि मैं दोपहर को खाना उसके साथ खाऊँगा। वह आज बहुत बढ़िया खाना तैयार कर के रखे। और हॉ आज तुम भी मेरे साथ ही खाना खाना।"

मम्मद ने राजा को सिर झुकाया और चला गया। उसके जाने के बाद राजा हॅसा और बोला — "हम आज शिकार पर जायेंगे ही नहीं और देखना आज मम्मद रानी से झूठ बोलेगा। कल उसकी जगह हम लोग हॅसेंगे।"

पर अक्लमन्द मम्मद रानी के पास गया और बोला — "शायद आपको बढ़िया दोपहर का खाना कल बनाना चाहिये, और या शायद कल भी नहीं। क्योंकि हो सकता है कि राजा दोपहर के खाने के लिये आ जायें और हो सकता है कि न आयें।"

रानी ने पूछा — "मुझे यह बताओ मम्मद कि वह आयेंगे या नहीं?"

मम्मद बोला — "रानी जी, जब मैं वहॉ से चला था तब तो राजा साहब का बॉया पैर घोड़े पर चढ़ने के लिये रख था। पर मुझे नहीं मालूम कि मेरे वहॉ से आने के बाद राजा साहब ने अपना दाहिना पैर घोड़े पर चढ़ने के लिये रखा या फिर बॉया पैर जमीन पर रखा।"

उस दिन सबने राजा का इन्तजार किया पर राजा नहीं आया। राजा अगले दिन आया और रानी से बोला — "अक्लमन्द मम्मद जो कभी झूठ नहीं बोलता कल तुमसे झूठ बोल गया।"

तब रानी ने मम्मद के कहे शब्द राजा को बताये तो राजा को लगा कि अक्लमन्द आदमी कभी झूठ नहीं बोलता। वह वही कहता है जो वह अपनी ऑखों से देखता है।

21 दो भाइयों की कहानी[65]

बड़े भाई ने छोटे भाई से कहा — "इन बर्तनों से दूर रहो, उन्हें छूना भी मत।"

छोटा भाई बोला — "यह तुम क्या कह रहे हो भैया?"

बड़ा भाई बोला — "मुझे इन बर्तनों में कुछ ऐसा लगता है जो मुझे अच्छा नहीं लग रहा है।

ये सारे के सारे बर्तन उलटे क्यों रखे हुए हैं? मुझे कुछ ऐसा लगता है जैसे इनमें कुछ जादू हो। अच्छा तो यही होगा कि हम इन्हें यहाँ ऐसे ही छोड़ दें और यहाँ से निकल चलें।"

छोटा भाई बोला — "देखो भैया, तुम मुझसे बड़े जरूर हो पर मैं तुमसे ज़्यादा अक्लमन्द हूँ। हम लोग यहाँ सुबह से शिकार खेलने के लिये आये हुए हैं और हमको एक भी शिकार अपनी मरजी का नहीं मिला।

और आखीर में अब हमको ये बर्तन मिले हैं तो अब तुम कहते हो कि इनको छूना नहीं है। ये जादू के हो सकते हैं तो मैं भी आज

[65] A Tale of Two Brothers – a folktale from South Africa. Translated from the Web Site : http://www.themuralman.com/south_africa/south_africa_thakaneng_tale.html
Collected and retold by Phillip Martin

इनका कुछ जादू इस्तेमाल कर लूँ।" इतना कह कर छोटा भाई उन बर्तनों की कतार की तरफ चला गया।

उसने धीरे से एक बर्तन उठाया और सीधा कर के उसमें झाँका। उसके बड़े भाई ने जो कुछ दूरी पर खड़ा था उससे पूछा — क्या है उसमें? तुम्हें उसके अन्दर कुछ दिखायी दे रहा है? क्या दिखायी दे रहा है? क्या उसके अन्दर कुछ है?"

छोटा भाई हँसते हुए बोला — "कुछ भी नहीं भैया। इस बर्तन में तो कुछ भी नहीं है। यह तो खाली है। आओ और आ कर इन सब बर्तनों को सीधा करने में मेरी सहायता करो न। फिर देखते कि इनमें क्या है।"

पर बड़ा भाई वहीं खड़ा रहा और उसने उसके पास आने से भी मना कर दिया। छोटे भाई ने दूसरा बर्तन सीधा किया और बोला — "इस दूसरे बर्तन में भी कुछ नहीं है। आओ न बड़े भैया इन बर्तनों का भेद खोलने में मेरी सहायता करो न।"

फिर भी बड़ा भाई वहीं का वहीं खड़ा रहा सो छोटा भाई ही उन सब बर्तनों को सीधा करने में लगा रहा पर किसी भी बर्तन में उसे कुछ नहीं मिला।

पर जैसे ही उसने आखिरी बर्तन सीधा किया तो उसके मुँह से एक चीख निकल गयी। वह चीख उसकी इसलिये निकली थी क्योंकि उसमें उसने एक छोटी सी बुढ़िया को बैठे देखा।

वह बुढ़िया उस छोटे भाई से बिना एक भी शब्द बोले उस बर्तन से बाहर निकल आयी। सच तो यह था कि उसने उसको बिल्कुल ही नहीं देखा था क्योंकि वह तो केवल बड़े भाई की तरफ ही देख रही थी।

उसने अपनी झुर्री पड़ी एक उँगली अपनी नाक पर रखी और हँसते हुए बोली — "तुम वहाँ उधर ऐसे क्यों खड़े हो जैसे तुमने कोई भूत देख लिया हो।

मैं तो बस एक बुढ़िया हूँ और मैं तुमको कोई नुकसान भी नहीं पहुँचा सकती। अब अगर तुम मेरे पीछे पीछे आओ तो मैं तुमको वह दिखाऊँगी जिस पर तुम्हारा ध्यान जाना चाहिये।"

पर वह बड़ा भाई अभी भी वहाँ से नहीं हिला। वह तो उस बुढ़िया को देख कर इतना डर गया था कि वह अपनी जगह से एक कदम भी उस बुढ़िया की तरफ बढ़ाने को तैयार नहीं था।

बुढ़िया हँसी और बोली — "बेवकूफ लड़का। कोई बात नहीं, मत आओ, इसमें तुम्हारा ही नुकसान है।"

उसके बाद उसकी निगाह इधर उधर गयी तो उसने उसके छोटे भाई को खड़े देखा तो वह उससे बोली — "तुम भी अपने भाई की तरह डरपोक हो या फिर कुछ साहसी काम करने के लिये तैयार हो?"

छोटे भाई को दोबारा कहने की जरूरत नहीं थी वह तो किसी भी जगह जाने को तैयार था जहॉ भी वह बुढ़िया उसको ले जाती। सो वह उस बुढ़िया के पीछे पीछे चल दिया।

बुढ़िया उसको जंगल में दूर ले गयी जहॉ आदमी लोग शायद ही कभी जाते हों। वहॉ जा कर उसने एक बड़े से पेड़ की तरफ इशारा किया और बोली — "बेटे, यहॉ है तुम्हारी यह साहसी यात्रा का फल। लो यह कुल्हाड़ी लो और यह पेड़ काट दो।"

वह लड़का बोला — "पर हम तो यहॉ बीच जंगल में खड़े हैं जब यह कट जायेगा तो हम इसका करेंगे क्या?"

बुढ़िया ने पूछा — "क्या तुम यहॉ खड़े हो कर मेरे साथ बहस करना चाह रहे हो या फिर अपनी उस साहसी यात्रा में हिस्सा लेने आये हो जो तुम्हारे लिये मेरे दिमाग में है?"

वह लड़का अभी भी नहीं सोच पा रहा था कि वह क्या कर रहा है पर फिर भी उसने उस बुढ़िया के हाथ से कुल्हाड़ी ले ली और उसका बताया पेड़ काटने लगा।

उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब जैसे ही उसने अपनी कुल्हाड़ी पहली बार उस पेड़ में मारी तो उसमें से एक बैल निकल पड़ा।

उसके आश्चर्य का और भी ठिकाना न रहा जब कुल्हाड़ी की हर मार पर उस पेड़ में से कोई न कोई जानवर बाहर आता रहा।

जब तक वह सारा पेड़ काट कर चुका तब तक उसके चारों तरफ बहुत सारे बैल, गाय, भेड़, बकरियॉ इकट्ठे हो गये थे।

वह बुढ़िया बोली — "लो अब ये सारे जानवर तुम्हारे हैं। तुमको मुझे आज खुश करने के लिये बहुत बहुत धन्यवाद। अब तुम अपने रास्ते चले जाओ और इससे पहले कि देर हो तुम इन सबको अपने घर ले जाओ।"

ज़िन्दगी में पहली बार उस लड़के को बोलने के लिये कोई शब्द नहीं मिल रहे थे। कुछ पल बाद उसको ध्यान आया तो उसने इस भेंट के लिये उस बुढ़िया को बहुत बहुत धन्यवाद दिया और बुढ़िया को उसी जंगल में छोड़ कर अपने भाई की तरफ चल दिया।

रास्ते में उसने अपना सिर इधर उधर हिलाया और अपने आप ही बुड़बुड़ाया — "इस कहानी पर तो कोई विश्वास ही नहीं करेगा। क्योंकि जब मुझे ही विश्वास नहीं हो रहा तो मैं किसी और के बारे में क्या कहूँ।"

और सच तो यह था कि बहुत देर तक तो उसको खुद को ही इस घटना पर विश्वास नहीं हो रहा था पर यह घटना तो घट चुकी थी इसलिये अब शक की उसमें कोई गुंजायश भी नहीं थी सो वह अपने सारे जानवर ले कर अपने भाई की तरफ चल दिया जहॉ उसका बड़ा भाई उसका इन्तजार कर रहा था।

भाई को देखते ही वह बोला — "देखो भैया, उस बुढ़िया ने मुझे कितने सारे जानवर दिये। क्या तुमको नहीं लगता कि तुमको

भी इतना बहादुर होना चाहिये था कि उस बुढ़िया के कहने पर तुम उसके साथ चले जाते।"

उसके बाद छोटे भाई ने उसको सब कुछ बताया कि वहॉ क्या हुआ था और फिर वे दोनों घर की तरफ चल दिये। रास्ता लम्बा था और गर्मी बहुत थी। दोनों भाई और जानवर सभी प्यासे थे।

छोटे भाई ने कहा — "हम लोग इतने अच्छे जानवरों को इस गर्मी में प्यासे नहीं मरने दे सकते।"

बड़ा भाई बोला — "यहॉ कहीं आस पास में पानी होना चाहिये। हमको पानी के लिये अपने ऑख और कान खुले रखने चाहिये।"

कुछ देर बाद ही वे पहाड़ी की एक ढलान पर पहुॅचे तो बड़े भाई को लगा कि उसने कहीं पानी बहने की आवाज सुनी।

उसने उस पहाड़ी के नीचे झॉका तो खुशी से चिल्ला पड़ा — "पानी। वह रहा पानी। तुम एक काम करो। तुम मेरी कमर में एक रस्सी बॉध दो और मुझे नीचे उतार दो। जब मैं पानी पी लूॅगा तो मैं तुम्हारी कमर में रस्सी बॉध कर तुम्हें नीचे उतार दूॅगा फिर तुम पानी पी लेना।"

छोटे भाई ने यही किया और थोड़ी ही देर में बड़ा भाई पानी पी कर ऊपर आ गया।

फिर छोटा भाई बोला — "अब मेरी बारी है। काश मैं उड़ कर नीचे जा सकता। मुझे इतनी ज़ोर की प्यास लगी है कि मुझसे तो इन्तज़ार ही नहीं हो रहा।"

वह पानी पीने के लिये इतनी जल्दी में था कि उसने देखा ही नहीं कि उसका बड़ा भाई एक बहुत ही चालाकी वाली हॅसी हॅस रहा था।

बड़े भाई ने रस्सी बॉध कर उसको पहाड़ी के नीचे उतार दिया। पर जैसे ही उसका छोटा भाई नीचे पहुॅचा उसने वह रस्सी भी पहाड़ी के नीचे फेंक दी।

उसने मुस्कुराते हुए कहा — "अब कोई तरीका नहीं है कि वह इस पहाड़ी पर चढ़ कर आ सके। अब वह वहीं मर जायेगा और फिर ये सारे जानवर मेरे हो जायेंगे।" यह कह कर वह उन सब जानवरों को ले कर घर की तरफ चल दिया।

गॉव के लोगों ने जब इस भाई को इतने सारे जानवरों के साथ आते देखा तो वे बहुत खुश हुए। उसने खुशी से लोगों को बताया कि वे सब जानवर उसको एक बुढ़िया ने दिये थे। और उसको तो इनको गिनने का भी समय नहीं मिला कि ये हैं कितने।

पर उसकी मॉ खुश नहीं थी। उसने सारे जानवरों के झुंड की तरफ देखा। उस झुंड में वह अपने छोटे बेटे को ढूॅढ रही थी। जब उसको अपना छोटा बेटा नहीं दिखायी दिया तो उसने पूछा — "तुम्हारा भाई कहॉ है बेटे?"

बड़े भाई ने झूठ बोला — "अरे क्या हुआ उसको? वह यहाँ नहीं है क्या? मैने उसको दोपहर के बाद नहीं देखा है। वह कह रहा था कि वह थक गया था और घर वापस आना चाहता था। अगर वह वहाँ होता तो इन जानवरों को लाने में वह मेरी सहायता कर सकता था।"

पिता ने कहा — "लेकिन शिकार से तो वह थकता नहीं।"

माँ आगे बोली — "तो अब तक तो उसको घर आ जाना चाहिये था। रात होने वाली है।"

छोटा भाई घर नहीं आया। रात भर उसकी माँ कान लगाये सुनती रही कि कभी उसके पैरों की आवाज सुनायी पड़ जाये।

सुबह उठते ही उसने फिर चारों तरफ देखा। उसने कान लगा कर उसके आने की आवाज भी सुननी चाही पर वहाँ उसके पैरों की आवाज तो उसको सुनायी नहीं दी बस एक हनी चिड़िया[66] गा रही थी जो वहाँ कभी नहीं गाती थी।

उसने सोचा कि यह तो अच्छा शकुन है अगर गाँव के लोग इस चिड़िया के गाने के पीछे पीछे जा सकें तो वे मधुमक्खी के छत्ते तक पहुँच जायेंगे।

गाँव के कई सारे लोग और उन दोनों भाइयों का पिता भी उस चिड़िया के गाने के पीछे पीछे चलते गये। वैसे मधुमक्खी के छत्ते

[66] Honey bird – a kind of small bird which always follows beehives for honey. See its picture above.

को पाने में ज़्यादा समय नहीं लगता था पर आज का दिन रोज जैसा नहीं था।

वह हनी चिड़िया उन सबको मैदानों को पार कराती हुई एक गहरे जंगल में ले गयी। चिड़िया और उसके पीछे जाने वाले लोगों ने बहुत कम देर के लिये आराम किया था।

एक शिकारी बोला — "काफी देर हो गयी हमको इस चिड़िया के पीछे चलते चलते। अब इसके पीछे और नहीं चला जाता। लगता है यहाँ शहद नहीं मिलेगा। मैं तो बहुत थक गया हूँ मैं घर जाना चाहता हूँ।"

और तभी एक बहुत ही अजीब सी बात हुई। वह छोटी चिड़िया इतनी ज़ोर से बोली जितनी ज़ोर से बोलते हुए पहले उसे कभी किसी ने नहीं सुना था। फिर उसने बहुत ज़ोर से अपने पंख फड़फड़ाये और आदमियों के चारों तरफ दौड़ गयी।

शिकारी बोला — "मैंने ऐसा तो पहले कभी नहीं देखा।"

पिता बोला — "यह तो ऐसा लगता है जैसे इसने तुम्हारी बात समझ ली हो और तुम्हारा इरादा बदलने वाली हो। मेरा ख्याल है कि हम लोगों को अभी इसके पीछे अभी और चलना ही चाहिये।"

सो वे सब फिर से उस चिड़िया के पीछे पीछे चल दिये। वह उन सबको एक ऐसे पहाड़ के ऊपर ले आयी जिसे किसी ने भी पहले कभी नहीं देखा था।

फिर वह चिड़िया ऊपर नीचे उड़ कर उन सबको उस पहाड़ के नीचे देखने के लिये इशारा करती रही।

पिता ने नीचे झॉक कर देखा तो खुशी से चिल्ला पड़ा — "मेरा बेटा। यह चिड़िया हमें मेरे बेटे तक ले आयी है और अब उसके पैरों के पास बैठी है।"

गॉव वालों ने तुरन्त ही वहॉ उगी हुई बेलों से एक रस्सी बनायी और उसे नीचे डाल कर उस लड़के को ऊपर खींच लिया। उसके बाद तो बड़े भाई के बारे में सब सच पता चल गया।

वह शिकारी बोला — "उस लड़के को उसके इस काम की सजा मिलनी ही चाहिये। हमारे गॉव में इस तरह का लालच सहन नहीं किया जा सकता।" सारे गॉव वाले और उस लड़के के पिता ने इस बात में हॉ में हॉ मिलायी।

पर बड़े लड़के को कोई सजा नहीं मिली क्योंकि किसी तरह से उसे पता चल गया कि वह हनी चिड़िया उसके भाई को बचाने के लिये ही वहॉ आयी थी।

सो इससे पहले कि वे गॉव वाले घर लौटते वह वहॉ से हमेशा के लिये चला गया और फिर कभी वापस लौट कर नहीं आया।

छोटे भाई के जानवर खूब बढ़ते रहे और कुछ समय में ही वह एक बहुत ही अमीर आदमी बन गया। इससे वह अपने माता पिता की उनकी बूढ़ी उमर में देखभाल करने लायक हो गया। वह हमेशा उनके लिये ताजा शहद का इन्तजाम रखता था।

22 आदमी और सॉप[67]

बहुत पहले की बात है कि एक बार एक आदमी सड़क पर जा रहा था कि जाते जाते उसको एक सॉप दिखायी दिया जो एक बड़े से पत्थर के नीचे फॅसा पड़ा था जो उसके ऊपर गिर पड़ा था।

सॉप ने आदमी से प्रार्थना की — "मेहरबानी कर के मेरी सहायता करो। यह बड़ा पत्थर मेरे ऊपर गिर पड़ा है। इसकी वजह से मैं हिल भी नहीं सकता।

सूरज भी बहुत गर्म है और उसकी गर्मी मुझे मारे डाल रही है। अगर तुम मेरी सहायता नहीं करोगे तो मैं मर जाऊॅगा।"

आदमी बोला — "अगर मैं तुम्हारे ऊपर से यह पत्थर हटाऊॅगा तो तुम मुझे काट लोगे तब तुम्हारी बजाय मैं मर जाऊॅगा।"

सॉप ने पूछा — "मैं उस आदमी को नुकसान क्यों पहुॅचाऊॅगा जो मेरी सहायता करेगा। इसके अलावा मैं इतना कमजोर हूॅ कि मुझ में केवल इतनी ही ताकत है कि इस घटना से ठीक होने के लिये मैं अपने घर तक रेंगता हुआ चला जाऊॅ।"

वह आदमी बेचारा बहुत ही भला और दयालु आदमी था वह किसी को दुखी नहीं देख सकता था चाहे वह सॉप ही क्यों न हो।

---

[67] The Man and the Snake – a folktale from South Africa, Africa. Translated from the Web Site : http://www.mikelockett.com/stories.php?action=view&id=114
Retold and written by Mike Lockett.
[My Note: This story seems to be the same with a slight difference made in retelling as the story No 13 given in this book "The White Man and the Snake"]

सो उसने सॉप के ऊपर से वह बड़ा पत्थर हटा दिया। पर जैसे ही उस आदमी ने वह पत्थर हटाया सॉप ने अपना सिर ऊपर उठाया और अपना मुँह खोल कर बोला — "अब तुम मेरे काटने के लिये तैयार हो जाओ।"

आदमी बोला — "यह तो ठीक नहीं है। तुमने तो मुझे न काटने का वायदा किया था अगर मैंने तुम्हारी सहायता की तो।"

सॉप बोला — "जब तुमने मुझे देखा था तो तुम जानते थे मैं एक सॉप था। तुम यह भी जानते थे कि सॉप काटते हैं। तुमने यह कहा भी था कि अगर तुमने मुझे आजाद कर दिया तो मैं तुमको काट लूँगा। तुम बिल्कुल ठीक थे। अब तुम मेरे काटने के लिये तैयार हो जाओ बस।"

आदमी बोला — "ठहरो ठहरो, यह सब ठीक नहीं है।"

सॉप बोला — "तो फिर यह कौन बतायेगा कि ठीक क्या है?"

आदमी बोला — "कम से कम हम किसी और जानवर से यह पूछ सकते हैं कि तुम्हारा मुझे काटना ठीक है या नहीं।"

सॉप बोला — "ठीक है तुम पूछना चाहते हो तो पूछ सकते हो पर मैं जानता हूँ कि दूसरे लोग भी मुझ ही से राजी होंगे।"

सो पहले वे लोग हयीना[68] के पास गये। आदमी ने हयीना ने पूछा — "क्या सॉप के लिये यह ठीक है

[68] Hyena – a tiger-like animal. See his picture above.

कि वह मुझे काटे जबकि मैंने एक बड़ा पत्थर उसके ऊपर से हटा कर उसकी जान बचायी है?"

हयीना ने सोचा कि जब आदमी ने मेरे साथ कभी भी ठीक से बर्ताव नहीं किया तो सॉप भी उसके साथ ठीक से बर्ताव क्यों करे?

इसके अलावा उसने सोचा कि जब सॉप उस आदमी को काट लेगा और वह मर जायेगा तो उसको भी आदमी खाने के लिये मिल जायेगा। सो उसने आदमी से कहा कि सॉप ठीक कह रहा था।

सॉप ने उस आदमी को काटने के लिये अपना सिर उठाया कि आदमी फिर बोला — "थोड़ा और इन्तजार करो मैं एक और जानवर से पूछ लूँ।"

सो वे आगे चले तो उनको एक खरगोश मिला। सॉप ने खरगोश की तरफ देख कर घूरा और बोला — "क्या मेरे लिये यह ठीक है कि मैं आदमी को उसके मेरे ऊपर से पत्थर हटाने के बाद काटूँ?"

खरगोश जानता था कि अगर वह सॉप की तरफ से नहीं बोला तो सॉप उसको काट लेगा इसलिये वह बोला — "आदमी ने मेरी कभी कोई सहायता नहीं की तो मैं उसकी सहायता क्यों करूँ□सो यह ठीक है कि तुम आदमी को काट लो।"

सो सॉप ने एक बार फिर आदमी को काटने के लिये अपना सिर उठाया। आदमी ने नाउम्मीदी से कहा — "ठीक है इससे पहले

कि तुम मुझे काटो हम एक जानवर को और देख लें। मेरे ऊपर मेहरबानी करो।"

सॉप राजी हो गया। उसी समय एक गीदड़ उधर से गुजरा। आदमी ने उस गीदड़ से पूछा — "क्या सॉप के लिये यह ठीक है कि उसके ऊपर से पत्थर हटा कर उसकी जान बचाने के बदले में वह मुझे काटे?"

गीदड़ बोला — "मुझे तो यह विश्वास ही नहीं हो रहा कि सॉप किसी ऐसे पत्थर के नीचे आ सकता है जिसको वह हटा कर न निकल सकता हो। जब तक मैं अपनी ऑखों से न देख लूँ मैं इस बात पर विश्वास कर ही नहीं सकता। तुम मुझे वह जगह दिखाओ जहॉ यह घटना हुई थी।"

सो सब लोग वहॉ गये जहॉ सॉप पत्थर के नीचे बैठा था। वहॉ पहुँच कर गीदड़ ने सॉप से कहा — "सॉप, अब तुम लेट जाओ और मुझे देखने दो कि वह पत्थर तुम्हारे ऊपर कैसे रखा था।"

सॉप एक जगह लेट गया और आदमी ने उसके ऊपर वह पत्थर रख दिया जो उसने पहले हटाया था। गीदड़ ने पूछा — "क्या आदमी ने तुमको इसी हालत में पाया था?"

आदमी और सॉप दोनों एक साथ बोले — "हॉ।"

आदमी फिर वह पत्थर हटाने के लिये आगे बढ़ा तो गीदड़ बोला — "तुम बिल्कुल ही बेवकूफ हो क्या? सॉप के ऊपर से पत्थर नहीं हटाओ। वह तुमको काटना चाहता था और तुम उसको बचाना

चाहते हो? अगर तुम यह पत्थर हटा दोगे तो वह तुमको फिर से काट लेगा। चलो यहॉ से चलें। यह यहीं ठीक है।"

आदमी और गीदड़ सॉप को वहीं पत्थर के नीचे छोड़ कर चले गये। इस तरह गीदड़ ने आदमी की जान बचायी।

23 शेर और बीटिल[69]

शेर को अपने ऊपर बहुत घमंड था। वह अपने आपको सारे जानवरों का राजा कहता था। वह जंगल के सावन्ना में इधर उधर घूमना बहुत पसन्द करता था।

जब कभी वह कोई जिराफ देखता या फिर कोई हयीना देखता या फिर कोई हाथी या हिरन या बन्दर देखता तो उनको यह दिखाने के लिये कि वह जंगल का एक बहुत ही मुख्य जानवर है कभी वह गर्जता तो कभी वह गुर्राता।

जब वह गरज कर बोलता — "मैं तुम्हारा राजा हूँ।" तो दूसरे जानवर उसको सिर झुकाते।

एक दिन एक बार शेर ने झील के पानी में अपनी परछाईं देखी तो उसके मुँह से निकला — "अरे वाह मैं तो कितना सुन्दर और कितना भला प्राणी हूँ।"

कह कर शेर झील के सामने बहुत देर तक पोज़ बना कर खड़ा रहा और अपनी बड़ाई करता रहा। पर वह अपने आपको दूसरे जानवरों को यह साबित करने के लिये कि वह उनका राजा है और भी बहुत कुछ करना चाह रहा था।

[69] The Lion and the Beetle – a folktale from South Africa, Africa. Translated from the Web Site : http://teacher.worldstories.co.uk/book/384/preview

सो शेर ने अपने बहुत बढ़िया वाले कपड़े पहने अपना रत्नों जड़ा ताज पहना अपने सारे सोने और चॉदी के मैडल लगाये। उसके बढ़िया वाले कपड़े बहुत भारी थे पर वे उसको शानदार और ताकतवर दिखा रहे थे।

यह सब पहन कर वह खुशी से चिल्लाया — "मैं तुम्हारा राजा हूॅ। मैं तुम्हारा राजा हूॅ।"

इस तरह शेर ने जंगल के सारे जानवरों यानी अपनी सारी प्रजा को यह सन्देश भेज दिया – जिराफ को हयीना को हाथी को हिरन को बन्दर को।

उसने उन जानवरों को भी यह सन्देश भेज दिया जो जंगल में या जंगल के सावन्ना में रहते थे कि वे सब उसके महल के सामने एक मीटिंग के लिये हाजिर हों। जहॉ वे सब उसकी उन बढ़िया कपड़ों और गहनों में बड़ाई कर सकें।

सो शेर को देखने के लिये जिराफ आया हयीना आया हाथी आया हिरन आया बन्दर आया।

और भी बहुत सारे जानवर उसको देखने आये – काला सफेद कोट पहनने वाले ज़ीब्रा से ले कर छोटी सी बीटिल[70] भी आयी जो इतनी छोटी थी कि उसको सड़क के किनारे चलना पड़ रहा था ताकि बड़े जानवर उस पर अपना पैर न रख सकें।

[70] Beetles are of many kinds. Here the picture of a very common type of beetle is given above.

"मैं तो बहुत छोटी हूँ बहुत ही छोटी। लोग मुझे देखने के लिये नीचे देखते तो हैं पर फिर भी मुझे देख नहीं पाते।" वह सड़क के किनारे लम्बी घास में हो कर चलती जा रही थी और यह गाती जा रही थी। "मैं तो बहुत छोटी हूँ बहुत ही छोटी। पर अन्दर में इतनी बड़ी हूँ जितना बड़ा कि एक पेड़।"

जब जानवर शेर के महल के सामने इकट्ठा हो गये तो हाथी ने बहुत ज़ोर से बिगुल बजाया और शेर अपनी पूरी शानोशौकत से अपने महल से बाहर निकला। सारे जानवरों ने उसको सिर झुकाया।

वह गरजा — "मैं तुम्हारा राजा हूँ। मैं तुम्हारा राजा हूँ।"

और जानवरों के साथ साथ शेर ने उस छोटी सी बीटिल को भी देखा जो सड़क के किनारे अकेली खड़ी थी। वह अभी भी गा रही थी – "मैं तो बहुत छोटी हूँ बहुत ही छोटी। लोग नीचे की तरफ देखते हैं पर मुझे देख नहीं सकते। पर अन्दर मैं इतनी बड़ी हूँ जितना कि एक पेड़।"

शेर बोला — "ओ बीटिल मेरे सामने झुक।"

बीटिल बोली — "योर मैजेस्टी मुझे मालूम है कि मैं बहुत छोटी हूँ पर अगर आप मुझे बहुत पास से देखें तो आप देखेंगे कि मैं तो पहले से ही बहुत झुकी हुई हूँ।"

शेर उसके ऊपर झुका और उस छोटी सी बीटिल को देखा। उसके शानदार कपड़े उसका रत्न जड़ा ताज और उसके बहुत सारे

सोने चॉदी के मैडल ने उसको ऊपर से ले कर नीचे तक इतना भारी बना दिया था कि जब वह उस छोटी सी बीटिल के ऊपर झुका तो वह एक गोला सा बन गया।

इससे शेर अपना सन्तुलन खो बैठा और गिर गया। उसका रत्न जड़ा ताज उसके सिर से निकल कर दूर जा पड़ा और शेर वहीं पास के एक कीचड़ के गड्ढे मे गिर गया।

जब जानवरों ने शेर को उस कीचड़ के गड्ढे में डूबे देखा तो सारे जानवर हॅस पड़े। शेर बेचारा उस गड्ढे में से निकलने की कोशिश कर रहा था पर उसको वहॉ से निकलने में कितनी मुश्किल हो रही थी। सो शेर तो सबसे ताकतवर जानवर नहीं था न।

24 चोर कौन था[71]

चोरी की यह लोक कथा अफ्रीका के दक्षिण अफ्रीका देश की लोक कथाओं से ली गयी है। तुम्हें पिछली कहानी "बादलों को खाना" याद होगी जिसमें गीदड़ ने हयीना की टॉग तोड़ दी थी। अब उसके आगे की कहानी सुनो।

ऊटा[72] ने अपनी कहानी कहनी शुरू की — "हूँ। सो जखाल्स[73] बस ऐसा ही था। वह बस ऐसा ही दिखाता था जैसे जो कुछ उसने किया हो वह वह सब कुछ भूल गया हो और साथ में यह भी कि दूसरे लोग भी उसे भूल गये हों।"

यह कह कर ऊटा ने अपने अँगूठे और अपनी पहली उँगली में दबी हुई सुँघनी सूँघी और बड़ा आनन्द ले कर दो तीन बार छींका और फिर कहना शुरू किया —

"जब जखाल्स को लगा कि हयीना अब ठीक हो गयी होगी तब वह उससे मिलने गया और उससे बोला — "यहाँ तुम्हारे घर में तो बहुत ही घुट हो रहा है। और यहाँ तो खाना भी कम है।

---

[71] Who Was the Thief? – a folktale from South Africa, Africa. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/African_folktales/African_Folktale_15.html
[This folktale has been taken from the Book "Outa Karel's Stories : South African folk-Lore tales", by Sanni Metelerkamp. London, MacMillan and Co. 1914. 15 tales. And this book is available at the Web Site https://www.worldoftales.com/South_African_folklore_tales.html .]

[72] Outa Karel is the storyteller.

[73] Jakhals is the word for Jackal

सो मैं एक किसान के पास नौकरी करने जाता हूँ। वह मुझे बहुत सारा खाना देगा। जब मैं खाना खा कर मोटा हो जाऊँगा तब मैं घर वापस लौट कर आता हूँ। तो ओ मेरी कत्थई बहिन क्या तुम भी मेरे साथ चलोगी?"

हयीना ने जब बढ़िया खाने का नाम सुना तो उसने अपने होठ चाटे। उसको लगा कि यह तो बहुत अच्छा प्लान है सो वह उसके साथ चल दी।

दोनों एक खेत पर पहुँचे। वहाँ पहुँच कर जखाल्स ने उसके मालिक किसान से इतनी अच्छे तरीके से बात की कि किसान ने दोनों को अपने पास काम करने के लिये रख लिया।

ओह वह कितनी सुन्दर जगह थी। वहाँ तो बहुत सारे मुर्गे थे छोटी छोटी बतखें थीं अफ्रीका की भेड़ थीं जिनकी बहुत मोटी मोटी पूँछ थीं जिनको साबुन और मोमबत्ती बनाने के लिये पिघलाया जा सकता था। और अंडे थे कबूतर थे।

यानी कि वे सब चीज़ें थीं जो जखाल्स को पसन्द थीं। उसका पेट कहने लगा कि यहाँ तो उसका समय बहुत अच्छा बीतेगा।

दिन में जखाल्स इधर उधर झाँकता फिरता, कभी इस कोने में कभी उस कोने में। एक बार उसको बढ़िया चर्बी मिल गयी जो किसान ने भेड़ों की पूँछ को पिघला कर रखी थी।

आधी रात को जब सारे लोग सो रहे थे तो जखाल्स उठा और इस तरह से दबे पैरों वहॉ गया जहॉ वह चर्बी रखी थी जैसे कि साया जमीन पर जाता है।

वहॉ से उसने एक चर्बी का एक बड़ा सा टुकड़ा लिया। उसमें से कुछ चर्बी उसने अपनी सोती हुई कत्थई बहिन की पूँछ पर मल दी और बाकी बची हुई वह खुद खा गया। खा कर वह अपने वैगन वाले घर में जा कर सो गया।

सुबह सवेरे जब किसान अपनी गायें दुहने गया तो उसको वहॉ चर्बी कहीं दिखायी नहीं दी। वह बोला — "अरे मेरी सारी चर्बी कहॉ गयी। यह जरूर उस इधर उधर घूमने वाले जखाल्स का काम होगा। रुको मैं अभी उसे देखता हूँ।"

उसने अपना कोड़ा उठाया और जखाल्स को पकड़ने के लिये वैगन वाले घर की तरफ चल दिया। वहॉ जा कर उसने जखाल्स को बहुत मारा पर जब उसने उससे अपनी चर्बी के बारे में पूछा तो वह अपनी बहुत ही बारीक सी आवाज में बोला —

"ओह बौस नहीं। क्या मैं ऐसा गन्दा काम करूँगा? नहीं नहीं कभी नहीं। और फिर मेरी पूँछ की तरफ तो देखिये उस पर तो कोई चर्बी नहीं लगी। जिसकी पूँछ पर बहुत सारी चर्बी लगी है वही तो चोर है।"

कह कर उसने अपनी पूँछ किसान की तरफ कर के उसे लहरायी। कोई भी देख सकता था कि उस पर कोई चर्बी नहीं लगी थी।

किसान बोला — "पर मेरी चर्बी तो चली गयी। उसे जरूर ही किसी ने चुराया है।" और वह वैगन वाले घर में उसे ढूँढता रहा।

आखिर वह उस जगह आया जहाँ हयीना सो रही थी। हयीना तो वहाँ ऐसे सो रही थी जैसे बच्चे सोते हैं। वह थोड़ा थोड़ा खर्राटे मार रही थी। इतनी ज़ोर से नहीं जैसे किसी लकड़ी के तख्ते को काटते हैं बल्कि बढ़िया वाले छोटे छोटे जैसे जब लोग गहरी नींद सो जाते हैं तब मारते हैं।

हयीना का सिर भूसे पर रखा हुआ था और उसकी पूँछ बाहर निकल रही थी चर्बी से जमी हुई। किसान उसको देखते ही बोला "आहा तो चोर यहाँ है।" और उसने उसको मारना शुरू कर दिया।

कत्थई बहिन उठ कर बैठी हो गयी उसने अपनी आँखें मलीं और पूछा — "क्या बात है। मैं तो एक बहुत सुन्दर सपना देख रही थी। उस सपने में देख रही थी कि मैं सारी रात चर्बी खाती रही और...।"

"तो मेरी चर्बी खाने वाली वह तू थी। अब मैं तुझे सिखाने वाला हूँ कि तुझे फिर चोरी नहीं करनी चाहिये।"

बेचारी कत्थई बहिन यह सोच कर ही कूद ही पड़ी कि किसान अब उसके साथ क्या करने वाला है। वह बेचारी वैगन वाले घर में

चारों तरफ भागने लगी कि उसको कहीं से बाहर भागने का रास्ता मिल जाये पर उसको कहीं कोई रास्ता दिखायी ही नहीं दिया।

उसने बेचारी ने कई बार किसान से यह भी कहा कि उसे उसकी चर्बी के बारे में कुछ नहीं मालूम। उसने तो उसको चखा भी नहीं यहॉ तक कि उसने तो उसको देखा भी नहीं। पर इस बात का किसान पर कोई असर नहीं पड़ा।

किसान बोला — "ज़रा अपनी पूँछ की तरफ तो देख। क्या तू यह कहना चाहती है कि तेरी पूँछ वहॉ अपने आप गयी और उसने अपने आप ही चर्बी अपने ऊपर मल ली?"

कह कर उसने हयीना को वैगन के पहिये से बॉध दिया और उसे खूब मारा। बेचारी का सारा शरीर दर्द करने लगा। वह चिल्लाती रही चिल्लाती रही पर किसान ने उसको अपने खेत से बाहर निकाल दिया।

बेचारी हयीना बहिन। वह तो अपनी पूँछ से चर्बी भी नहीं खा सकी क्योंकि इधर उधर घूमते हुए और पिटते हुए उसकी पूँछ से सारी चर्बी पुछ चुकी थी।

लेकिन वह फिर कभी खेत पर काम करने नहीं गयी। उसका अपना घर उसके लिये बहुत अच्छा था। वह अपने घर वापस चली गयी।"

विलियम[74] ने पूछा — "क्या यही इस कहानी का अन्त है?"

[74] William – name of a child who was listening to this story

ऊटा बोला — "हॉ यही इस कहानी का अन्त है। यह एक बुरा अन्त है पर ऊटा इसमें कुछ नहीं कर सकता।"

पीटी[75] ने उत्सुकता से पूछा — "और इस सारे समय जखाल्स कहॉ था?"

ऊटा ने अपने टेढ़े हाथ एक साथ रखे और ऊपर की तरफ देख कर बोला — "जखाल्स? हा हा हा। जखाल्स इस सारे समय वैगन पर बैठा बैठा अपनी पूजा करता रहा। हर बार जब भी हयीना चिल्लाती जखाल्स उससे कहता कि अब तू आगे से चोरी मत करना बल्कि एक अच्छे ईसाई की तरह से रहना।"

छोटा जैन[76] बोला — "पर चोर तो जखाल्स था। वह हमेशा ही ऐसा बुरा व्यवहार करता है और उसको सजा कभी नहीं मिलती। ऐसा कैसे होता है ऊटा?"

यह सुन कर वह बूढ़ा मुस्कुरा दिया और उसकी ऑखें नीच तरीके से नाचने लगीं पर उसने अपनी कोमल आवाज में जैन को जवाब दिया — "ओ मेरे छोटे मास्टर, अब यह सब ऊटा को क्या पता। इस दुनियॉ में बहुत सारी चीज़ें अजीब होती हैं।

यह भी वैसी ही एक अजीब चीज़ है जैसी कि विलियम ने केप टाउन[77] में देखी थी। जो किसी जगह में इतनी जल्दी भाग जाती थी

[75] Pietie – name of a child who was listening to this story

[76] Jan – name of a listener of the story

[77] Cape Town is one of the three capitals of South Africa.

जैसे वह किसी दूसरी जगह भागती थी। और फिर वह रुक नहीं सकती बस वह भागती ही रहती है।"

विलियम ने पूछा — "आपका मतलब है टेढ़ी मेढ़ी ऊँची नीची सड़क[78]।"

ऊटा बोला — "हॉ हॉ वही। ऊटा का मतलब उसी से था। ऐसे ही इस दुनियॉ में भी होता है ऊपर नीचे ऊपर नीचे। पर इसमें अक्सर अच्छा नीचे रहता है और बुरा ऊपर। पर धीरे धीरे कभी न कभी अच्छे लोग ऊपर आते हैं और बुरे लोग नीचे चले जाते हैं।"

विलियम बोला — "पर यह जखाल्स तो हमेशा ही ऊपर रहता है।"

ऊटा बोला — "हॉ मेरे बच्चे। ऐसा ही कुछ लगता है कि जखाल्स हमेशा ही ऊपर रहता है। केवल कभी कभी ही नीचे जाता है।

[78] Translated for the word "Switchback" which means a zigzag hairpin road

25 सूरज[79]

सूरज की यह लोक कथा अफ्रीका के दक्षिण अफ्रीका देश की दंत कथाओं से ली गयी है। यह वहॉ की बुशमैन जाति[80] के लोगों में कही सुनी जाती है।

ऊटा[81] ने अपने रात के बच्चों को वापस भेजा अपने टेढ़े मेढ़े हाथों को आग के सामने किया और अपने छोटे छोटे बच्चों की तरफ देखा और बोला —

"आह उस सूरज में से थोड़ा सा भी सूरज क्या रखना जब सारा सूरज ही चला गया हो। बहुत दिन पहले ऊटा के लोग यानी बुशमैन आग के बारे में नहीं जानते थे।

नहीं नहीं यह वह आग नहीं जिस आग पर हम अपना खाना पकाते हैं बल्कि वह आग जो सारी दुनियॉ को गर्म और उजाले में रखती है वह जब आसमान में इधर से उधर जाती थी तो वे बहुत खुश रहते थे।

जब वह आग आसमान में होती थी तो उस समय वे शिकार करते थे नाचते थे और दावतें खाते थे।

---

[79] The Sun: a Bushmen Legend – a folktale from South Africa, Africa. Translated from the Web Site : https://www.worldoftales.com/African_folktales/African_Folktale_16.html
[This folktale has been taken from the Book "Outa Karel's Stories : South African folk-Lore tales", by Sanni Metelerkamp. London, MacMillan and Co. 1914. 15 tales. And this book is available at the Web Site https://www.worldoftales.com/South_African_folklore_tales.html .]

[80] Bushman is the most famous tribe of South Africa

[81] Outa Karel is the storyteller

वे अपने जहरीले तीरों से बड़े बड़े सुन्दर हिरनों को मारते। फिर वे उनके टुकड़े करते और उनको खाते। उस मॉस से लाल लाल खून टपकता रहता। क्योंकि उस समय उनके पास कोई आग नहीं थी जिससे वे उसको सुखा सकते। और जो जड़ें आदि भी वे अपने नुकीले पत्थरों से उखाड़ते उनको भी वे वैसे ही खा जाते।

वे कोई चीज़ पकाते ही नहीं थे क्योंकि वे जानते ही नहीं थे कि आग कैसे जलाते हैं। जब सफेद आदमी[82] आये तब उन्होंने आग जलाना सीखा।

बच्चों क्या तुमने देखा है कि ऊटा का सिर कितना बड़ा है पर इससे भी उसको कोई फायदा नहीं होता। क्योंकि इसका बड़ा होना कोई खास बात नहीं है बल्कि इसकी वह चीज़ खास है जो इसके अन्दर है। और सफेद आदमी का सिर इसके अन्दर है।"

ऊटा ने अपने माथे की तरफ इशारा करते हुए कहा — "ओ अल्लाह, पर उसके इस माथे के अन्दर बहुत कुछ रखा हुआ है।"

पुराने समय में जब ऊटा के लोग ठंड में रहा करते थे तो वे गुफाओं में चले जाया करते थे और खालें ओढ़ लिया करते थे क्योंकि उनके पास अपने आपको गरम करने के लिये आग तो होती नहीं थी। हॉ वे बहुत दुखी होते थे जब "बूढ़ा" आसमान में से अपने हाथ नीचे करता और उनको लिटाता।"

[82] Translated for the words "White Men". White man means Europeans. It is believed that the Europeans came to South Africa as Dutch East India Company in Cape of Good Hope in 1652. It means that South Africans did not know about fire before 1652.

पीटी[83] बोला — "कौन बूढ़ा? क्या आपका मतलब है कि सूरज?"

"हॉ वही। क्या तुम लोग नहीं जानते कि एक बार सूरज आदमी था। यह बहुत बहुत बहुत पुरानी बात है, दुनियॉ में ऊटा के लोगों के रहने से भी पहले की, शायद तब की जब दुनियॉ के पहले पहले लोग यहॉ रहने आये थे, फ्लैट बुशमैन के रहने से भी पहले की जिनके बारे में हम सचमुच थोड़ा बहुत कुछ जानते हैं।

उन दिनों यहॉ एक आदमी रहा करता था जिसकी बगलों से कोई चमकीली चीज़ निकलती थी।

जब वह अपनी एक बॉह उठाता था तो उसके उस तरफ की जगह रोशनी से भर जाती थी। जब वह अपनी दूसरी बॉह उठाता था तो उसकी उस तरफ की जगह रोशनी से भर जाता था। और जब वह अपनी दोनों बॉहें उठाता था तो उसके चारों ओर की जगह रोशनी से भर जाती थी।

पर यह रोशनी वहीं फैलती थी जहॉ वह रहता था। वह दूसरी जगह तक नहीं पहुॅच पाती थी।

कभी कभी लोग उससे किसी चट्टान पर खड़ा होने के लिये कहते ताकि उसकी बगलों से निकली हुई रोशनी कुछ और दूर तक जा सके। कभी जब वह किसी पहाड़ की चोटी पर खड़ा हो जाता तो वह रोशनी बहुत दूर दूर तक जाती।

[83] Pitie – name of a child who was listening the story

इस तरह वह जितनी ऊपर चढ़ कर अपनी बॉह फैलाता उसकी बगल से निकली रोशनी उतनी ही दूर तक जाती।

लोगों ने कहा — "अब हमको पता चला कि यह आदमी जितना ऊपर खड़े हो कर अपनी बॉह फैलाता है रोशनी उतनी ही दूर तक जाती है।

अगर हम इसको कहीं बहुत ऊॅची जगह खड़ा कर दें तो वहॉ से इसकी रोशनी सारी दुनियॉ में पहुॅच जायेगी।"

सो उन्होंने एक प्लान बनाया। आखिर एक अक्लमन्द बुढ़िया ने कुछ नौजवान लोगों को बुलाया और उनसे कहा — "तुम लोगों को इस आदमी के पास जाना चाहिये जिसकी बगलों से रोशनी निकलती है। और तुमको तब जाना चाहिये जब यह सो रहा हो।

फिर तुममें से जो भी सबसे ज़्यादा ताकतवर हो उसे इसको बगलों से पकड़ लेना चाहिये फिर उठा कर आगे पीछे हिलाते हुए उसको जितना ऊॅचा हो सके आसमान में उतना ऊॅचा फेंक देना चाहिये जहॉ से यह फिर वापस न आ सके।

इसकी बॉहें फैला देनी चाहिये ताकि यह सब पहाड़ों से ऊपर रहे और दुनियॉ में सब जगह रोशनी फैलाये उसको गर्मी दे और गर्मी के मौसम में हरी हरी चीज़ें उगाये।"

सो वे नौजवान उस जगह गये जहॉ वह आदमी सो रहा था। मेरे बच्चों, वे वहॉ लाल रेत में होते हुए दबे पॉव गये ताकि उनके आने की आवाज से वह आदमी जाग न जाये।

उस समय वह गहरी नींद सो रहा था। इससे पहले कि वह जागता उन नौजवानों ने उसे उसकी बगलों से पकड़ा और जैसा कि उस अक्लमन्द बुढ़िया ने उनसे कहा था उसको इधर उधर हिलाया और ऊपर आसमान में फेंक दिया। वहॉ जा कर वह अटक गया।

अगली सुबह जब वह उठा और उसने अॅगड़ाई ली तो उसकी दोनों बगलों से रोशनी निकली जिससे सारी दुनियॉ चमक गयी। उसने धरती को गर्म कर दिया और हरी हरी चीज़ें उगा दीं। और यह दिन ब दिन रोज रोज चलता रहा।

जब वह अपनी बॉहें ऊपर उठाता तो चारों तरफ रोशनी हो जाती दिन हो जाता। जब वह अपनी एक बॉह नीचे गिराता तो मौसम बादलों वाला हो जाता और कुछ साफ दिखायी नहीं देता।

जब वह अपनी दोनों बॉहें नीचे कर लेता और सोने चला जाता तो अॅधेरा हो जाता रात हो जाती पर जब वह उठता और अपनी बॉहें फैलाता तो फिर से दिन निकल आता दुनियॉ में फिर से रोशनी और गर्मी हो जाती।

कभी वह धरती से दूर चला जाता तो जाड़ा आ जाता पर जब पास आ जाता तो गर्मी का मौसम आ जाता। हरी हरी चीज़ें उगने लगतीं। फल पकने लगते।

और फिर मेरे बच्चों तबसे ऐसा ही चल रहा है – दिन और रात गर्मी और सर्दी। और यह सब इसलिये है कि अपनी बगलों से रोशनी फेंकने वाला वह आदमी आसमान में फेंक दिया गया था।"

विलियम[84] बोला — "पर ऊटा सूरज कोई आदमी तो नहीं है। और उसकी कोई बॉहें भी नहीं हैं।"

"नहीं मेरे बच्चे यह तो अब ऐसा नहीं है। अब वह कोई आदमी नहीं रह गया है। मगर बच्चों तुम लोगों को यह भी मालूम होना चाहिये कि वह आसमान में कितने दिनों से है। उसको करोड़ों साल हो गये इस तरह घूमते घूमते।

वह एक तरफ से जागता है और आसमान में लुढ़कता हुआ दूसरी तरफ जा कर सो जाता है। इस लुढ़कने में वह खुद भी सब तरफ से गोल गोल होता गया।

और जो रोशनी बच्चों पहले उसकी केवल बगलों से आती थी वह अब उसके चारों तरफ कस कर लिपट गयी है जिससे वह अब रोशनी की एक गेंद बन गया है।"

मिनी जो अब तक यह कहानी आग जलाने की जगह बैठी बैठी सुस्ती से सुन रही थी क्योंकि वह वहीं पास में मेज पर बैठी कुछ लिख रही थी। वह कहानी सुनने वाले बच्चों की तरफ झुकी पर एक नजर में यह बताया जा सकता था कि इन सब बातों को ले कर उन बच्चों के दिमाग में कोई परेशानी नहीं थी।

छोटा जैन[85] बोला — "और ऊटा उसकी बॉहें? क्या वे अब बाहर कभी भी नहीं आतीं?"

---

[84] William is one of the listeners of this story.

[85] Jan – name of one of the listeners of this story

इस पर ऊटा खुश हो कर बोला — "आह यह मेरा छोटा मास्टर है जो हमेशा ही कुछ न कुछ बड़ी चीज़ पूछता है। हॉ हॉ बच्चे, वे अब कभी कभी बाहर निकलती हैं।

जब कोई अँधेरा दिन होता है तब वे बाहर निकलती हैं। वह उनको नीचे गिराता है और अपने हाथ रोशनी की तरफ फैलाता है जिससे वह रोशनी धरती तक नहीं आ पाती इसी लिये उस दिन अँधेरा दिन रहता है।

और कभी कभी सुबह सवेरे उठने से पहले और रात को सोने जाने से पहले तुम लोगों ने सूरज की गेंद में से निकलती लम्बी लम्बी धारियॉ देखीं होंगी।"

"हॉ हॉ।" ऊटा के पास बैठे हुए बच्चों ने कहा।

"वे सूरज की लम्बी लम्बी उँगलियॉ हैं। उसकी बॉहें तो आग के गोले के अन्दर की तरफ मुड़ी हुई हैं पर वह अपनी उँगलियॉ बाहर निकाल लेता है।

वे उँगलियॉ आसमान में चमकीली सड़क का काम करती हैं। वह बूढ़ा अपनी उन उँगलियों के बीच में से नीचे धरती पर झॉकता रहता है।

बच्चों अब जब भी वह अपनी उँगलियॉ बाहर निकाले तो तुम उनको गिनने की कोशिश करना। उसकी आठ लम्बी धारियॉ उँगलियॉ होंगी और दो छोटी धारियॉ अँगूठा होंगी।"

ऊटा की हिसाब की जानकारी केवल उसकी टेढ़ी उँगलियों की गिनती तक ही सीमित थी। वह आगे बोला — "जब वह सोने जाता है तो वह उनको भी अन्दर समेट लेता है। और बस फिर सारी दुनियॉ में अँधेरा छा जाता है और लोग सो जाते हैं।"

पीटी ने ऊटा को याद दिलाया — "पर ऊटा रात को हमेशा ही तो अँधेरा नहीं होता। तुम्हें तो मालूम है कि रात को चॉद होता है तारे होते हैं।"

ऊटा बोला — "हॉ छोटे तारे होते हैं और लेडी चॉद होती है। ऊटा तुमको उनके बारे में किसी और दिन बतायेगा। पर अभी उसको जल्दी जल्दी जाना चाहिये और अपने शरीर पर मरहम की मालिश करवानी चाहिये।

क्योंकि जब बुढ़ापा आ जाता है तो कमर झुक जाती है और हड्डियॉ सख्त हो जाती हैं और गठिया बहुत तंग करता है। इसलिये ऊटा को अब मरहम की मालिश करवानी है।"

कह कर ऊटा चला गया।

26 शेर और गीदड़[86]

एक बार एक शेर और एक गीदड़ ने आपस में यह तय किया कि वे एक साथ शिकार करने जायेंगे और फिर आपस में उसको बॉट लेंगे। इस तरह वे अपने अपने परिवार के लिये जाड़े का मौसम के लिये कुछ खाना इकट्ठा कर लेंगे।

अब शेर तो गीदड़ से कहीं ज़्यादा अच्छा शिकारी था सो गीदड़ ने उसको सलाह दी कि शेर शिकार करेगा और वह खुद शेर के शिकार किये हुए मॉस को उनके घर तक ले जाने में सहायता करेगा। और मिसेज़ गीदड़ और उनके बच्चे उस मॉस को तैयार करने और सुखाने में उसकी सहायता करेंगे।

साथ में वे यह भी ख्याल रखेंगे कि मिसेज़ शेर और उनके परिवार को मॉस की कमी न पड़े।

शेर इस बात पर राजी हो गया और दोनों शिकार के लिये चल दिये। वे लोग काफी समय तक शिकार करते रहे और उन दोनों ने बहुत शिकार किया।

शिकार के बाद शेर अपने परिवार को देखने और अपने शिकार किये गये मॉस को खाने के लिये लौटा जैसी कि वह आशा कर रहा था कि उसके घर में तो बहुत सारा मॉस होगा।

---

[86] The Lion and Jackal – a folktale from South Africa, Africa. Translated from the Web Site : http://www.worldoftales.com/African_folktales/African_Folktale_4.html

पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने देखा कि मिसेज़ शेर और उसके बच्चे तो भूख से मरने वाले थे और बहुत ही खराब हालत में थे।

ऐसा लगता था कि गीदड़ ने उनको शिकार के केवल कुछ ही टुकड़े दिये थे। और वे भी इतने कम कि बस वे केवल ज़िन्दा ही रह सकें। वह हमेशा ही उनसे यही कहता रहा कि उसे और शेर को जंगल में कोई बहुत ज़्यादा शिकार नहीं मिला।

जबकि उसके अपने परिवार में मॉस बहुत सारा था और उसके परिवार को सब लोग खूब तन्दुरुस्त थे।

यह सब शेर से सहन नहीं हुआ। वह गुस्से में भर कर गीदड़ और उसके पूरे परिवार को वहीं मारने चला जहॉ भी कहीं वे उसको मिल जाते।

गीदड़ यह बात पहले से ही जानता था सो वह इसका सामना करने को तैयार था। उसने अपनी सारी चीज़ें पहले ही एक पहाड़ की चोटी पर रख दी थीं। और वे सब एक ऐसी जगह रखी थीं जहॉ तक पहुचने का रास्ता बहुत कठिन था और केवल वही वहॉ तक पहॅुच सकता था।

शेर ने जब उसे उस पहाड़ की चोटी पर देखा तो गीदड़ ने भी उसको यह कह कर नमस्ते की — "गुड मौर्निंग चाचा शेर।"

यह सुन कर शेर गुस्से में भर कर अपनी बिजली की सी कड़कती आवाज में बोला — "ओ गधे के बच्चे जैसा तूने मेरे

परिवार के साथ किया है उस हैसियत से तेरी मुझे चाचा कहने की हिम्मत कैसे हुई?"

गीदड़ बोला — "ओह चाचा अब मैं तुम्हें कैसे समझाऊँ? मेरी पत्नी तो बस एक बहुत ही जंगली जानवर है।"

तभी शेर ने "पटाक पटाक" की आवाज सुनी। गीदड़ सूखी खाल को एक डंडे से मार कर यह दिखाना चाह रहा था कि वह अपनी जंगली पत्नी को पीट रहा था।

और साथ में आ रही थीं मिसेज़ गीदड़ की आवाज़ें जैसे कोई उसको पीट रहा हो और उनके बच्चों के चिल्लाने की आवाज़ें जिनको उनकी मॉ को न मारने के लिये और उसके ऊपर न चिल्लाने के लिये कहा गया था।

"वह बहुत बदमाश है। यह सब उसी का करा धरा है। मैं आज उसे अभी मार दूँगा।" और उसने फिर से उस सूखी हुई खाल को मारना शुरू कर दिया।

मिसेज़ गीदड़ और उसके बच्चों की दर्द भरी चिल्लाहट सुन कर शेर का दिल पसीज गया। उसने गीदड़ से कहा कि वह अब मिसेज़ गीदड़ को मारना बन्द करे। तब कहीं जा कर गीदड़ ने अपनी पत्नी को मारना बन्द किया।

जब गीदड़ का दिमाग कुछ ठंडा हो गया तो उसने शेर को ऊपर बुलाया और कहा कि वह उसके घर कुछ खा कर जाये।

शेर ने उस पहाड़ी पर चढ़ने की बहुत कोशिश की पर वह उस पर चढ़ नहीं सका। गीदड़ जो हमेशा ही सबकी सहायता करने को तैयार रहता था बोला — "मैं ऐसा करता हूँ कि तुम्हारे लिये नीचे एक रस्सी फेंकता हूँ तुम उसको पकड़ कर ऊपर आ सकते हो।"

शेर राजी हो गया तो गीदड़ ने उसके लिये एक रस्सी फेंकी। जब उसने और उसके परिवार ने शेर को आधे रास्ते तक ऊपर खींच लिया तो चतुराई से उसने उसकी वह रस्सी काट दी। शेर धम्म से नीचे गिर पड़ा और उसको बहुत चोट आयी।

इस पर गीदड़ ने फिर से अपनी पत्नी को वैसे ही मारना शुरू किया जैसे वह पहले मार रहा था कि उसने शेर को खींचने के लिये उसको सड़ी हुई रस्सी क्यों दी और उसके परिवार वालों ने भी फिर से वैसे ही चिल्लाना शुरू किया जैसे वे पहले चिल्ला रहे थे।

उसने अपनी पत्नी से कहा कि अबकी बार वह उसको भैंस की खाल की मजबूत वाली रस्सी दे जो किसी भी बोझ को आसानी से खींच सकती थी। सो अबकी बार यह नयी रस्सी फेंकी गयी जिससे शेर ने अपने आपको बाँध लिया।

सबने मिल कर ऊपर से फिर से वह रस्सी खींचनी शुरू कर दी। जब शेर इतनी ऊपर पहुँच गया कि वह पहाड़ी के ऊपर यह झाँक कर देख सकता कि माँस कहाँ पक रहा था और बाकी माँस कहाँ सूख रहा था वह रस्सी फिर से काट दी गयी।

अबकी बार शेर इतनी ज़ोर से नीचे गिरा कि काफी देर तक तो उसको होश ही नहीं आया। जब शेर को थोड़ा होश आया तो गीदड़ उससे उसके ऊपर दया दिखाते हुए बोला कि इससे कोई फायदा नहीं है कि उसको रस्सी से ऊपर खींचा जाये।

अब यही ज़्यादा ठीक रहेगा कि यहीं से मॉस का एक बहुत बढ़िया सा भुना हुआ टुकड़ा शेर के गले में डाल दिया जाये।

अब शेर तो भूख से पागल सा हो रहा था और दो बार गिरने से घायल हो रहा था सो वह इस बात पर भी राजी हो गया। अब वह उस मॉस के बढ़िया भुने हुए टुकड़े के कौर का इन्तजार करने लगा जो गीदड़ उसके मुँह में फेंकेगा।

इस बीच गीदड़ ने एक गोल पत्थर खूब गरम किया और उसको मॉस के एक पतले से टुकड़े में लपेटा और शेर के गले की तरफ फेंक दिया। शेर ने भी अपना गला पूरा खोल रखा था।

सो जैसे ही गीदड़ का फेंका गरम पत्थर शेर के गले में पड़ा वह गरम पत्थर सीधा शेर के गले में चला गया उसका गला पूरा का पूरा जल गया। और वह वहीं मर गया।

अब यह तो कहने की कोई बात ही नहीं है कि उस रात पहाड़ी पर बहुत खुशियॉ मनायी गयीं।

27 कुत्ते का प्यार[87]

झील के पास वाले गॉव में रहने वाले लोगों के लिये यह सब आसान नहीं था। नेबूलेला[88] बर्फ के समान सफेद एक बड़ा राक्षस था जो वहीं झील के पानी में रहता था और बहुत ही भयंकर था।

उसको खुश रखने के लिये गॉव वाले रोज शाम को उसके लिये दलिया और रोटी लाया करते थे। वे उनको पानी के किनारे रख कर तुरन्त ही वहॉ से चले जाते थे।

खाना रखने के बाद उनके वहॉ से तुरन्त ही चले जाने की भी एक वजह थी। हालॉकि वह राक्षस उनका वह खाना खा तो लेता था पर उसको आदमी खाना ज़्यादा अच्छा लगता था इसलिये उसकी निगाह उन आदमियों पर ज़्यादा रहती थी जो उसके लिये खाना ले कर आते थे और उनके खाने पर कम रहती थी।

खाना लाने वाले आदमियों को भी यह पता था इसलिये वे भी खाना रखने के बाद तुरन्त ही भाग जाते थे।

हालॉकि यह राक्षस गॉव वालों को बहुत तंग करता था पर गॉव के सरदार को इस बात का कभी पता नहीं चला क्योंकि उसको अपनी ही परेशानियॉ बहुत थीं।

---

[87] Puppy Love – Translated from the Web Site : http://www.themuralman.com/south_africa/south_africa_westbury_tale.html Collected and retold by Phillip Martin

[88] Nebulela – the name of the big demon

उसकी पत्नियों के कई अच्छे बेटे थे पर उसको एक बेटी की जरूरत थी। इस बात का उसके दिल पर बहुत बोझ था कि उसके कोई बेटी नहीं थी और इस बोझ की वजह से वह अपना ध्यान अपने काम में ठीक से नहीं लगा पाता था।

आखिर उसकी एक प्रिय पत्नी ने एक बहुत ही सुन्दर काली ऑखों वाली बेटी को जन्म दिया। वह लड़की जब हॅसती थी तो सरदार बहुत खुश होता था।

एक दिन वह बोला कि वह अपनी बेटी के आने की खुशी में एक दावत देगा और यह दावत इतनी अच्छी होगी जितनी कि इस देश में कभी किसी ने न दी होगी।

उसने ऐसा ही किया। उसने यह दावत दी और यह दावत कई दिन तक चलती रही। इधर सरदार के घर दावत चलती रही और उधर गॉव वाले भी उस राक्षस को रोज शाम को सूरज डूबने पर उसका खाना पहुॅचाते रहे।

छोटी राजकुमारी अपने पिता की निगाहों में कोई गलती कर ही नहीं सकती थी। जैसे जैसे वह बड़ी होती गयी वह बहुत सुन्दर और प्यारी होती गयी। उसकी किसी भी इच्छा को राजा मना नहीं करता था।

वह उसको सबसे अच्छे मोती पहनाता, सुन्दर सुन्दर पंखों से सजाता और बहुत कीमती जानवरों की खाल पहनाता। पिता के इस तरह के बर्ताव ने उसको बहुत बिगाड़ दिया था।

वैसे वह बहुत दयालु थी और सबको बहुत प्यार करती थी। इसलिये भी गॉव की सब लड़कियॉ उससे नफरत करती थीं।

कोई बड़ी लड़की कहती — "देखो तो उसे आज। आज तो उसने नया हार पहना है। अबकी बार तो उसके हार में लकड़ी का तलिस्मान[89] भी पड़ा हुआ है।"

एक छोटी लड़की बोली — "मुझे उससे नफरत है।"

उसकी बड़ी बहिन बोली — "श श श श। राजकुमारी को यह सब सुनायी नहीं देना चाहिये ज़रा धीरे बोलो।"

उन लोगों को ये सब बातें अपने तक ही रखनी थी क्योंकि अगर सरदार को यह मालूम हो जाता कि वे उसकी एकलौती बेटी के बारे में ऐसा सोचती हैं तो वह पता नहीं उनके साथ क्या करता।

वे राजकुमारी के साथ खेलती थीं, वे उसके साथ गाना गाती थीं और रोज की तरह उसके साथ पानी लाने के लिये नदी पर भी जाती थीं।

एक दिन नदी के किनारे एक छोटी लड़की ने एक छोटे से पंजे को पानी में हिलते हुए देखा। वह कुत्ते का एक छोटा सा बच्चा था। बहुत से बच्चे उस छोटे से कुत्ते के बच्चे को देख कर हॅस

[89] Translated for the word "Amulet" – anything with magic properties which protect the wearer of the amulet. See the picture of a kind of an amulet

पड़े। उसकी गर्दन में एक पत्थर बॅधा हुआ था उसकी वजह से वह बेचारा ऊपर ही नहीं आ पा रहा था।

पर जब उस छोटी राजकुमारी ने उसे देखा तो वह उस जानवर को पानी में से डूबने से बचाने के लिये उसमें तुरन्त ही कूद पड़ी और उसको पानी में से बाहर निकाल लायी। अपनी छाती से लगाये लगाये वह उसको अपने घर ले गयी।

जब वह कुत्ते का बच्चा बिल्कुल ठीक हो गया तो दोनों साथ साथ रहने लगे। गॉव में सब लोगों को यह पता चल गया कि राजकुमारी और वह कुत्ते का बच्चा दोनों एक दूसरे को बहुत प्यार करते थे।

जैसे जैसे समय बीतता गया गॉव में कुछ चीज़ें बदल गयीं। जैसे छोटी राजकुमारी बड़ी हो कर सुन्दर शादी के लायक लड़की हो गयी और उसका कुत्ता इतना बूढ़ा हो गया कि वह अब राजकुमारी के साथ पानी लाने के लिये नदी पर रोज नहीं जा सकता था।

पर फिर भी जबकि कुछ चीज़ें बदल गयी थीं दूसरी चीज़ें अभी भी वैसी हीं थीं जैसे गॉव की लड़कियॉ राजकुमारी से अभी भी नफरत करती थीं। अगर उनके हाथ में कुछ होता तो उनकी नफरत और बढ़ जाती।

एक दिन वह राजकुमारी और लड़कियॉ मिट्टी लाने के लिये मिट्टी एक गड्ढे के पास गयीं तो वहॉ एक बहुत ही भयानक घटना घट गयी।

वे लोग वहॉ से लाल रंग की मिट्टी लाने के लिये गयी थीं जिसे नाच के समय नाचने वाले अपने शरीर पर लगाया करते थे तो वहॉ उन लोगों ने फुसफुसा कर आपस में एक बहुत ही भयानक योजना बनायी।

जैसे ही राजकुमारी ने उस गड्ढे में से आखिरी बार मिट्टी निकाली कि दूसरी लड़कियों ने उसको तुरन्त ही उस गड्ढे में ढकेल दिया और उसके ऊपर मिट्टी डाल दी। उसके बाद लड़कियों ने अपना अपना सामान उठाया और गॉव की तरफ ऐसे चल दीं जैसे कुछ हुआ ही न हो।

जब वे घर लौट कर आयीं तो केवल राजकुमारी का वह कुत्ता ही ऐसा था जिसने इस बात को महसूस किया कि उसकी राजकुमारी घर नहीं लौटी थी।

कुत्ते को सरदार ने घर के आगे रस्सी से बॉधा हुआ था क्योंकि अभी भी इस उमर में भी वह राजकुमारी के साथ जाना चाहता था।

पहले तो वह उन लड़कियों को देख कर खुशी से कूदा पर जब उसने राजकुमारी को नहीं देखा तो वह उसके लिये चिल्लाया। पर उसके चिल्लाने पर भी किसी ने उसकी इस बात की तरफ ध्यान नहीं दिया कि वह क्यों चिल्ला रहा है।

सो किसी को इस बात का पता ही नहीं चला कि राजकुमारी घर वापस नहीं आयी है वह इसलिये चिल्ला रहा है।

जब किसी ने उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं दिया तो कुछ देर के चिल्लाने के बाद वह रस्सी तोड़ कर भाग गया।

बाद में भी इस बात पर काफी देर तक किसी का ध्यान नहीं गया जब तक कि सरदार शाम को घर नहीं आ गया। उसको लगा कि कहीं कुछ गड़बड़ थी। उसको लगा कि मेरी बेटी कहॉ है और इस कुत्ते ने अपनी रस्सी को क्यों काटा है और फिर कहॉ गायब हो गया।

उसको पता चला कि वह तो सुबह दूसरी लड़कियों के साथ मिट्टी लाने के लिये गयी थी। उसने गॉव की लड़कियों को बुलाया और उनसे पूछा कि क्या उन्होंने उसकी बेटी को देखा है?

उन्होंने झूठ बोला कि उन्होंने तो उसको सारा दिन नहीं देखा और वह तो हमारे साथ मिट्टी के गड्ढे तक भी नहीं गयी जो कि उसको जाना चाहिये था।

उसके बाद एक लड़की बोली — "वह किसी अजनबी से पानी के कुँए के पास मिलने की बात तो कर रही थी।"

तब सरदार ने गॉव के कई और लोगों को बुलाया और उनसे अपनी बेटी को ढूँढने में उनकी सहायता मॉगी। जैसे ही वे अपनी अपनी मशालें ले कर उस पानी वाले कुँए की तरफ जाने वाले थे कि उन्होंने देखा कि राजकुमारी का कुत्ता लॅगड़ाता हुआ घर आ रहा था।

कुत्ता सारा का सारा मिट्टी में लथपथ था। सरदार उसको देख कर बोला — "ओ मेरे वफादार कुत्ते, मैं जानता हूँ कि तुम मिट्टी के गड्ढे से आ रहे हो, पर तुम वहाँ गये ही क्यों थे?"

फिर उसने देखा कि उसके मुँह में तो उसकी बेटी का वह हार है जो उसने अपनी बेटी को दिया था जिसमें लकड़ी का तलिस्मान पड़ा हुआ था। सरदार को तुरन्त ही समझ में आ गया कि गाँव की लड़कियाँ उससे झूठ बोल रहीं थीं।

उसने उन आदमियों से कहा — "मेरी बेटी पानी के कुँए के पास नहीं है बल्कि मिट्टी के गड्ढे के पास है चलो वहीं चलते हैं।"

सो सब उस मिट्टी के गड्ढे की तरफ चल दिये। साथ में वह कुत्ता भी उनके साथ चल दिया। जब वे सब उस गड्ढे के पास तक पहुँचे तो वह कुत्ता धीरे से चिल्लाया।

कुत्ते की चिल्लाहट सुन कर राजकुमारी खुशी से चिल्लायी। वह शेर से बचने के लिये एक पेड़ पर चढ़ गयी थी। उन सब आदमियों को देख कर उसने नीचे उतरना शुरू किया। सरदार ने उसको देखा तो उसको यह समझने में देर नहीं लगी कि वहाँ क्या हुआ था।

उसने वह गड्ढा देखा जहाँ उसकी बेटी को ज़िन्दा गाड़ दिया गया था। उसने अपनी बेटी के शरीर पर कुत्ते के पंजों के निशान भी देखे जो उस कुत्ते के राजकुमारी को ढूँढते समय मिट्टी का गड्ढा खोदने के समय उसके शरीर पर पड़ गये थे।

जब उसने अपनी बेटी को गले से लगाया तो उसने देखा कि उसके चेहरे पर चाटने के निशान भी थे जो उसके कुत्ते ने उसको होश में लाने के लिये बनाये होंगे।

बेटी बोली — "पिता जी मुझे तो लगा था कि मैं आपको कभी देख ही नहीं पाऊँगी।"

सरदार मुस्कुरा कर बोला — "नहीं बेटी, ऐसा नहीं कहते। पर हॉ इतना जरूर है कि आज अगर तुम्हारा यह वफादार कुत्ता यहॉ न होता तो मैं तो सोच भी नहीं सकता कि तुम्हारा क्या हुआ होता। मैं तो सोच ही नहीं सका कि उसके सारे शरीर पर मिट्टी क्यों लगी हुई है अगर तुम्हार यह हार मैंने उसके मुँह में न देखा होता।"

राजकुमारी बोली — "पिता जी, बहुत दिन पहले मैंने उसकी जान बचायी थी और आज उसने मेरी जान बचायी है।"

सब लोग घर वापस आ गये और सारे गॉव में खूब खुशियॉ मनायी गयीं। सभी राजकुमारी को घर वापस आया देख कर बहुत खुश थे।

सभी मतलब गॉव के सभी लोग सिवाय उन लड़कियों के जो उस मिट्टी के गड्ढे तक उसके साथ गयी थीं और जिन्होंने उसको गड्ढे में फेंका था। वे लड़कियॉ तो कॉप ही गयीं।

सरदार ने उन लड़कियों को अपने सामने बुलाया और कहा — "जो दूसरे को मौत देते हैं उनको मौत ही मिलनी चाहिये। पर इस कुत्ते से मैंने कुछ सीखा है।

कभी कभी किसी की ज़िन्दगी बचाना बहुत अच्छी बात है इसलिये मैं तुम सबको जीने का एक मौका देता हूँ हालॉकि यह मौका तुमको मिलना नहीं चाहिये।

अगर तुम लोग जीना चाहती हो तो मुझे तुम लोग वह राक्षस नैबूलेला ला कर दे दो। उसने हमारे गॉव को बहुत समय से बहुत तंग कर रखा है। अगर तुम मुझे उसको ला दोगी तो मैं तुम सबकी ज़िन्दगी बख्श दूँगा।"

अब उन लड़कियों के पास और कोई चारा नहीं था। या तो वे सरदार के हाथों से यकीनन मरें या फिर उस राक्षस के हाथों से शायद ही मरें।

सो उन्होंने तुरन्त ही एक योजना बनायी जिससे उनको लगा कि वे अपनी जान बचा पायेंगी और साथ में सरदार को भी सन्तुष्ट कर पायेंगीं।

अगले दिन वे लड़कियॉ दलिया और रोटी ले कर उस झील की तरफ चलीं जहॉ नैबूलेला रहता था। वहॉ जा कर उन्होंने उस खाने को झील के किनारे न छोड़ कर उसको किनारे से थोड़ी दूर रख दिया ताकि उस राक्षस को खाना लेने के लिये पानी से बाहर आना पड़े।

राक्षस को भी खाने में इतनी ज़्यादा रुचि नहीं थी जितनी कि उन लड़कियों में थी जो उस खाने को ले कर आयी थीं। और

क्योंकि लड़कियॉ अभी भी किनारे पर खड़ी थीं नेबूलेला का ध्यान उधर जल्दी ही चला गया।

सो नैबूलेला भी जल्दी ही पानी से बाहर निकल आया। तब उन लड़कियों ने देखा कि बर्फ जैसा सफेद वह नैबूलेला कितना बड़ा था और कितना भयानक था। उन लड़कियों को देखते ही वह चिल्लाया तब उन लड़कियों ने देखा कि उसके दॉत कितने तेज़ थे।

यह सब देख कर वे लड़कियॉ बहुत डर गयीं। उन्होंने वह खाना वहीं छोड़ा और गॉव की तरफ भाग लीं। नैबूलेला उनके पीछे पीछे भागा। यह तो उन लड़कियों के लिये बड़ी खुशकिस्मती की बात थी कि वे उससे काफी आगे थी वरना वह तो बहुत तेज़ भागने वाला था।

लड़कियॉ गॉव में घुस कर सरदार के जानवरों के बाड़े में घुस गयीं। वह राक्षस उनके बिल्कुल पीछे था। लड़कियॉ उसको अपने पीछे आता देख कर वह बाड़ा छोड़ कर उस बाड़े के पीछे के दरवाजे से निकल कर वहॉ से उस राक्षस से बच कर भाग गयीं।

बाहर जाते जाते उनमें से दो लड़कियों ने उस बाड़े का दरवाजा ज़ोर से बन्द कर दिया इससे वह राक्षस उस बाड़े में ही बन्द रह गया।

इतने में उन लड़कियों के पिताओं ने उस राक्षस को पकड़ लिया। वह राक्षस इतने सारे आदमियों का कुछ नहीं बिगाड़ सका क्योंकि उन सबके पास भाले और ढाल थे।

गॉव की लड़कियों ने उस राक्षस की खाल से सरदार के लिये एक बहुत सुन्दर बर्फ जैसा सफेद शाल[90] तैयार किया। सरदार ने न केवल उनको माफ कर दिया बल्कि वह शाल भी वह अपनी सारी ज़िन्दगी पहनता रहा।

सरदार का शाल बनाने के बाद भी उसमें से इतनी सारी सफेद खाल बच गयी थी कि उससे राजकुमारी और उस कुत्ते के लिये भी शाल बन गये।

इस तरह से राजकुमारी ने कुत्ते की जान बचायी राजकुमारी के कुत्ते ने राजकुमारी की जान बचायी और उन लड़कियों ने अपनी जान बचायी।

[90] Translated for the word “Cape” – see its picture above.

28 बिना दॉत की सुन्दर लड़की[91]

बहुत पहले की बात है कि अफ्रीका के दक्षिण अफ्रीका देश में एक बूढ़ा रहता था जिसके तीन बेटे थे। उसके तीनों बेटों की अभी शादी नहीं हुई थी।

उसका सबसे छोटा बेटा तो अभी लड़कपन से कुछ ही बड़ा था जबकि उसके दोनों बड़े बेटे शादी के लायक थे और उनकी शादी अब तक हो जानी चाहिये थी। पर यह देख कर कि वे लोग इस बात पर कोई ध्यान ही नहीं दे रहे थे एक दिन पिता ने सोचा कि वह खुद ही इस बारे में कुछ करेगा।

एक दिन सुबह सुबह वह गॉव में घूमने निकल गया कि शायद वह अपने सबसे बड़े बेटे के लिये कोई अच्छी लड़की ढूँढने में कामयाब हो जाये।

उसने जा कर गॉव के सरदार से बात की तो उसने उसको एक बहुत सुन्दर सी लड़की दिखायी जो शादी के लायक थी।

वह बूढ़ा उस लड़की को देख कर घर वापस चला गया। अपने सबसे बड़े लड़के को बुला कर उसने उससे कहा — "मैंने तुम्हारे लिये एक लड़की देख ली है। कल तुम उसके पिता से मिलना और उसके लिये तीन गाय और दो बैल की भेंट ले जाना।"

---

[91] The Toothless Pretty Maid – a folktale from Bavenda (or Venda) Tribe, South Africa, Africa. Translated from the book "African Folktales" by A Ceni. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

बेटे को कोई ऐतराज नहीं था सो अगले दिन सुबह ही उसने अपने ससुर के लिये जानवर लिये और अपनी होने वाली पत्नी के गॉव की तरफ रवाना हो गया।

जब वह वहॉ पहुँचा तो उसके ससुराल वालों ने उसका ज़ोर शोर से स्वागत किया। उसके ससुर ने अपनी बेटी से कहा — "बेटी देखो यह तुम्हारा दुलहा है तुम इनके साथ इनके घर चली जाओ।"

लड़की बहुत खुश थी सो वह उस नौजवान के साथ चल दी। कुछ दूर जाने के बाद उसने अपनी मीठी आवाज में गाना शुरू कर दिया —

देखो देखो मेरे सुन्दर नौजवान मैं एक बहुत सुन्दर लड़की हूँ
पर मेरे एक भी दॉत नहीं है।

यह सुन कर उसको कुछ शक हो गया सो वह उससे बोला — "ज़रा रुको तो, ज़रा अपना मुँह तो खोलो। मैं देखूँ कि तुम जो कुछ कह रही हो वह सच भी है या नहीं।"

लड़की रुकी और उसने अपना मुँह खोला तो उसने उसके मुँह के अन्दर देखा तो उसको यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि उसके मुँह में तो वाकई दॉत ही नहीं थे वहॉ तो बस केवल दो काली लाइनें थीं।

"हे भगवान, इस गड़बड़ के बारे में तो किसी ने मुझे बताया ही नहीं। यह शादी नहीं हो सकती। मैं तुमको तुम्हारे पिता के पास छोड़ कर आता हूँ।"

कह कर वह नौजवान उसको साथ ले कर उसके पिता के घर वापस गया और उससे कहा कि वह बिना दाँत की पत्नी नहीं लेना चाहता था इसलिये उसके जानवर वापस कर दिये जायें और बस।

शाम को जब वह घर वापस आया तो उसके पिता ने उससे पूछा — "बेटे, तुम्हारी पत्नी कहाँ है? और ये जानवर अभी भी तुम्हारे पास क्यों हैं?"

बेटा बोला — "पिता जी, मैं अपनी पत्नी को ले कर घर आ रहा था पर रास्ते में मुझे पता चला कि उसके तो दाँत ही नहीं थे। मैं एक बिना दाँत वाली लड़की से शादी नहीं कर सकता था सो मैं उसको उसके घर छोड़ आया और अपने जानवर वापस ले आया।"

यह सुन कर उसका पिता बहुत दुखी हो गया पर तभी उसका दूसरा बेटा वहाँ आ गया और बोला — "मुझे डर है कि मेरे भाई ने कुछ ज़रा ज्यादा ही बोल दिया लगता है। पिता जी आप मुझे इजाज़त दें तो मैं देख कर आऊँ कि जैसा कि यह कह रहा है उस सुन्दर लड़की के वाकई दाँत हैं या नहीं।"

यह सुन कर पिता खुश हो गया और उसने उसको वहाँ जा कर उस लड़की को देखने की इजाज़त दे दी। अगली सुबह उसका

दूसरा लड़का तीन गाय और दो बैल ले कर उस लड़की के गॉव चल दिया।

जब वह उस लड़की के गॉव पहुँचा तो उसका भी बहुत ज़ोर शोर से स्वागत हुआ। लड़के ने लड़की के पिता को अपने आने की वजह बतायी तो उसने अपनी बेटी को बुलाया ओर कहा — "बेटी देखो यह तुम्हारा दुलहा है तुम इनके साथ इनके घर चली जाओ।"

लड़की कुछ नहीं बोली और उस नौजवान के साथ चल दी। पर ज़रा देखो तो, कुछ देर बाद ही उसने बड़ी मीठी आवाज में गाना शुरू कर दिया —

देखो देखो मेरे सुन्दर नौजवान मैं एक बहुत सुन्दर लड़की हूँ
पर मेरे एक भी दॉत नहीं है।

वह नौजवान भी यह सुन कर तुरन्त ही रुक गया और उससे उसका मुँह खोलने के लिये कहा क्योंकि वह यह देखना चाहता था कि वह जो गा कर कह रही थी वह सचमुच में सच था या नही।

लड़की से उसको ज़्यादा जिद करने की जरूरत नहीं पड़ी उसने तुरन्त ही अपना मुँह खोल दिया। लड़के ने देखा किउस लड़की के मुँह में तो वाकई कोई दॉत नहीं था केवल दो काली लाइनें थीं।

वह लड़का भी उसको उसके पिता के घर वापस ले गया, उसको वहॉ छोड़ कर वहॉ से अपने जानवर उठाये और अपने घर वापस चल दिया।

जब वह घर वापस आया तो उसके पिता ने उसकी पत्नी के बारे में पूछा तो वह बोला — "मेरा भाई ठीक कहता था पिता जी। मैंने भी देखा उसके तो दॉत ही नहीं थे। मैं भी एक बिन दॉत वाली लड़की से शादी नहीं करता सो मैंने उसको उसके पिता को लौटा दिया और अपने जानवर ले कर घर वापस आ गया।"

पिता उसकी यह बात सुन कर बहुत ही नाउम्मीद हुआ। वह यह सोच कर बहुत ही दुखी हो रहा था कि जो लड़की उसने देखी थी उसके तो दॉत ही नहीं थे। अब वह क्या करे।

पर उन दोनों लड़कों के बाद उसका तीसरा और सबसे छोटा बेटा आया और उसने भी उससे वहॉ जाने की इजाज़त मॉगी। पिता ने उसको भी इजाज़त दे दी तो उसके सबसे बड़े बेटे को बहुत बुरा लगा।

उसने अपने सबसे छोटे भाई से कहा — "तुमने हमें समझा क्या है? क्या हम लोग बिल्कुल ही बेवकूफ हैं? अगर उसके दॉत होते तो क्या हम उससे शादी नहीं कर लेते?"

सबसे छोटा भाई बोला — "नहीं भाई, यह बात नहीं है। असल में तुम लोगों ने उसके बारे में बता देने के बाद मेरे मन में भी यह इच्छा जगा दी है कि मैं भी यह देखूॅ कि बिना दॉत वाली लड़की लगती कैसी है। बस इसी लिये।"

सो अगले दिन उसने भी तीन गायें लीं दो बैल लिये और उस लड़की के गॉव की तरफ चल दिया। वहॉ पहुॅच कर लड़की के

पिता ने उसका भी अच्छी तरह से स्वागत किया और उससे कहा — "तुम तो शादी के लिये अभी बहुत छोटे लगते हो। पर तुम्हारे दोनों भाइयों को मेरी बेटी को वापस लाता देख कर मैं तुम्हारे जानवर स्वीकार करता हूँ। तुम मेरी बेटी को ले जा सकते हो।"

उसने अपनी बेटी को बुलाया और उसको इस नौजवान के साथ जाने के लिये कहा। लड़की ने न तो हाँ ही की न ही ना की और उस लड़के के साथ चल दी।

जब वे दोनों उसी जगह पहुँचे जहाँ उस लड़की ने पहली दो बार अपना गाना गाया था तो उसने वहाँ पहुँच कर फिर से वही गाना गाना शुरू कर दिया —

देखो देखो मेरे सुन्दर नौजवान मैं एक बहुत सुन्दर लड़की हूँ
पर मेरे एक भी दाँत नहीं है।

उस नौजवान ने उससे घबराते हुए कहा — "ज़रा अपना मुँह तो खोलो।"

लड़की ने अपना मुँह खोल दिया और लड़के ने उसके मुँह में दाँत की बजाय दो काली लाइनें देखीं। वह तो उनको देख कर ही दंग रह गया पर उसने ऐसा नाटक किया जैसे कि कुछ हुआ ही न हो और बोला — "क्या फर्क पड़ता है, चलो चलते हैं।"

चलते चलते वे एक नदी के किनारे आये तो उस लड़की ने एक नजर उस नौजवान पर डाली और फिर से वही गाना गाना शुरू कर दिया —

देखो देखो मेरे सुन्दर नौजवान मैं एक बहुत सुन्दर लड़की हूँ
पर मेरे एक भी दाँत नहीं है।

नौजवान ने उसके गाने की तरफ कोई ध्यान नहीं दिया और उस नदी को जहाँ से वह सबसे ज्यादा उथली थी वहाँ से पार करने लगा। जब वे नदी के बीच में पहुँचे तो उसने लड़की को कस कर पकड़ लिया और उसको फिर से मुँह अपना खोलने के लिये कहा।

लड़की ने फिर से अपना मुँह खोल दिया तो उसने नदी में से थोड़ी सी बालू उठायी और उसको उसके दाँत की जगह रगड़ रगड़ कर मल दिया।

आश्चर्य। उसके मुँह में जो दो काली लाइनें थीं वे तो गायब हो गयीं और उनकी जगह उसके बहुत सुन्दर दाँत दिखायी देखने लगे। यह देख कर वह नौजवान तो बहुत खुश हो गया और दोनों खुशी खुशी घर वापस आ गये।

जब उस लड़के के दोनों बड़े भाइयों ने अपने सबसे छोटे भाई को उस लड़की के साथ आते देखा तो वे भागे हुए अपने पिता के पास गये और बोले — "पिता जी, जल्दी आइये, देखिये ज़रा अपने

सबसे छोटे बेटे को। वह तो जानवर दे कर उस बिना दॉत वाली लड़की को अपने साथ घर ले आया है।"

इस बीच जब वह गॉव में आ रहा था तो उसने उस लड़की को अपनी एक बहिन को सौंप दिया ताकि वह उसको उसकी मॉ से मिला सके।

हालॉकि गॉव की सब लड़कियों ने इस अजीब लड़की के बारे में सुन रखा था फिर भी वे उसके चारों तरफ कुछ न कुछ इधर उधर की कहानियॉ कहने के लिये इकट्ठी हो गयीं ताकि वे उसे हॅसा सकें और वे यह देख सकें कि जो लोग उसके बारे में कह रहे थे वह सब सच था कि नहीं।

पहले तो वह लड़की कुछ देर शर्मायी रही पर फिर उसने भी उनकी बातों पर हॅसना शुरू कर दिया। लड़कियों ने देखा कि उसके दॉत तो बहुत सुन्दर थे।

उधर वह सबसे छोटा बेटा अपने पिता के पास गया और उसको बताया कि उसने उस लड़की को अपनी पत्नी बनाने का निश्चय कर लिया है और वह उससे जल्दी ही शादी भी कर लेगा।

यह सुन कर उसका पिता अपनी परेशानी नहीं छिपा सका और बोला — "ठीक है मेरे बेटे, पर तुमने उन जानवरों के बदले में एक बिना दॉत वाली लड़की ले ली है और तुम जानते हो कि हम लोग कोई बहुत अमीर आदमी नहीं हैं।"

यह सुन कर वह लड़का बहुत ज़ोर से हॅस दिया। फिर उसने अपने पिता को बताया कि उसने उसके सुन्दर दॉत वापस लाने के लिये क्या किया।

यह सुन कर उसका पिता खुद उस लड़की के पास आया और उससे कहा — "बेटी, तुम बुरा मत मानना और मेरी प्रार्थना सुन लेना जो भी मैं कहूॅ। ज़रा मुझे अपना मुॅह खोल कर तो दिखाओ तो मैं तुमको यह सुन्दर चॉदी का हार दूॅगा।"

लड़की यह सुन कर मुस्कुरा दी तो पिता ने अपनी ऑखों से देखा कि उसके तो दॉत भी थे और वे तो बहुत सुन्दर भी थे।

उसने अपने दूसरे बेटों को बुलाया और उनसे कहा — "देखो तो ओ बेवकूफों, इस लड़की के तो दॉत हैं। बस तुम उनको देख नहीं सके। तुम्हारा छोटा भाई ही उसको अपनी पत्नी बनाने का अधिकारी है। और याद रखना कि वह तुम लोगों से केवल उम्र में ही छोटा है।"

List of Stories of “Folktales of South Africa”

1. The Lost Message
2. Monkey's Fiddle
3. The Tiger, the Ram and the Jackal
4. The Jackal and the Wolf
5. The Lion, the Jackal and the Man
6. The World's Reward
7. Tink-Tinkje
8. The Lion and Jackal-2
9. Crocodile's Treason
10. The Dance for Water or Rabbit's Triumph
11. Jackal and Monkey
12. The Story of Hare
13, The White Man and Snake
14, Cloud-Eating
15. Jackal, Dove and Heron
16. Elephant and Tortoise
17. The Judgment of Baboon
18. Origin of Death
19. Cursed Curse
20. The Man Who Never Lied
21. A Tale of Two Brothers
22. The Man and the Snake
23. The Lion and the Beetle
24. Who Was the Thief
25. The Sun : a Bushman Legend
26. The Lion and Jackal-2
27. Puppy Love
28. The Toothless Pretty Maid

African Folk Tales Available in Hindi By Sushma Gupta

Desh Videsh Ki Lok Kathayen Series (Collections)

Africa Ki Lok Kathayen. 19 tales. 170 p
Dakshin Africa Ki Lok Kathayen. 28 tales. 172 p
Africa Se Kachhua Aayaa-1. 17 tales. 132 p.
Africa Se Kachhua Aayaa-2. 21 tales. 158 p.
Anansi Makada Africa Mein-2. 24 tales. 228 p
Anansi Makada Duniyan Mein. 33 tales. 210 p
Chalak Khargosh Africa Mein. (23 tales. 226 p.
Ethiopia Ki Lok Kathayen-1. 26 tales. 126p – Published
Ethiopia Ki Lok kathayen-2. 19 tales. 92p - Published
Ethiopia Ki Lok Kathayen-3. (47 tales/204p)
Mishra Ki Lok Kathayen. (13 tales/180p)
Nigeria Ki Lok Kathayen-1. (30 tales/184p)
Nigeria Ki Lok Kathayen-2. (15 tales/164p)
Dakshinee Nigeria Ki Lok Kathayen. (39 tales/256p)

Lok Kathaon Ki Classsic Pustaken Series (Books)

No 1. Zanzibar Ki Lok Kathayen. By George W Bateman. 1901.
10 tales. 170 p.
No 7. Nelson Mandela Ki Priya Africa Ki Lok Kathayen. 2002. 32 tales.
No 8. Chaudah Sau Kaudiyan…. By Fuja Abayomi. 1962. 31 tales.
No 12. Africa Ki Lok Kathayen. By Alessandro Ceni. 1998. 18 tales
No 13. Lavaris Ladki Aur Doosari Kahaniyan. By Buchi Offodile. 2001.
41 tales.
No 14. Gaaya Ki Poonchh Ka Chanwar…. By Harold Courlander and
George Herzog. 1947. 17 tales.
No 15. Dakshinee Nigeria Ki Lok Kathayen. 1910. 40 tales.
No 20. Pashchimee Nigeria Ki Lok Kathayen. By William J Barker and
Cecilia Sinclair. 1917. 35 tales.

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें — hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

1 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–1
2 नाइजीरिया की लोक कथाऐं–2
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1
4 रैवन की लोक कथाऐं–1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

1 रैवन की लोक कथाऐं–1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
2 इथियोपिया की लोक कथाऐं–1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
3 इथियोपिया की लोक कथाऐं–2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
6 रैवन की लोक कथाऐं — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
7 बंगाल की लोक कथाऐं — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group
https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks

Updated in 2022

लेखिका के बारे में

सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् **1943** में हुआ था। इन्होंने आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में ऐम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी ऐड किया। **1976** में ये नाइजीरिया चली गयीं। वहाँ इन्होंने यूनिवर्सिटी औफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में ऐम ऐल ऐस किया और एक थियोलोजीकल कौलिज में **10** वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया।

वहाँ से फिर ये इथियोपिया चली गयीं और वहाँ एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट औफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में **3** साल कार्य किया। तत्पश्चात इनको दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोठो के विश्वविद्यालय में इन्स्टीट्यूट औफ़ सदर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में **1** साल कार्य करने का अवसर मिला। वहाँ से **1993** में ये यू ऐस ए आ गयीं जहाँ इन्होंने फिर से मास्टर औफ़ लाइब्रेरी ऐंड इनफौर्मेशन साइन्स किया। फिर **4** साल ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में इन्होंने सेवा निवृत्ति ले ली और अपनी एक वेब साइट बनायी – www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला – कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाऐं हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी – हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगीं।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाऐं सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक **2500** से अधिक लोक कथाऐं हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको "देश विदेश की लोक कथाऐं" और "लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें" क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा
2022